बी0टी0सी0 (द्वितीय सेमेस्टर) कक्षा–शिक्षण:विषयवस्तु
(सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए)
हिन्दी
पाठ–1
कहानी, लोककथा, रोचक प्रसंगों को ध्यानपूर्वक सुनना व याद करना

कहानी गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। उपदेश और मनोरंजन इसके मुख्य प्रयोजन होते हैं। प्राचीन काल से ही दादा–दादी की कहानियाँ बच्चे सुनते चले आये हैं। इनको सुनने से उनका मनोरंजन तो होता ही है, शिक्षा भी मिलती है। प्रसिद्ध कथाकार मुंशी प्रेमचन्द ने कहानी को परिभाषित करते हुए लिखा है–''कहानी (गल्प) रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा–विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। वह एक ऐसा रमणीय उद्यान नहीं जिसमें भाँति–भाँति के फूल, बेल–बूटे सजे हुए हैं, बल्कि एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।''

वस्तुतः कहा जा सकता है कहानी हिन्दी साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है जिसमें किसी पात्र, घटना, भाव, संवेदना आदि का मार्मिक वर्णन किया जाता है। इसका शीर्षक कौतुहलवद्धर्क और आकर्षक होता है। कहानी लघु होती है और उसमें भाव व्यंजना की अपूर्व क्षमता होती है। इसका आदि और अन्त कलात्मक होता है। इसमें जीवन के विभिन्न भावों को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, जो काम लम्बे–चौड़े व्याख्यानों से नहीं हो पाता, वह छोटी–छोटी कहानियों के माध्यम से सरलता से हो जाता है। कहानी शिक्षण से साहित्य की किसी भी विधा को विशेष मनोरंजक बनाया जा सकता है।

उद्देश्य–

(1) कहानी सुनने तथा याद करने के प्रति रूचि जागृत करना।
(2) नैतिक आदर्शों एवं जीवनमूल्यों का विकास करना।
(3) कल्पना एवं तर्कशक्ति का विकास करना।
(4) लोक कथाओं के द्वारा सामाजिक शिष्टाचार के आदर्श उपस्थित करना।
(5) रोचक प्रसंगों द्वारा बच्चों में साहस, शौर्य, त्याग, बलिदान, करूणा, दया तथा सहयोग की भावना उत्पन्न करना।
(6) समस्या समाधान का कौशल विकसित करना।

इस प्रकार कहानी के मुख्य तीन रूप प्रस्तुत होते हैं–

(क) ऐतिहासिक **(ख)** सामाजिक **(ग)** धार्मिक

कहानी तत्त्वों के आधार पर इसके निम्नलिखित भेद माने गये हैं–

(1) घटना प्रधान कहानी **(2)** चरित्र प्रधान कहानी **(3)** समस्या प्रधान कहानी **(4)** भाव प्रधान कहानी।

हमारे यहाँ 'मंजरी' कक्षा–06 में छोटा जादूगर, क्यों–क्यों लड़की, हार की जीत, ईदगाह, साप्ताहिक धमाका, छिपा रहस्य, कक्षा–07 में राजधर्म, शापमुक्ति, भविष्य का भय तथा कक्षा–08 में काकी, अपराजिता, दुःख का अधिकार आदि कहानियाँ संकलित हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

कहानी बच्चों के भाषा विकास और दक्षता में कल्पनाशक्ति, तर्कशक्ति, चिन्तनशक्ति और अभिव्यक्ति की क्षमता पैदा करने के लिए सशक्त माध्यम है, जिससे बच्चे और शिक्षक में दूरी कम हो जाती है। बच्चे शिक्षकों को अपना दोस्त मानने लगते हैं, अपने मन की बात भी शिक्षक को बता देते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि कहानी बच्चों को सोचने, समझने, जानने, कल्पना करने, जोड़ने–घटाने, रचने का भरपूर अवसर देती है, जो भाषा विकास और उसके प्रयोग सम्बन्धी कौशल में दुगनी गुणवत्ता बढ़ाते हैं। गुणवत्ता सभी बच्चों में सरल ढंग से विकसित हो इसके लिए निम्नलिखित विधि को अपनाया जा सकता है–

(1) वार्तालाप विधि **(2)** चित्र विधि **(3)** प्रश्नोत्तर विधि **(4)** कहानी कथन विधि।

(1) वार्तालाप विधि–सर्वप्रथम बच्चों को पशु–पक्षियों एवं अन्य रोचक पात्रों वाली छोटी, सरल और मनोरंजक कहानियाँ, लोककथायें तथा किसी रोचक प्रसंग को हाव–भाव व गतिविधि के साथ सुनाएँ। पुनः वही कहानी या उससे मिलती जुलती कहानी अपने शब्दों में सुनाने को कहें। प्रारम्भ में बच्चे झिझकेंगे, लेकिन धीरे–धीरे सुनाने लगेंगे। आवश्यकतानुसार उन्हें उत्साहित करते रहें, बच्चे ध्यान से सुन रहे हैं, यह जानने के लिए दोहरे सम्प्रेषण की किसी गतिविधि का प्रयोग करें। जैसे–कहानी में आए शब्द विशेष पर सिर हिलाना, हाथ उठाना, छींकना, उठना, बैठना या कोई शब्द कहना आदि। इस प्रकार की प्रतिक्रिया से कहानी, लोककथा, रोचक प्रसंग, कथन। शिक्षण में जीवन्तता बनी रहती है। कहानी का बच्चों से अभिनय करायें, इसके लिए मुखौटों का प्रयोग कराएँ जिससे कहानी और रूचिकर हो जाय।

मूल्यांकन–

- प्रशिक्षु बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर हाव–भाव के साथ पूरी कहानी, लोककथा, किसी रोचक प्रसंग को सुनायें और उसके बाद बच्चों से कहानी के सारांश तथा रोचक प्रसंग द्वारा क्या शिक्षा मिलती है? पूछें।
- बच्चों से कहानी का अन्य शीर्षक भी पूछें।
- अपने क्षेत्र में प्रचलित किसी लोककथा को बच्चों से उनके शब्दों में सुनें।

(2) चित्र विधि–आरम्भिक अवस्था में चित्रात्मक कहानी द्वारा बच्चों को शिक्षण देने की सर्वाधिक उपयुक्त विधि है, सर्वप्रथम कक्षा में कुछ पशु–पक्षी से सम्बन्धित चित्र चार्ट पर बनाकर टाँग दें और बच्चों से उससे सम्बन्धित कुछ वाक्य इस प्रकार बनाने को कहें जिससे एक कहानी बन जाय। इसके लिए बच्चों के सामने पहले कुछ उदाहरण प्रस्तुत करें। जैसे–

- कहानी की घटनाओं पर आधारित वाक्यों को क्रम में लगवाना।
- पूरी कहानी या कहानी के अंश को स्थानीय भाषा में परिवर्तित करवाना।
- कहानी का नाट्य रूपान्तर करवाकर उसका अभिनय करवाना।

गतिविधि–इसके अतिरिक्त शिक्षक चित्र वाले चार्ट को दीवार/श्यामपट्ट पर लगाकर बच्चों से निम्नलिखित बातों पर चर्चा भी कर सकते हैं–

- चार्ट पर किन–किन जानवरों के चित्र हैं?
- शेर कहाँ रहता है?

- जंगल में रहने वाले कुछ जानवरों के नाम बताओ।
- चूहा कहाँ रहता है?
- घर के पालतू जानवरों के नाम बताओ।

शिक्षक हाव–भाव के साथ कहानी सुनायें एवं बच्चों से भी हाव–भाव के साथ सुनें।

मूल्यांकन–बच्चों को दो पंक्तियों में बैठा दें। कहानी पर कोई प्रश्न प्रथम पंक्ति का एक बच्चा पूछे। उसका उत्तर दूसरी पंक्ति का कोई बच्चा दे। सही उत्तर देने वाले बच्चे को प्रोत्साहित करें। गलत उत्तर देने पर सही उत्तर हेतु प्रेरित करें। बच्चों से इस प्रकार के प्रश्न पूछकर मूल्यांकन करें जो उनके निर्णय लेने की क्षमता को प्रकट करता हो, जैसे–

- इस कहानी से आपने क्या सीखा?
- अगर आपके सामने शेर आ जाये तो आप क्या करेंगे?
- चूहे की जगह आप होते तो क्या करते?
- बच्चों को दो समूहों में बाँटकर कहानी सुनाने की प्रतियोगिता करायें।

गतिविधि–चार्ट पेपर पर बने हुए शेर–खरगोश की कहानी को अलग–अलग भावों को दिखाकर बच्चों से बातचीत करें।

- यह दृश्य कहा का है?
- चित्र में कौन–कौन से जानवर हैं?
- शेर क्या कर रहा है?
- खरगोश क्या कर रहा है?
- शेर नाराज क्यों है?
- शेर कहाँ कूद रहा है?

क्या तुम्हें इस चित्र से कोई कहानी याद आ रही है? अपने शब्दों में कहानी सुनाओ।

शिक्षक हाव–भाव के साथ शेर–खरगोश की कहानी बच्चों को सुनाएँ। बच्चों से अलग–अलग जानवरों के बोलने की आवाज निकलवाएँ।

मूल्यांकन–

- विभिन्न घटना चित्रों पर बच्चे अपनी अभिव्यक्ति किस प्रकार कर रहे हैं, उसका अवलोकन/निरीक्षण करें।
- बोलने में संकोच या झिझक का स्तर किस प्रकार का है? अवलोकन करें।
- बच्चों से उनकी अपनी किसी घटना या सुनी हुई कहानी को सुनें।

(3) प्रश्नोत्तर विधि–इस विधि द्वारा प्रशिक्षु बच्चों को कहानी शिक्षण, लोककथा शिक्षण तथा रोचक प्रसंगों को अत्यन्त सरलतम ढंग से बता सकते हैं। सर्वप्रथम बच्चों को अत्यन्त सरल भाषा में पूरे हाव–भाव के साथ कहानी सुनाएँ तथा उनसे भी कहानी सुनें। कहानी के घटनाओं को आधार बनाकर बच्चों से प्रश्नोत्तर करें। जैसे–प्यासा कौआ कहानी पर बच्च्वों के साथ बातचीत/प्रश्नोत्तर करने के लिए निम्न बिन्दु हो सकते हैं–प्रशिक्षु प्रश्न करते हुए बच्चों से पूछे–

- प्यासे कौए ने क्या उपाय सोचा?
- तुम घड़े से पानी निकालने के लिए क्या करते हो?
- हम पानी कहाँ–कहाँ से प्राप्त करते हैं?

इसी प्रकार प्रश्नोत्तर का क्रम बढ़ाएँ। कौआ, घड़ा, कंकड़ आदि का चित्र बच्चों द्वारा बनवाएँ, उन्हें प्रोत्साहित करें तथा आवश्यकतानुसार उनकी मदद करें।

मूल्यांकन–'प्यासा कौआ' कहानी के अलग–अलग कथा अंशों का चित्र निम्न प्रकार से तैयार करें–

उपर्युक्त चित्रकार्डों का क्रम बदलकर रखें। बच्चों को दो समूहों में बाँट लें। एक समूह चित्र कार्डों को कथाक्रम के अनुसार लगाए तथा दूसरा समूह उसके आधार पर अपने शब्दों में कहानी सुनाए। शेर, चूहा, जाल, जंगल आदि के चित्र बने चार्ट तैयार करें, बच्चों को दो या तीन समूहों में बाँट दें तथा प्रत्येक समूह को चार्ट पर अंकित चित्रों को देखकर कहानी सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें। अंत में स्वयं उन चित्रों पर आधारित कहानी को हाव–भाव के साथ बच्चों को सुनाएँ।

इसी प्रकार प्रशिक्षु बच्चों को लोककथा, लोक संस्कृति के बारे में भी जानकारी दें। प्रशिक्षु स्वयं एक लोककथा बच्चों के सामने पूरे हाव–भाव के साथ सुनाएँ तत्पश्चात् बच्चों से भी सुनें। उन्हें यह भी बताएँ कि अलग–अलग देशों में विभिन्न प्रकार की लोककथाएँ प्रचलित हैं।

(4) कहानी कथन विधि–इस विधि के अन्तर्गत सर्वप्रथम प्रशिक्षु बच्चों को एक छोटी व रोचक कहानी हाव–भाव के साथ सुनाएँ। पुनः यही कहानी या उससे मिलती–जुलती कहानी अपने शब्दों में सुनाने को कहें। इसी प्रकार मुर्गा, लोमड़ी की कहानी सुनाने के बाद बच्चों से विभिन्न प्रश्नों द्वारा कहानी में रोचकता लाया जा सकता है।

(अ) जैसे–प्रशिक्षु बच्चों से प्रश्न करें–

- तुम्हें कौन सा जानवर अच्छा लगता है और क्यों?
- लोमड़ी ने मुर्गे से क्या कहा?
- लोमड़ी भागकर कहाँ गई होगी?
- लोमड़ी तथा मुर्गे में कौन चालाक और कौन समझदार है?

(ब) किसने, किससे कहा–नाम बताएँ–	**किसने कहा**	**किससे कहा**
(क) सभी पशु–पक्षियों में समझौता हो गया है।	.....	.....
(ख) मैं खूँखार जानवरों के डर से यहा बैठा हूँ।	.....	.....
(ग) यह तो वास्तव में दुनिया का सबसे अच्छा समाचार है।	.....	.....
(घ) तुम्हें तो जमीन पर चलते फिरते रहना चाहिए।	.....	.....
(च) अच्छा! क्षमा करना मित्र मैं चली।	.....	.....
(छ) लगता है, कुत्तों ने अभी यह समाचार नहीं सुना।	.....	.....

(स) बच्चों से मुर्गा–लोमड़ी का अभिनय कराएँ।

निम्नलिखित वाक्यों को हाव–भाव के साथ बच्चों से सुनें–

अरे! तुम घबरा क्यों रही हो? तुम्हें क्या डर है? पशु–पक्षियों में तो समझौता हो गया है न, 'मुर्गा बोला। सच है, लोमड़ी बोली, 'परन्तु लगता है, कुत्तों ने अभी यह समाचार नहीं सुना।'

इसी प्रकार शिक्षण के अन्य भी तरीके हैं जैसे–

(1) अधूरी कहानी–इसके अन्तर्गत एक कहानी को पूरा न सुनाकर एक ऐसी जगह छोड़ दिया जाता है, जहाँ पर बच्चों को सोचने के लिए पर्याप्त बल और विकल्प मिल सके। बच्चा अपने चिन्तन के आधार पर इस कहानी को पूरा करता है, जैसे–इसके बाद क्या होगा? यदि ऐसा नहीं होता तो कहानी का क्या अन्त होता?

(2) दृश्य दिखाकर–कोई ऐसा प्राकृतिक या निर्मित दृश्य दिखाकर जिसमें कहानी की गुंजाइश हो, उस पर बच्चों से कोई कहानी सुनी जाय।

(3) चित्र विशेष या मुद्रा भाव वाले चित्र–

- पेड़ पर उछलता एक बंदर और एक चिड़िया।
- बंदर का नीचे गिरना और चोट लगना।
- चिड़िया का शोर मचाना।
- कई बन्दरों और अन्य जानवरों का आकर बंदर की सेवा करना।

(4) कार्टून–कुछ कार्टून दिखाकर जिसमें भावों की प्रधानता हो, में कार्टून पत्र–पत्रिकाओं व अखबार आदि से भी प्राप्त किये जा सकते हैं। कार्टून में बच्चों की विशेष रूचि होती है। इस पर काम करना उन्हें अच्छा लगेगा।

(5) अभिनय–दो–तीन बच्चों से किसी एकांकी पर अभिनय कराकर सभी बच्चों से या छोटे समूह में, उस पर कहानी सुनाने को कहें। तुरंत देखें अभिनय से बच्चों को सुनाने में बहुत सहायता मिलेगी।

(6) कुछ जानवरों के नाम/पात्रों के नाम/परिवेशीय शब्द देकर–

बन्दर, कुत्ता, हाथी, शेर, लोमड़ी, कौआ, तोता या कुछ परिचित पात्रों के नाम अथवा कुछ शब्दों के माध्यम से कहानी सुनें।

(7) विशेष घटना–घर, गाँव या आसपास की घटना विशेष पर व रोचक प्रसंग पर बच्चों से चर्चा करें।

(8) टी0वी0सीरियल/नाटक–बच्चे टी0वी0सीरियल व नाटक देखते रहते हैं। दृश्य, श्रव्य होने के कारण वे पूरी कहानी पर आपस में चर्चा करते हैं। किसी सीरियल या नाटक को अपने शब्दों में सुनाने को कहें।

(9) कल्पनाशक्ति–बच्चों में तीव्र कल्पनाशक्ति होती है। प्रशिक्षु का कार्य उसे उभारने का मौका देना है। वातावरण बनाते हुए कल्पनाशक्ति के आधार पर कोई कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें।

प्रशिक्षुओं हेतु आवश्यक निर्देश–

- कहानी शिक्षण से पूर्व वातावरण सृजन।
- पूरी कहानी को संक्षेप में हावभाव के साथ प्रस्तुतीकरण।
- कुछ बच्चों से पूरी कहानी अथवा क्रमिक कड़ियों को जोड़कर कहलवाना।
- भाव–विचार, संदेश ग्रहण करते हुए बच्चों द्वारा मौन पठन।
- बच्चों से प्रश्नों/चर्चा द्वारा कहानी की प्रमुख घटनाओं, पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं, जीवनमूल्यों, सन्देशों का स्पष्टीकरण।
- कल्पनाशक्ति के विकास हेतु यदि उस स्थान पर तुम होते तो क्या करते जैसे प्रश्न।
- कहानी को सारांश में कहना/लिखना।

(9) लोक कथा–लोककथाएँ अक्सर किसी साधारण या राज घराने के साहसिक व्यक्ति के चरित्र को लेकर चलती हैं। उनमें वर्णित चरित्र को उजागर करने के लिए काल्पनिक चरित्रों और शक्तियों का सहारा लिया जाता है। ये चरित्र या शक्तियाँ बहुधा देव, परी, देवता, देवी, राक्षस इत्यादि के रूप में होते हैं। उनमें कपोल–कल्पित कथा का अंश नहीं है। उनका समय और उनमें वर्णित स्थान इतिहास के पृष्ठों में दृष्टिगोचर होते हैं। यदि हम चाहें तो उनकी सत्यता को सिद्ध कर सकते हैं, लेकिन इतिहास का अंश होते हुए भी हम उनमें मानवोचित प्रवृत्तियों को परिलक्षित पाते हैं। आभूषणों के प्रति नारी का मोह, देशप्रेम, संगीत प्रेम, नम्रता की महानता, मनुष्य का बुद्धि कौशल ये सब इन कथाओं में मिलते हैं।

वस्तुतः लोक साहित्य एक ऐसा माध्यम है जिससे देश की आत्मा, राष्ट्रीय संस्कृति और भारत की परम्पराओं का गौरव उद्घाटित होता है। एक तरह से यह साहित्य अमर है। यह जो बिना किसी छापेखाने की सहायता के ही युग–युग से अपना स्वरूप स्थिर किए हुए है। लोकमानस ने इन कथाओं को संजोया, संवारा है, उन्हें रूप दिया है। इसी कारण वे अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुई हैं।

इसी क्रम में 'मंजरी' कक्षा–07 में ''कौन बनेगा निंगथऊ'' (राजा) नामक लोककथा दी गयी है। यह मणिपुर की लोककथा है। इसमें पर्यावरण संरक्षण और जनता से प्रेम की भावना प्रकट की गयी है।

कहानी शिक्षण की भाँति लोककथाओं का भी शिक्षण किया जाता है। प्रशिक्षु को चाहिए कि वे बच्चों से कुछ विचार कल्पना से जुड़े प्रश्न करें। जैसे–

1. एक खोगनंग के पेड़ को चोट पहुँचाकर तीनों राजकुमार तुंगी निंगथऊ बनने से रह गये। आप भी यदि किसी पेड़ को नुकसान पहुँचायेंगे तो क्या हो सकता है?
2. 'खोगनंग में भी जान है' सानातोम्बि ने ऐसा क्यों कहा?
3. पेड़ों से पर्यावरण शुद्ध होता है। पर्यावरण प्रदूषित होने से जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। हम सभी का कर्तव्य है कि पर्यावरण को शुद्ध रखने में अपना योगदान दें। आप पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या उपाय करना चाहेंगे।
4. प्रशिक्षु बच्चों को आगे और भी बताएँ कि आप भी सानातोम्बि की तरह पक्षियों को प्यार करें, उन्हें दाना चुगायें, धीरे–धीरे वे भी आपके पास आने लगेंगे। फिर देखें कितना अच्छा लगता है।
5. यह मणिपुर में कही जाने वाली एक लोककथा है। इस तरह की लोक कथाएँ आपके यहाँ भी सुनी–कही जाती होंगी। आप भी इस प्रकार की कोई एक लोककथा कक्षा में सुनाइए।

पाठ–2

परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं और स्व अनुभवों पर चर्चा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर वह अपने विभिन्न गतिविधियों एवं क्रियाकलापों से जहाँ अपना विकास करता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक विकास का भी वह माध्यम बनता है। प्रत्येक आयुवर्ग के मनुष्यों का अपना अलग समाज होता है। इनमें यदि बच्चों की बात करें तो इनकी एक निराली ही दुनिया होती है। जहाँ बड़ों के तर्क और समझदारी से कोई सरोकार नहीं होता। अपनी इस निराली दुनिया से निकलकर जब वे शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यालयीय परिवेश में पहुँचते हैं तो वहाँ अपने जैसे अनेक बच्चों के अतिरिक्त शिक्षक एवं कर्मचारियों के रूप में बड़ों को भी पाते हैं (जो उन्हें विविध कार्यों के लिए दिशा–निर्देश देते हैं)। यह दुनिया, उनकी दुनिया से कुछ अलग होती है, जिसके कारण उनमें संकोच, झिझक आदि भाव प्रायः देखने को मिलता है। ये भाव बच्चों के शिक्षा ग्रहण करने के मार्ग में बाधक होते हैं। ऐसे में शिक्षक के समक्ष शिक्षा देने के साथ ही उनमें निहित इन भावों को दूर करने की भी चुनौती होती है। इस चुनौती में सबसे पहला पड़ाव बच्चों से जुड़ाव का होता है। बच्चों से जुड़ाव के बाद ही हम उन्हें कुछ सिखा सकते हैं या समझा सकते हैं। इसके लिए वार्तालाप एक सशक्त माध्यम है। शिक्षक बच्चों से परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं तथा उनके अनुभवों पर बातचीत करते हुए उनकी नजदीकी प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। जहाँ तक भाषा शिक्षण की बात है तो इसे अधिक सरल, बोधगम्य एवं व्यावहारिक बनाने में मौखिक कार्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बातचीत करना बच्चों को स्वभावतः अच्छा लगता है। बच्चों की यह स्वाभाविक रूचि भाषा सीखने का प्रभावी माध्यम हो सकती है। हिन्दी पठन एवं लेखन के पूर्व बच्चों से उनके क्रियाकलाप, परिवेश व परिवार आदि पर जितनी अधिक बातचीत की जाएगी, उनमें सुनने, बोलने, समझने और अभिव्यक्ति की दक्षता का विकास उतना ही अधिक एवं प्रभावी होगा। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक बच्चों से अधिकाधिक बातचीत करें, जिससे बच्चे शिक्षक के सामने स्वयं को सहज महसूस करें और एक दूसरे से घुलमिल कर अपनी बात कह सकें। इसके लिए कुछ गतिविधियाँ देखी जा सकती है–

उद्देश्य–

- चर्चा/मौखिक बातचीत के द्वारा बच्चों की झिझक दूर करना।
- बच्चों में खुलकर अपनी बात क्रमबद्ध तरीके से रखने की दक्षता विकसित करना।
- बच्चो में तर्क, चिन्तन, कल्पनाशक्ति का विकास करना।

प्रस्तुतीकरण–

गतिविधि 01–

कद्दू जी की चली बारात
हुई बताशों की बरसात।
बैंगन की गाड़ी के ऊपर
बैठे कद्दू राजा
शजलम और प्याज ने मिलकर
खूब बजाया बाजा।

मेंथी, पालक, भिंडी, तोरई
टिंडा, मूली, गाजर
बने बाराती नाच रहे थे
आलू मटर टमाटर।
कद्दू जी हँसते–मुस्काते
लौकी दुल्हन लाये,
कटहल और करेले जी ने
चाट पकौड़े खाये।
प्रातः पता चली यह बात
सपना देखा था यह रात।

सभी बच्चों को गोल घेरे में खड़ा करके शिक्षक बीच में खड़े होकर 'कद्दू जी की बारात' यह गतिविधि हाव–भाव के साथ कराएँ। इसे कराने के बाद बच्चों से बातचीत को आगे बढ़ाते हुए चर्चा करें–

- कद्दू जी की बारात में किसने क्या किया?
- क्या तुमने कभी कोई बारात जाते हुए देखी है?
- जब बारात जाती है तब क्या–क्या होता है?
- बरात में कौन–कौन से बाजे बजते हैं?
- क्या तुमने पिछली रात कोई सपना देखा? क्या देखा?
- क्या तुमने अपने घर में कोई शादी देखी है?
- शादी में कौन–कौन सी रस्में होती हैं?
- शादी में गाने वाले किसी गीत को सुना सकते हो?
- यदि कोई बच्चा गीत सुनाता है तो उसे सुनें। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए

उनसे विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले गीत सुनाने को कहें तथा स्वयं भी कुछ गीत गाकर सुनाएँ। ये गीत, बच्चे के जन्म, मुण्डन आदि कई अवसरों पर गाए जाने वाले हो सकते हैं।

गतिविधि 02–त्योहारों पर बातचीत–

शिक्षक बच्चों से निम्नांकित प्रश्नों के माध्यम से बातचीत करें–

- आपके यहाँ कौन–कौन से त्योहार मनाए जाते हैं?
- आपको कौन सा त्योहार अच्छा लगता है और क्यों?
- आपके यहाँ त्योहारों पर खाने की क्या–क्या चीजें बनती हैं?
- क्या आप आपस में एक दूसरे से मिलने भी जाते हैं, अगर हाँ तो क्यों?
- आपस में मिलकर कोई पर्व विशेष का गीत गाना। उससे सम्बन्धित चर्चा द्वारा बात को आगे बढ़ाएँ। बच्चों को गीत गाने के लिए प्रेरित करें, चाहें तो काई वाद्य यंत्र या मेज का प्रयोग भी कर सकते हैं।

गतिविधि 03 (बच्चों के लिए)–प्रशिक्षु श्यामपट्ट पर निम्नलिखित ढंग से लिखकर कार्य कराएँ–

- नीचे दिये गये शब्दों के सही जगह बताओ–
  बारात, बताशे, कद्दू, प्याज, शलजम, बैंगन, लौकी।
  एक था.....। उसकी.....चली। उसकी बारात में.....की बरसात हुई।.....
  .....की गाड़ी के ऊपर.....राजा बैठे।.....और.....ने मिलकर बाजा बजाया।
  कद्दू जी हँसते मुस्कातें.....दुल्हन लाए।
- तुम्हें कौन–कौन सी सब्जियाँ खाने में अच्छी लगती हैं? इसपर चर्चा करते हुए उनमें मौजूद पौष्टिक तत्त्वों के बारे में जानकारी दें।
- नीचे टोकरी में रखी सब्जियों को देखो/कौन कहाँ उगती हैं? चित्र.....
- नीचे दिये गये खानों में सजाओ।
  (टोकरी में रखी गोभी, बैंगन, लौकी, मूली, टमाटर, भिंडी, गाजर, आलू, प्याज का चित्र)

जमीन के ऊपर	जमीन के अन्दर

अन्य गतिविधियाँ–

- शिक्षक बच्चों की सहायता से सब्जियों के मुखौटे तैयार कराएँ तथा उन मुखौटों के द्वारा संवाद के माध्यम से तरह–तरह के अभिनय करा सकते हैं।
- इन सब्जियों के चित्र भी बच्चों से बनवाएँ तथा उनमें रंगों को भरवाएँ।
  शिक्षक निम्नांकित विषयों पर भी बच्चों से बातचीत या चर्चा कर सकते हैं–
- बच्चों के परिवार, पास–पड़ोस, रिश्ते–नातेदारों पर।

- बच्चों की पसंद, नापसंद या पहनने ओढ़ने की वस्तुओं पर, खाने–पीने की चीजों पर।
- परिवेशीय पशु–पक्षियों, जीव–जन्तुओं, फल–फूल सब्जियों पर।
- बच्चों के पसन्दीदा खेल–खिलौनों पर–क्या और क्यों–चर्चा करें।
- साफ–सफाई एवं स्वच्छता पर।
- गाँव के तालाब, कुँओं, नदी, नहर एवं धार्मिक स्थलों पर।
- विद्यालय, अस्पताल, डाकघर पर।
- संस्कार, शिष्टाचार एवं परम्परा पर।
- रोजगार, यातायात के साधनों पर।
- कुम्हार, सोनार, लोहार एवं बढ़ई के औजारों पर।
- अन्न, सब्जियों, फलों के माध्यम से तरह–तरह के रंगों पर भी चर्चा कर सकते हैं।
- निजी जीवन–यापन में उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों पर
- परिवार में बीमार व्यक्तियों की तीमारदारी पर आने वाली कठिनाइयों पर।

मूल्यांकन–बच्चों से चर्चा–परिचर्चा करते हुए बीच–बीच में विषय से सम्बन्धित प्रश्न भी करते चलें, जिससे आप यह पता कर सकें कि बच्चे चर्चा/परिचर्चा के विषयों को अच्छी तरह समझ रहे हैं या नहीं। इस तरह आप उनके विषय की जानकारी, पूर्वज्ञान, उनकी समझ, भावबोध का पता कर सकते हैं। अगर समझ में कहीं कमी है तो आप प्रश्नों, गतिविधियों के माध्यम से उसमें सुधार कर सकते हैं। बार–बार ऐसा करने से बच्चों की समझ कौशल विकसित होगी तथा वे अपनी बात को तर्क के साथ रख सकते हैं।

ध्यान देने योग्य बातें–

- चर्चा की विषयवस्तु अनुभव से जुड़ीं हो तथा परिवेशीय हो।
- केवल सवाल ही सवाल न हों बल्कि इस विषय पर चर्चा भी हो।
- 'हा' या 'ना' वाले प्रश्न न हों बल्कि बच्चों को बोलने के लिए उपयुक्त वातावरण भी हो।
- बच्चों से आत्मीयता का व्यवहार करें, जिससे उनकी अभिव्यक्ति सहज भाव से हो।
- ऐसी बातें करें, जिसमें बच्चा स्वयं पूछने को प्रेरित हो। इसके लिए उन्हें प्रेरित करें।
- बच्चों की पूरी बात धैर्यपूर्वक सुनें।

अभ्यास कार्य–शिक्षक सुनने, बोलने की दक्षता के विकास के लिए विभिन्न प्रकार के मौखिक क्रियाकलापों का अभ्यास कराएँ–

- परिवेशीय विषयों पर बातचीत करें/कराएँ।
- चित्रधारित कविता/कहानी पर बातचीत, क्रियाकलाप करें/कराएँ।
- शिष्टाचार एवं दैनिक व्यवहार से सम्बन्धित क्रियाकलाप।
- बालगीत/कविता/पहेली/लोकगीत/सुनें/सुनाएँ।
- क्रम बदलकर अभ्यासों/गतिविधियों को कराएँ।

- उत्सवों/पर्वों, त्योहारों पर सामूहिक चर्चा करें। बच्चों को बोलने का पर्याप्त अवसर दें।
- किसी कविता या कहानी को सुनाकर उसमें निहित भाव के विषय में बच्चों से जानकारियाँ प्राप्त करें।
- किसी दृश्य/घटना/स्मरणीय यात्रा के विषय में बच्चों से सुनें एवं सुनाएँ। बच्चों को अभिव्यक्ति का अवसर दें।
- किसी सामाजिक घटना जैसे–नाव दुर्घटना, कार दुर्घटना एवं स्व अनुभवों पर भी बच्चों से चर्चा करें/कराएँ। बच्चों को भी अवसर दें।

स्वानुभव–

- बच्चों से विद्यालय आने और जाने के समय वह क्या महसूस करते हैं, इसपर चर्चा करें/कराएँ।
- खेल खेलते समय बच्चों में कैसी भावना बनती है? चर्चा करें।
- राष्ट्रीय पर्व पर भाग लेना या सहभाग करने पर वे क्या महसूस करते हैं? चर्चा करें।
- परिवार में माता या पिता के बीमार पड़ने पर बच्चों के मन में कैसे–कैसे विचार उत्पन्न होते हैं? इस पर चर्चा करें।

पाठ–3

गद्य व पद्य के अंशों को शुद्ध उच्चारण, लय एवं उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ना, बोलना

उद्देश्य–

उच्चरित ध्वनियों के मौखिक रूप को अक्षर तथा लिखित रूप को वर्ण कहा जाता है। भाषा के व्यवहार में शुद्ध उच्चारण उसका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष है, क्योंकि हिन्दी की प्रकृति है कि उच्चारण के अनुसार ही उसका लेखन किया जाता है। हिन्दी में प्रायः उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियाँ होती हैं, जो हमारे लेखन को प्रभावित करती हैं। हिन्दी ध्वन्यात्मक भाषा है, इस कारण अशुद्ध उच्चारण का प्रभाव सीधे वर्तनी पर भी पड़ता है। अतः शुद्ध लेखन की दृष्टि से भी उच्चारण शिक्षा का स्थान महत्त्वपूर्ण है।

- गद्य व पद्य के अंशों को हाव–भाव, लय एवं गति के साथ शुद्ध उच्चारण की दक्षता का विकास करना।
- शुद्ध उच्चारण एवं गति का निरन्तर विकास करते हुए बच्चों को पढ़ने, बोलने का अभ्यास करना।
- शुद्ध, सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली शैली में भावों, विचारों एवं अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करना।
- बच्चों को भावानुकूल भाषा प्रयोग, स्वर–निर्माण एवं अंग संचालन की कला का अभ्यास कराना।
- उच्चारण अभ्यास द्वारा आत्मविश्वास जगाना।

किसी भी भाषा में उच्चारण की सबसे अधिक महत्ता होती है। किसी भाषा के शब्दों का सही उच्चारण भाषा के परिनिष्ठित रूप को प्रकट करता है। डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने भाषा को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की यह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज–विशेष के लोग आपस में विचार–विनिमय करते हैं।'' उक्त परिभाषा से भी स्पष्ट है कि जब हम विचारों को ध्वन्यात्मक रूप से होंठों पर लाते हैं तभी वह भावों के आदान–प्रदान का माध्यम बन, भाषा बनती है। जिसमें विचारों एवं भावों के आदान–प्रदान का माध्यम उच्चारण होता है। इस प्रकार उच्चारण में अभिव्यक्ति की सशक्त क्षमता होती है। इसके द्वारा किसी भी बात को उतार–चढ़ाव, लय–सुर आदि द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि कथन का भाव स्पष्ट होने में कोई परेशानी नहीं होती। कभी –कभी ऐसा भी होता है कि एक ही वाक्य केवल उच्चारण के ढंग में परिवर्तन होने के कारण अलग–अलग अर्थ को व्यक्त करते हैं। ''कल तुम्हें बनारस जाना है'' तथा ''कल तुम्हें बनारस जाना है?'' पहला वाक्य आदेश सूचक है और दूसरा वाक्य प्रश्नवाचक है।

वास्तव में मनुष्य के मुख से निकले हुए सार्थक वर्णों के संयोग से बने शब्दों का उच्चारण जो दूसरे मनुष्यों को सुनाई दे, उसे उच्चारण माना जाता है। शुद्ध उच्चारण का तात्पर्य मानक उच्चारण से है। उच्चारण में भिन्नता क्षेत्रीय भिन्नता के कारण होती है। जिस भाषा का क्षेत्र जितना विस्तृत होगा, उसमें उच्चारण भिन्नता की संभावना भी उतनी ही अधिक होगी। उच्चारण शिक्षण के संबंध में ध्यान देने की बात यह है कि उच्चारण शिक्षण के समय मात्र ध्वनियों तथा वर्णों पर ही ध्यान न देकर शब्द और वाक्य स्तर पर भी शुद्ध उच्चारण के विषय में छात्रों का ध्यान आकर्षित कराया जाय।

नोट–उच्चारण स्थान के बारे में पूर्व में लिखित प्रारूप का अवलोकन करें।

उच्चारण दोष के कारण–हिन्दी भाषा में उच्चारण दोष के कारण प्रमुख हैं–

1. **हिन्दी ध्वनियों एवं उच्चारण स्थानों का अपूर्ण ज्ञान**–छात्रों को प्रारम्भिक कक्षाओं में ही ध्वनियों के उच्चारण तथा उच्चारण स्थानों के विषय में भ्रम हो जाता है जिससे छात्र श, ज, स में ऋ र में इ, ई में तथा ब भ में कोई भेद नहीं समझते हैं। उच्चारण दोषों से बचने के लिए हिन्दी ध्वनियों के सही स्वरूप और उच्चारण का ज्ञान कराया जाना आवश्यक है।

2. उच्चारण तत्वों के ज्ञान का अभाव–छात्रों को उच्चारण तत्त्वों का (ध्वनि–व्यवस्था, लय, स्वराघात, गति विराम आदि) का समुचित ज्ञान नहीं होता है। इससे छात्र अशुद्ध उच्चारण करते हैं, जैसे–निन्यानबे को प्रायः निन्नानबे, तैंतालिस को तिरालिस या तेतालिस बोलने की गलतियाँ होतीं है।

3. शारीरिक विकार (ध्वनियंत्र संबंधी)–कुछ छात्र शारीरिक विकारों से ग्रस्त होते हैं और कुछ छात्रों को ध्वनि यंत्रों (कण्ठ, तालु आदि) में विकार होता है, जिससे वे शुद्ध उच्चारण करने में समर्थ नहीं हो पाते हैं जैसे–अतिवृद्ध व्यक्ति, शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति (उच्चारण स्थान के स्तर पर)।

4. परिवार में शुद्ध उच्चारण पर ध्यान न देना–उच्चारण दोष का अन्य कारण परिवार के लोगों द्वारा शुद्ध उच्चारण पर ध्यान न देना भी है। जिस परिवार में बच्चा रहता है यदि उसके सदस्य अशुद्ध उच्चारण करते हैं तो बच्चा भी उनका अनुकरण करके ध्वनियों का अशुद्ध उच्चारण करना ही सीखेगा, साथ ही अशिक्षित माता–पिता बच्चों के उच्चारण के प्रति विशेष ध्यान नहीं देते हैं, जिससे वे उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियाँ करते हैं। जैसे–

माता–पिता	बच्चे
पहुँचाना, चहुँपाना, पहुँचना, चहूँपना	चहुँपाना, चहूँपना

5. बलाघात से अपरिचित होना–हिन्दी की वाक्य संरचना के समय बलाघात का भी महत्त्व होता है, परन्तु वाक्य के उच्चारण के समय किस शब्द पर बल देते हैं, यह महत्त्वपूर्ण है। जैसे–'राम ने तुमको मारा' वाक्य में 'राम' पर बल देने पर राम दण्डनीय है, होने का ज्ञात होता है। 'तुमको' पर बल देने पर ज्ञात होता है, तुम तो स्वयं बहुत तेज हो, कैसे राम ने तुमको मार दिया। इस तरह अर्थ भेद हो जाता है।

6. गति का ज्ञान न होना–छात्रों को पढ़ाते समय समुचित मात्र, समयाधिक्य, न्यून आदि का ज्ञान नहीं कराया जाता है। अतः वे उच्चारण करते समय ध्वनियों का उच्चारण कभी मन्द गति से करने लगते हैं, जैसे–

मारो मत, छोड़ो–1

मारो, मत छोड़ो–2

उपर्युक्त दोनों वाक्यों के अर्थ में भिन्नता स्पष्ट है। इसके कहने के लहजे पर अर्थ निर्भर करता है। नं0 01 वाक्य में 'मारो मत' बोलने के बाद थोड़ा रूकने और फिर छोड़ो बोलने पर अर्थ निकलता है कि कोई किसी से कहता है कि उसे मत मारो, बेचारे को छोड़ दो। नं0 02 वाक्य में कहा गया है कि उसे अवश्य मारो, उसे छोड़ो मत।

भाषा का उच्चारण शुद्ध रूप में किया जाय–इसके लिए त्रुटियों की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित कराना आवश्यक है।

उच्चारण संबंधी दोष एवं उनका निवारण–छात्रों द्वारा उच्चारण करते समय प्रायः निम्नलिखित दोष पाये जाते हैं जिनके निराकरण के लिए प्रशिक्षु को विशेष रूप से सजग रहना चाहिए–

1. इ को दीर्घ ई के रूप में उच्चारण करने का दोष बहुत अधिक पाया जाता है। जैसे–इमली, ईख का उच्चारण करते हैं। अतः ह्रस्व 'इ' का उच्चारण अभ्यास आवश्यक है।
2. उ को दीर्घ ऊ बोलने का दोष। अतः ऐसे शब्दों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास अपेक्षित है।
3. 'ऐ' को 'अय' की भाँति उच्चरित करते हैं। जैसे–पैसा को पयसा। अतः इनके शुद्ध उच्चारण का अभ्यास आवश्यक है।
4. छ को च्छ और क्ष को छ के रूप में उच्चारण पायी जाती है। इनका उच्चारण छात्रों को अलग–अलग स्पष्ट रूप से समझा देना चाहिए।
5. 'ट' और 'ठ' के उच्चारण में भी प्रायः भूल होती है। जैसे–चिट्ठी का चिठ्ठी। अतः ऐसे शब्दों का उच्चारण अभ्यास आवश्यक है।
6. 'ड', 'ढ' को और ड को ढ के रूप में उच्चरित करने का दोष भी बच्चों में पाया जाता है। सड़क, पढ़ना आदि शब्दों के स्पष्ट उच्चारण से उनका भ्रम दूर किया जा सकता है।
7. 'ण' और 'ड़' का उच्चारण भ्रम भी पाया जाता है, जैसे–गणेश को गड़ेश, गरूण को गरूड़। अतः इन शब्दों का भी उच्चारण अभ्यास आवश्यक है।
8. व और ब का उच्चारण भ्रम भी बहुत अधिक है। जैसे–'व'–वन, ब–बन्दूक।
9. 'श', 'ष', 'स' के उच्चारण में सबसे अधिक दोष पाया जाता है। अतः ऐसे शब्दों का उच्चारण कराया जाय जिससे बच्चों को 'श', 'ष' 'स' का ठीक ज्ञान और अभ्यास हो जाय।
10. द्य का उच्चारण विद्यार्थी 'ध्य' अथवा 'ध' के रूप में करते हैं। विद्यार्थी का उच्चारण विध्यार्थी या विधार्थी हो जाता है। यह भ्रम द्+य के संयुक्त रूप द्य के रूप में लिखने से भी हो सकता है। इसकी जगह द्य रूप लिखा जाय तो उच्चारण भ्रम दूर हो जायेगा।
11. ज्ञ का सही उच्चारण–ज्ञ वर्ण ज+य के मेल से बना है। हिन्दी में इनका उच्चारण 'ग्यँ' के रूप में होता है। जैसे–ज्ञात, प्रज्ञा।
12. ऋ का उच्चारण प्रायः रि के रूप में किया जाने लगा है जो अशुद्ध है। ऋ का उच्चारण 'मूर्धा' से किया जाता है।

कक्षा–शिक्षण के समय उच्चारण अभ्यास–उच्चारण शिक्षण का उपयुक्त अवसर प्राथमिक स्तर है। बच्चों के उच्चारण सुधार का कार्य प्रारम्भिक स्तर से ही प्रारम्भ हो जाता है। आगे चलकर उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के समय उच्चारण अभ्यास हेतु निम्नलिखित अवसरों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

गद्य एवं पद्य शिक्षण के समय उच्चारण अभ्यास–दैनिक व्यवहार में गद्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। हम अपने भावों एवं विचारों को प्रायः गद्य में ही अभिव्यक्त करते हैं। दूसरे के भावों एवं विचारों का बोध गद्य के ही द्वारा सरलता से होता है। गद्य की वाक्य रचना में अर्थ–तत्त्वों की प्रधानता होती है और भाषा व्याकरण सम्मत एवं व्यवस्थित होती है। पद्य में अनुभूति की प्रधानता होती है। पद्य का संबंध संवेदना, भाव, रागात्मकता एवं कल्पना से है। गद्य शिक्षण के माध्यम से भाषा सम्बन्धी समस्त कौशलों तथा व्याकरण संबंधी नियमों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हो जाता है। प्रशिक्षु को स्वयं सर्वप्रथम सस्वर पठन, शुद्ध उच्चारण, आरोह–अवरोह तथा प्रवाह के साथ करना चाहिए। सस्वर वाचन के समय वर्ण या शब्द विशेष की उच्चारण शुद्धता का ही नहीं अपितु वाक्य स्तर पर भी उच्चारण–शुद्धता, उचित स्वराघात, सुर आदि के सम्यक निर्वाह पर बल देना चाहिए। गद्य पाठों में भाषा कार्य के

अन्तर्गत शब्दार्थ, शब्द प्रयोग, शब्द रचना के समय भी उच्चारण शिक्षण का अवसर प्राप्त होता है। जैसे–बिजुरी के परकास में अपनी आँखें चौंधिया जाती हैं (अशुद्ध)।

बिजली के प्रकाश में अपनी आँखें चौंधिया जाती हैं (शुद्ध)।

संधि, उपसर्ग, प्रत्यय, लिंग, वचन, विकार आदि के कारण शब्दों के रूप बदल जाते हैं और उनके कारण उच्चारण में अशुद्धियाँ हो जाती हैं। जैसे–

संधि–सूर्योदय (सूर्य उदय हो रहा है), **उपसर्ग**–विहार, प्रसार, **लिंग**–हाथी आती है (हाथी आता है)

वचन–सभी लोगों का कहना है (सभी लोग कहते हैं)

कविता शिक्षण के सम्बन्ध में (प्रशिक्षुओं के लिए)–कविता शिक्षण के समय कविता से पूर्व संबंधित कथा के बारे में छात्रों को अवगत कराना आवश्यक होगा। कथा के सामान्य आदर्शों की ओर छात्रों को प्रेरित करके ही संबंधित अंश को अच्छी तरह पढ़ाया जा सकता है। स्फुट कविताओं में देश–प्रेम, श्रम की महत्ता, त्याग, बलिदान एवं मानवीय मूल्यों एवं नैतिक आदर्शों की कविताएँ रहती हैं।

तुलसी, सूर और मीरा के पद तो प्रायः कक्षा तीन से ही छात्रों के समक्ष आने लगते हैं। पदों के अध्यापन के संबंध में अध्यापक को यह ध्यान रखना होगा कि 'पद्य' की एक विशिष्ट विधा 'पद' है। पद में किसी एक समस्या पर विचार किया जाता है। मुख्य समस्या को प्रथम पंक्ति में ही रखा जाता है। उदाहरण के लिए 'मैया मोरि मैं नहीं माखन खायो', 'कबहुक हौं यहु रहनि रहौगो' या 'बसो मेरे नैनन में नंदलाल' आदि पद की प्रथम पंक्तियाँ हैं। यही 'पद' के मुख्य विचार से सम्बद्ध बातें भी हैं। अन्य विचार इन्हीं के इर्द–गिर्द चलते हैं। अन्ततः इसका समाधान आता है। अंतिम पंक्ति में रचनाकार अपना नाम भी देता है। यथा–'सूरदास तब विहँसि यशोदा लै उर कण्ठ लगायो' या 'मीरा' प्रभु सन्तन सुखदायी' 'भगत बछल गोपाल' आदि। कविता पढ़ाने के पूर्व उस कविता के सम्पूर्ण परिवेश से छात्र को अवगत कराना आवश्यक होता है। इस दृष्टि से काव्य रूपों को ध्यान रखकर कविता–शिक्षण करना अत्यन्त आवश्यक है।

उद्देश्य (प्राथमिक स्तर पर)–

- शब्दों का स्पष्ट एवं मानक उच्चारण।
- भावानुकूल वाचन।
- गति एवं प्रवाह के साथ वाचन की योग्यताएँ।
- छोटे बच्चों के लिए लिखे गये गीतों को स्वयं पढ़ने तथा उन्हें कण्ठस्थ करना।
- अन्य बच्चों के समक्ष सुनाने की योग्यता विकसित करना।
- कविता को व्यक्तिगत तथा समूह के साथ हावभाव, आरोह–अवरोह के साथ सुनाने की योग्यता विकसित करना।
- कविता को नाटकीयता के साथ सुनाने की दक्षता विकसित करना।
- 'अंगद रावण संवाद' तथा 'परशुराम लक्ष्मण संवाद', 'सूरज और हवा' आदि कविता के कलात्मक संवाद को भावात्मक अंदाज में सुनाने की दक्षता का विकास करना।

पूर्व माध्यमिक स्तर–

- प्राथमिक स्तर की योग्यताओं में क्रमशः विकास करना।

- कठिन शब्दों के उच्चारण का समुचित अभ्यास कराना।
- उच्चारण विषयक त्रुटियों का सुधार करना।
- इस स्तर पर कविता की परख, कविता के प्रति रूचि का विकास करना।
- उपयोगी कविताओं के चयन की क्षमता का विकास करना।
- कविता की पंक्तियों में प्रयुक्त रस एवं अलंकार यथा–वीर रस, शान्त रस तथा उपमा, अनुप्रास, यमक अलंकार को सामान्य रूप से पहचानने की क्षमता का विकास करना।

विधियाँ–

1. गीत प्रणाली–इसका सहारा प्रायः छोटी कक्षाओं (कक्षा 01 से 03) में लिया जाता है। इस स्तर पर बालगीतों का चयन किया जाता है, जिसमें लय की प्रधानता होती है। इसमें शिक्षक स्वयं स्वर ताल के साथ गीतों को पढ़ता है और बच्चे सामूहिक रूप से उसे दुहराते हैं। ऐसे गीतों के वाचन में छात्र बड़ी रूचि के साथ भाग लेते हैं। यह विधि केवल शिशु कक्षाओं के लिए उपयोगी है।

2. अभिनय या नाट्य प्रणाली–इस प्रणाली का प्रयोग भी प्रारम्भिक कक्षाओं में अभिनय प्रधान गीतों को पढ़ाने के लिए किया जाता है। इन पदों को पढ़ते समय बालक पद्य की लय, गीत एवं ताल के अनुसार अंग संचालन द्वारा भाव व्यक्त करना सीख जाता है। इन गीतों के साथ बच्चों का अधिक मनोरंजन होता है, साथ ही वे अपने अंग प्रत्यंगों को कविता की लय के अनुसार संचालित करने का कौशल प्राप्त कर लेते हैं। छात्र सामूहिक अभिनय भी सीख जाते हैं। कविताएँ भी आसानी से याद हो जाती हैं। शिक्षक में भी विशेष कुशलता की आवश्यकता होती है। इस प्रणाली द्वारा कक्षा में जीवन का संचार हो जाता है, किन्तु इसका प्रयोग सभी कविताओं के लिए नहीं किया जा सकता।

3. अर्थबोध प्रणाली–इसमें शिक्षक स्वयं कविता के कुछ अंशों को पढ़ते हुए उसका अर्थ बताता चलता है। इस प्रणाली का प्रयोग करने में अध्यापक बच्चों की रूचि एवं रसानुभूति पर ध्यान न रखकर केवल अपने पाठ्यक्रम तथा उसके शिक्षण की अवधि पर ध्यान रखता है। यह प्रणाली कविता–शिक्षण के लिए सर्वथा दोषपूर्ण है, फिर भी व्यावहारिक रूप में इसी प्रणाली का प्रयोग जाने–अनजाने अधिकांश शिक्षक करते हैं।

4. खण्डान्वय प्रणाली–इसको प्रश्नोत्तर प्रणाली कहा जाता है। जिन पदों में अनेक प्रकार के विशेषणों का प्रयोग होता है तथा जिसमें अपेक्षाकृत अधिक उलझे हुए भाव अभिव्यक्त होते हैं, उनको स्पष्ट करने के लिए प्रश्नोत्तर प्रणाली का उपयोग होता है। इस प्रणाली के प्रयोग में छात्रों में बराबर सक्रियता बनी रहती है।

5. व्याख्या प्रणाली–व्याख्या करने के लिए इस प्रणाली का उपयोग होता है।

6. व्यास प्रणाली–ऊँची कक्षाओं के लिए प्रशिक्षु को यह ध्यान देना होगा कि बच्चा गद्य व पद्य के अंशों का शुद्ध उच्चारण लय एवं उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ने और बोलने में दक्ष हो गया है या नहीं। इसके लिए उसे कुछ शब्दों को पढ़वाकर तथा बोलवाकर देखना होगा।

मूल्यांकन (प्रशिक्षु बच्चों से करायें)–

प्रातः, प्रातः काल, विद्वान, द्वार, ब्रह्मा, ब्राह्मण, निश्चित, आश्चर्य, प्रसिद्ध, बुद्धिमान, हिम्मत, सम्मान।

गतिविधि–इसी प्रकार बच्चों को कुछ गद्य खण्ड देकर उसमें विराम चिह्नों का प्रयोग कराकर पढ़कर बोलवाएँ। जैसे–

''बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुँचे बाबा ने घोड़े दिखाया घमण्ड से खड़गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से सोचने लगा भाग्य की बात है ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था बालकों की सी अधीरता से बोला परन्तु बाबाजी इसकी चाल न देखी तो क्या?''

प्रशिक्षु–उच्चारण शिक्षण में शिक्षक के आदर्श वाचन का विशेष महत्त्व है। बालकों की उच्चारण संबंधी कठिनाइयों को जानना, उनके कारणों का पता लगाना और उपचारात्मक शिक्षण द्वारा उनका निराकरण उच्चारण प्रशिक्षु के लिए एक महत्त्वपूर्ण क्रियाविधि है।

मूल्यांकन–अक्षर कार्ड द्वारा बच्चों को उच्चारण करायें। शब्द कार्ड द्वारा उच्चारण करायें। शुद्ध एवं अशुद्ध उच्चारण संबंधी चार्ट के प्रयोग द्वारा।

पद्य के अंशों का शुद्ध उच्चारण–कविता 'लयात्मक' विधा है। बच्चों को सीधे–सीधे कविता सिखाने के पहले गाने गुनगुनाने की सरल गतिविधियाँ करायी जा सकती हैं। बच्चों की कविता सिर्फ शब्दों और उनके चमत्कृत रूपों, अलंकारों, उपमाओं से नहीं बनती। उसमें गाने गुनगुनाने की गुजाइश होना बच्चों के नजरिये से बेहद जरूरी है। हाव–भाव के साथ उतार–चढ़ाव, लय, सुर, ताल का उपयोग करते हुए गाने की रूचि पैदा हो जाने से कविता शिक्षण का आधा काम तो बन ही जाता है। सस्वर गायन से कविता के अर्थ और भाव अपने आप उभर आते हैं।

कविता शिक्षण के समय ध्यान देने योग्य बातें–

1. वातावरण सृजन/छात्रों का ध्यान आकर्षण हेतु समान भाव की कविता का वाचन/बच्चों से कविता सुनना।
2. पहले स्वयं उचित भाव–भंगिमा केक साथ भावानुकूल सस्वर वाचन करें।
3. बच्चों द्वारा सस्वर वाचन करवाना।
4. प्रश्नोत्तर/कथनों/चर्चा द्वारा कविता के केन्द्रीय भाव का स्पष्टीकरण।
5. कविता में आये भाव–सौन्दर्य, नाद–सौन्दर्य, विचार–सौन्दर्य, कल्पना तथा मर्मस्पर्शी स्थलों की पहचान व अनुभूति कराना।
6. समान भाव की कविता छात्रों द्वारा बोलवाना।
7. कुछ वस्तुओं (फूल, पुस्तक, पेड़, विद्यालय, परिवेशीय वस्तओं या पशु–पक्षियों) पर दो चार वाक्य बनवाएँ।
8. कविता की एक पंक्ति देकर उसे पूरी करायें। जैसे–उड़ती जाए हरी पतंग.....
9. कुछ शब्द देकर कविता बनाने को कहें।
10. सबकी कविता गतिविधि करवाना।

मूल्यांकन–(1) प्रशिक्षु बच्चों के सतत् मूल्यांकन हेतु भावबोध, भावार्थ, स्पष्टीकरण, मर्मस्पर्शी स्थलों की पहचान, अलंकारों की पहचान तथा एक पंक्ति देकर दूसरी पंक्ति की पूर्ति कराना।

(2) कुछ पंक्तियों का अर्थ देकर प्रशिक्षु छात्रों से उन पंक्तियों को पढ़कर बोलवाएँ।

(3) अपने समूह के सभी बच्चों को कविता पढ़ने और पंक्तियों का अर्थ कहने के लिए अवसर दिया जाय। कुछ समूहों का प्रस्तुतीकरण कराया जाय।

पाठ–4
स्वतंत्र (मौलिक एवं लिखित) अभिव्यक्ति

अनुभूति और अभिव्यक्ति एक दूसरे के पूरक हैं। अभिव्यक्ति के अभाव में अनुभूति जहाँ सीमित और प्रभावहीन रहती है वही अभिव्यक्ति की सारगर्भिता भी अनुभूति की गहराई पर निर्भर रहती है। ऐसे में यदि स्वतंत्र अभिव्यक्ति की बात करें तो कहा जा सकता है कि यह व्यक्तित्व विकास मं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्वतंत्र अभिव्यक्ति क्या है? भाषा शिक्षण में स्वतंत्र अभिव्यक्ति की आवश्यकता क्या है? इन सभीका समाधान इस इकाई के अध्ययन एवं विश्लेषण का मूल बिन्दु है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अभिप्राय क्या है? समझ सकेंगे।
- स्वतंत्र अभिव्यक्ति क्यों आवश्यक है? स्पष्ट कर सकेंगे।
- भाषा विकास में स्वतंत्र अभिव्यक्ति किस प्रकार सहायक है? समझा सकेंगे।
- मौखिक एवं लिखित रूप में स्वतंत्र अभिव्यक्ति के विभिन्न प्रेरक अवसर कौन–कौन से हैं? समझ सकेंगे।
- व्यक्तित्व विकास में स्वतंत्र अभिव्यक्ति की क्या भूमिका है? इसको जान सकेंगे।

समग्री–चित्र कार्ड, शब्द कार्ड, कविता, कहानी का संकलन।

प्रशिक्षु के लिए–किसी विषय, वस्तु, दृश्य, घटना या वातावरण के संदर्भ में हम जो कुछ मौलिक ढंग से सोचते हैं, जो विचार हमारे मन में आता है, उसकी कल्पना में जो चिन्तन चलता है तथा जिन्हें हम शब्दों और वाक्यों की सहायता से मौखिक या लिखित रूप में व्यक्त करते हैं, वह 'स्वतंत्र अभिव्यक्ति' कही जाती है। 'स्वतंत्र अभिव्यक्ति' भाषा का आवश्यक अंग है। इसकी सहायता से सहज ही भाषा में कुशलता प्राप्त की जा सकती है। भाषा के सृजनान्तक विकास के लिए आवश्यक है कि बच्चों में स्वतंत्र रूप से बोलने और लिखने की कला का विकास हो। इसके लिए बच्चों के स्तर और परिवेश को ध्यान में रखकर उन्हें स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना चाहिए। हम स्वयं अनुभव करेंगे कि बच्चे भाषा को उसकी शुद्धता और सुगमता के साथ सीख रहे हैं, क्योंकि हम सभी जानते हैं कि भाषा एक कौशल है। यह कौशल विभिन्न प्रयोगात्मक कार्यों से और निखरता है। बच्चों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति की समझ विकसित हो, उनकी मौखिक, लिखित शैली बेहतर हो इसके लिए जरूरी है कि उनके सामने ऐसा वातावरण बनाया जाय, जहाँ पर वे अपने भाव, विचार और चिन्तन को निःसंकोच शब्द का रूप दे सकें। इसके लिए निम्नलिखित तरीके/गतिविधियाँ सहायक हो सकती हैं–

तरीका/गतिविधि 01 (बच्चों के लिए)–प्रशिक्षु बच्चों से कुछ प्रश्न पूछते हुए स्वतंत्र भाव से मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के लिए करे। इसके लिए वह निम्नलिखित ढंग से प्रश्न कर सकते हैं, जैसे–

मौखिक अभिव्यक्ति–

- ठण्डी हवा किस मौसम में चलती है?
- ठण्ड लगने पर हम किस प्रकार के कपड़े पहनते हैं?
- पिंजरे में बंद पक्षी और जानवर के मन में क्या–क्या विचार आते होंगे?

- अपनी पाठ्यपुस्तक से कोई एक कविता सुनाओ।
- तुम्हें कौन सा पक्षी अच्छा लगता है?
- कौन से जानवर से डर लगता है और क्यों?
- तुम्हें खाने में क्या–क्या अच्छा लगता है?
- बारिश के मौसम में कौन–कौन से फल होते हैं?
- आप किस प्रदेश में रहते हैं?

तरीका/गतिविधि 02–प्रशिक्षु बच्चों के समक्ष कुछ चित्रों को रखकर उन पर बातचीत करें। चित्र स्पष्ट और सरल होने के साथ ही ऐसा हो जिस पर बच्चे सहज ढंग से बोलने में समर्थ हो। मुद्रा विशेष वाले भी चित्र लिए जा सकते हैं। जैसे–(1) दो पक्षियों को उड़ते हुए (2) उनमें से एक को तीर लगते हुए (3) घायल हो जाने पर गिरते हुए (4) दूसरे पक्षी का शोर मचाना (5) किसी व्यक्ति का घायल पक्षी को हाथ में उठाकर सेवा भाव करते हुए। इन चित्रों को क्रमशः दिखाकर–

- चित्र का वर्णन करवाया जाय।
- चित्र पर आधारित प्रश्नों का उत्तर पूछा जाय।
- चित्रों द्वारा मौखिक/लिखित कहानी बनाने को प्रेरित किया जाय।

प्रशिक्षु के लिए घ्यातव्य बातें–

- चित्र आकर्षक होने के साथ ही सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण सम्बन्धी जीवन पर आधारित हो।
- चित्र कक्षा के अनुकूल होना चाहिए।
- बच्चों की बात को धैर्यपूर्वक सुनें।
- मतभेद व्यक्त करने की इच्छा हो तो उस पर काबू करें।
- चित्र से सम्बन्धित और जानकारी माँगे या बच्चे का ध्यान विषय के किसी नए पहलू की तरफ खींचें।

मूल्यांकन (लिखित अभिव्यक्ति के लिए)–

- उत्तर देते समय शब्दों एवं वाक्यों का उच्चारण शुद्ध एवं स्पष्ट है कि नहीं।
- बोलने में स्वाभाविकता है कि नहीं अर्थात् स्वर न बहुत मन्द हो न बहुत ऊँचा हो।
- बोलने में संकोच और झिझक तो नहीं है।
- वृक्षों से हमें क्या लाभ होता है?
- गाँधी जी के तीन बन्दर हमें क्या सीखाते हैं?
- हमें खाने से पहले हाथ क्यों धोना चाहिए?
- दूध से बनी चार वस्तुओं के नाम लिखिए।
- हमें पानी कहाँ से मिलता है?
- कटहल के पेड़ के अतिरिक्त चार पेड़ों के नाम लिखिए।

- जंगल में कौन–कौन से जानवर रहते हैं? उनके नाम लिखिए।
- सर्कस के खेल में क्या–क्या दिखाया जाता है?
- यदि आपने कभी सर्कस देखा है तो उसमें क्या–क्या देखा?

स्वतंत्र लेखन संबंधी गतिविधि के दोरान बच्चों की सक्रियता एवं उत्साह का आकलन करते हुए जहाँ आवश्यक समझें सहायता करते रहें।

मूल्यांकन–

– बच्चे किसी चित्र को देखकर स्वतंत्र ढंग से कितना बोल पा रहे हैं।

– चित्र देखकर उसमें निहित भावों को समझते हुए अपने शब्दों में व्यक्त कर पा रहे हैं या नहीं।

तरीका 03 (प्रशिक्षु के लिए)–प्रशिक्षुओं को तीन–चार छोटे समूहों में इस प्रकार बाँट लें कि प्रत्येक समूह में कम से कम चार से छह प्रतिभागी अवश्य हों। समूह के प्रत्येक सदस्य निम्नांकित बिन्दुओं पर क्रमशः मौखिक तथा लिखित कार्य करें–

- बी0टी0सी0 प्रशिक्षण हेतु अथवा घर से विद्यालय हेतु अपनी यात्रा का सरल तथा रोचक वर्णन।
- अपने शिक्षक जीवन की उपलब्धियाँ या शिक्षण सम्बन्धी विशेषताओं का आकलन।

तरीका 04 (प्रशिक्षु और बच्चों के लिए)–प्रशिक्षुओं/बच्चों को चार से छह समूहों में बैठाकर उनके बीच कुछ शब्द जैसे–कोई पशु–पक्षी, यातायात के साधन, मौसम के नाम आदि रखकर उनसे सम्बन्धित बात, विचार, कविता, कहानी या चित्र बनाने को कहिये। इस सम्बन्ध में यह निर्देश देना न भूलें कि अभिव्यक्ति की विधा चाहे जो हो बस उससे भाव और अर्थ का पूर्ण प्रकाशन होता हो।

मूल्यांकन–दिये गये शब्दों पर बच्चे अपनी बात मौखिक/लिखित या चित्रात्मक रूप में व्यक्त करने में समर्थ हो/अपनी बात को क्रम में रख पा रहे हैं या नहीं।

तरीका/गतिविधि 05 (अभिनय की सहायता से)–

इस गतिविधि में प्रशिक्षु निम्नलिखित माध्यम अपना सकते हैं–

- किसी कविता, कहानी या एकांकी को भावपूर्ण ढंग से सुनाकर बच्चों से उसका अभिनव करने को कहें, उदाहरणार्थ–

  रेल चली भाई रेल चली
  छुक–छुक करती रेल चली.....

  जैसी कविता सुनाकर बच्चों से चलती रेल का अभिनय करने को बोलें।
- कोई कहानी सुनाकर उसके किसी पात्र का संवाद बोलने को कहें।
- किसी जानवर या पशु–पक्षी की आवाज या व्यवहार का भी अभिनय बच्चों द्वारा सहजतापूर्वक किया जा सकता है।
- दो–तीन बच्चों से किसी एकांकी या अभिनय कराकर सभी बच्चों से देखे गए अभिनय के आधार पर कविता, कहानी या अपने विचार लिखने को कहें। 'अभिनय देखकर तत्काल उस पर कुछ लिखना' यह कार्य बच्चों के लेखन रूचि को परिष्कृत करने में काफी सहायक हो सकता है।

तरीका/गतिविधि 06 (बच्चों के लिए)–प्रशिक्षक बच्चों के समक्ष कुछ परिस्थितियाँ रख दे और उनसे कहे कि वे अपनी कल्पना के आधार पर उनसे सम्बन्धित वाक्य बोले अथवा लिखे। बच्चों के समक्ष ऐसी परिस्थितियाँ रखी जा सकती हैं, जैसे–

- यदि तुम अपनी कक्षा के कप्तान होते तो.....
- यदि तुम अपने गाँव के प्रधान होते तो.....
- यदि तुम अपने घर के मुखिया/मालिक होते तो.....
- यदि तुम्हें कोई जादू की छड़ी मिल जाये तो.....
- यदि तुम वृक्ष होते तो.....
- यदि तुम चिड़िया होते तो.....

तरीका/गतिविधि 07–

- प्रशिक्षु कक्षा के बच्चों को चार समूह में विभाजित कर पहले समूह को सामाजिक कार्यकर्ता, दूसरे समूह को राजनेता, तिसरे समूह को फिल्मकार और चौथे समूह को साहित्यकार/शिक्षक का साक्षात्कार लेने हेतु तथा उनके जीवन से जुड़े महत्त्वपूर्ण पक्षों, उपलब्धियों एवं उनके सामाजिक सन्देश को जानने के लिए प्रश्न बनाने को कहें।
- प्रश्न तैयार करने में प्रशिक्षु को थोड़ी बहुत सहायता करनी चाहिए।
- बच्चों को दो समूह में बैठाकर एक समूह के किसी एक बच्चे को सामाजिक कार्यकर्ता/राजनेता/अभिनेता बनकर बैठने को कहें और दूसरे समूह को उनसे प्रश्न पूछने को कहें।
- प्रशिक्षु साक्षात्कार के समय आने वाली कठिनाइयों पर चर्चा कर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें।

तरीका/गतिविधि 08 (शब्द देकर वाक्य निर्माण द्वारा)–प्रशिक्षु बच्चों को कुछ शब्द दे दें और छात्र उसके आधार पर वाक्य का निर्माण करने को बोले। जैसे कक्षा–04 के बच्चों को पुस्तक, दस पृष्ठ, सरस्वती की तस्वीर, पहाड़ा, माँ, बड़ा भाई आदि शब्द दे दिये जायें और वे निम्नलिखित ढंग से सरल वाक्य बनाएँ–

(1) मेरे पास पुस्तकें हैं।
(2) एक पहाड़ा की पुस्तक भी हैं।
(3) उसमें कुल दस पृष्ठ हैं।
(4) पुस्तक के ऊपर सरस्वती की तस्वीर बनी है।
(5) माँ मेरी पुस्तक झोले में रखकर मुझे स्कूल के लिए तैयार करती है।
(6) बड़ा भाई मुझे स्कूल पहुँचाने जाता है।

इस प्रकार 'शब्द खेल' द्वारा बच्चों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास सहज ही किया जा सकता है।

गतिविधि 09–प्रशिक्षु बच्चों को कुछ संकेत देकर कहानी कहने या लिखने को प्रोत्साहित कर सकते हैं। जैसे–

संकेत–(1) लोमड़ी और बकरी का एक ही तालाब में पानी पीना।

(2) लोमड़ी का बकरी को खाने का मन बनाना और उस पर तालाब को गंदा करने का आरोप लगाना।
(3) बकरी का इस आरोप को गलत बताना।
(4) लोमड़ी का पुनः ऊपर (बकरी पर) गुर्राने का आरोप लगाना।
(5) बकरी का इस आरोप को भी गलत बताना।
(6) लोमड़ी का बकरी पर और आरोप लगाना और अन्त में उसे खा जाना।

सोचिए! ऐसे और कौन–कौन से तरीके हो सकते हैं जिनके माध्यम से आप बच्चों को स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

स्वतंत्र अभिव्यक्ति क्षमता के विकास से–

- बच्चे में आत्मविश्वास पढ़ता है।
- वह सीखने में रूचि लेने लगता है।
- भाषायी कौशल में निखार आता है।
- बिन्दु विशेष पर अपनी बात रख सकता है।
- कुशल वक्ता, लेखक, रचनाकार बन सकता है।
- सृजनात्मक पक्ष मजबूत होता है।

मूल्यांकन–

- किसी बिन्दु विशेष पर अपने भाव या विचार व्यक्त करने में उसे असहजता तो महसूस नहीं हो रही।
- भाव या विचार करने में क्रम आगे पीछे तो नहीं हो रहा।
- किसी भी बिन्दु पर बोलते या लिखते समय शब्द–चयन पर विशेष ध्यान दें।
- मौखिक रूप से भाव और विचार व्यक्त करने में बोलने के ढंग/तरीके पर ध्यान दें।
- लिखित रूप में विचार अभिव्यक्त करने में लेखन शैली की शुद्धता और परिष्कार पर विचार आवश्यक है।

पाठ–5

स्तरानुकूल गद्य–पद्य में शब्दों, वाक्यांशों, विरामचिह्नों एवं समान ध्वनियों को समझना।

उद्देश्यः–

- बच्चों में भाषा की समझ विकसित करना।
- गद्य और पद्य में अन्तर कर पाना।
- गद्य एवं पद्य में आए शब्दों, वाक्यांशों को समझते हुए पढ़ना।
- शुद्ध उच्चारण, उचित आरोह–अवरोह एवं विराम चिह्नों को ध्यान रखते हुए पढ़ना।
- समान ध्वनियों वाले शब्दों को समझना।

सहायक सामग्री–

कक्षा के सामान्य उपकरण, चित्रकार्ड, शब्दकार्ड, वाक्यपट्टियाँ, छोटी–छोटी पट्टिकाओं पर लिखे गद्य–पद्य (कक्षा की पाठ्यपुस्तक में आए गद्य–पद्य के पाठ, चार्ट, माडल, आदर्श विडियो आदि)

तरीका–

परस्पर बातचीत करके, किसी कविता या गद्यखण्ड का उचित आरोह अवरोह एवं उचित विराम का पालन करते हुए सस्वर/आदर्श वाचन करके। गद्य एवं पद्यों को बच्चों द्वारा अनुकरण/एकल वाचन कराकर। कुछ कविता एवं गद्य भाग का आडियो–वीडियो दिखाकर। आदर्श दृष्टान्त उपस्थित कराकर।

बच्चों का मन एवं मष्तिष्क अत्यन्त कोमल होता है। उन पर किसी बात का प्रभाव बड़ी शीघ्रता से पड़ता है, इसलिए आवश्यक है कि जब हम ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों की समझ बच्चों में विकसित कर रहे हों तो हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- भाषा में सरलता एवं मधुरता हो।
- ध्वनियाँ स्पष्ट हों।
- शब्दों का शुद्ध उच्चारण हो।
- शब्दों एवं वाक्यों में विराम चिह्नों को ध्यान में रखा जाय।
- ध्वनियों, शब्दों और वाक्यों का उच्चारण करते समय स्वर एवं उनके उतार–चढ़ाव का ध्यान रखा जाय।
- भाषा का उच्चारण करते समय यह ध्यान दिया जाय कि लोक भाषा के उच्चारण का प्रभाव न पड़ने पाये।

इस प्रकार की सावधानियों को अपनाकर हम बच्चों में ध्वनियों के बीच अन्तर को स्पष्ट कर पायेंगे, शब्दों एवं वाक्यों के शुद्ध उच्चारण की क्षमता विकसित कराने के साथ–साथ उनके अर्थ एवं भाव की समझ विकसित कराने में सफल हो पायेंगे। ध्वनियों, शब्दों एवं वाक्यों की समझ विकसित करने की दिशा में जब हम कार्य कर रहे होते हैं तो अनेक असहज परिस्थितियों का भी सामना हमें करना पड़ता है। जैसे–

- कुछ बच्चे बोलने में संकोच करते हैं।

- कुछ बच्चे बोलने में कठिनाई अनुभव करते हैं आदि–आदि।

ऐसी स्थिति में हमें उनके संकोच को परिवेशीय सन्दर्भों, परिस्थितियों, घटनाओं की मदद से औपचारिक/अनौपचारिक संवाद के माध्यम से संकोच/अप्रत्याशित भय को दूर कर सकते हैं। इसी प्रकार बोलने में कठिनाई अनुभव करने वाले छात्रों को अधिक से अधिक बोलने, पढ़ने का अवसर देना चाहिए जिससे उनमें धीरे–धीरे साहस एवं स्वावलम्बन का विकास हो सके। यदि हम शिक्षक स्वयं गद्य एवं पद्य के वाचन उचित आरोह–अवरोह एवं उचित विराम चिह्नों को ध्यान में रखते हुए एकाधिक आदर्श दृष्टान्त उपस्थित करते हैं तथा उन्हें ध्वनियों, शब्दों एवं वाक्यों के बार–बार सुनने का अवसर देते हैं तो सम्भव है कि हम ध्वनियों के मौलिक अन्तर की समझ विकसित करने के साथ–साथ शब्दों एवं वाक्यों को भी उचित विराम एवं शुद्ध उच्चारण का कौशल विकसित करने में सक्षम हो सकेंगे।

क्रियाकलाप–इसके लिए अनेक क्रियाकलाप आयोजित कर सकते हैं जिससे उपर्युक्त दक्षताएँ बच्चे हासिल कर सकें।

1. वर्णमाला खेल–यह गतिविधि हमें बच्चों में ध्वनियों एवं उनके बीच स्पष्ट अन्तर की समझ विकसित करने में मदद दे सकती है। बच्चों को गोल घेरे में बैठा दें, स्वयं वृत्त के बीच में बैठ सकते हैं। शिक्षक एक वर्ण की ध्वनि को उच्चारित करें, क्रमशः बच्चे उस ध्वनि को सुनकर क्रमशः उच्चारित करें। यदि सभी बच्चे उस ध्वनि को उच्चरित कर ले तो समवेत तालियाँ बजवाएँ तथा दूसरा वर्ण उच्चारित करें, परन्तु जो बच्चा/बच्चे उस ध्वनि को ठीक–ठीक उच्चारित न कर सके/सकें तो उन्हें वृत्त के बीच में बैठाकर बार–बार उच्चारित कराएँ एवं शुद्ध उच्चारण के पश्चात् तालियाँ बजवाएँ। इसी प्रकार अन्य वर्णों के ध्वनियों के साथ किया जा सकता है। इस क्रियाकलाप को वर्णकार्ड दिखाकर भी कराया जा सकता है। प्रारम्भिक चरण में अमात्रिक अक्षरों/वर्णों को लें, बाद में मात्रिक वर्णों/अक्षरों को लें। यह कार्य शब्दों के साथ भी किया जा सकता है।

शब्दों, वाक्यों एवं वाक्यांशों का चुनाव यदि परिवेशीय एवं सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त होने वाले हो तो कौशल विकसित करने में अधिक मदद मिलेगी।

दैनिक व्यवहार में आने वाले वाक्यों को भाव एवं सन्दर्भ के अनुकूल समझते हुए बोलने का कार्य कराया जा सकता है।

मूल्यांकन–बच्चों में ध्वनियों, शब्दों एवं वाक्य–वाक्यांशों की समझ विकसित करने वाले क्रियाकलापों के दौरान मूल्यांकन का कार्य भी करते चलें।

1. इसके लिए शब्दों, वाक्यों की पट्टिकाएँ एक जगह रखकर बच्चों से बारी–बारी से उठाने को कहा जा सकता है तथा उन्हें देखकर बोलने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। इस क्रियाकलाप से इनकी समझ का मूल्यांकन आसानी से किया जा सकता है।

2. इसी प्रकार छोटी–छोटी कविताओं को सस्वर वाचन कराकर पद्य की समझ का मूल्यांकन किया जा सकता है।

3. समान ध्वनियों को बच्चों से सोचकर बोलने को कहा जा सकता है। जैसे–साथ–साथ, सुन्दर–सुन्दर, अच्छे–अच्छे, छोटे–छोटे जैसी समान ध्वनियों वाले शब्दों के सहारे वाक्य रचना कराकर समान ध्वनियों की समझ विकसित कराया जा सकता है।

निवारण–

- प्रशिक्षु कक्षा में बच्चों द्वारा किये गये उच्चारण की शुद्धता पर बल दें तथा स्वयं उच्चारण एवं बच्चों से उनका अनुकरण कराएँ।
- बच्चे जिन ध्वनियों अथवा शब्दों के उच्चारण में प्रायः त्रुटियाँ करते हैं, प्रशिक्षु उन पर चर्चा करें।

विराम चिह्न–

पठन और लेखन में विराम चिह्नों का सार्थक और सटीक प्रयोग हम तभी कर सकते हैं जब उसकी बारीकियों से अथवा सूक्ष्म ज्ञान से परिचित हों। इसके लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए जा सकते हैं–

(1) व्यायाम द्वारा।
(2) छोटे–छोटे वाक्यों द्वारा।
(3) चर्चा द्वारा।

इन शिक्षण विधियों के आधार पर यहाँ कुछ प्रमुख विराम चिह्नों का विशेष विवरण दिया जा रहा है जो साधारणतः अधिक प्रयोग में आते हैं–

व्याख्यान विधि–इसमें शिक्षक प्रत्येक विराम चिह्न को विस्तार से समझाए। बीच–बीच में जैसी जरूरत हो वैसा उदाहरण भी देता चले। जैसे–

पूर्ण विराम (।) –पूर्ण विराम वाक्य की पूर्णता का बोधक है। किसी वाक्य को पूरा हो जाने पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

- भारत हमारा देश है।
- आज मेरा जन्मदिन है।
- छोटे बच्चे सभी को प्यारे होते हैं।

पूर्ण विराम से संबंधित अन्य जानकारियाँ–

- उच्चारण करते समय पूर्ण विराम की जगह कुछ पल ठहर कर फिर अगले शब्द को बोलना चाहिए। ऐसा न करना उच्चारण त्रुटि के अन्तर्गत माना जायेगा।
- पद्य में दोहा, चौपाई, सोरठा आदि छन्दों की पहली अर्धाली के बाद एक पूर्ण विराम (।) और दूसरी अर्धाली के बाद दो पूर्ण विराम (।।) का प्रयोग होता है। जैसे–
  राम नाम सुन्दर करतारी। संशय विहग उड़ावनहारी।।
- अप्रत्यक्ष प्रश्न के अन्त में पूर्ण विराम लगाते हैं, जैसे–तुमने बताया नहीं कि तुम किसी कक्षा में हो।

अल्प विराम (,)–'अल्प विराम' का शाब्दिक अर्थ है थोड़ी देर के लिए रूकना या ठहरना। इस विराम चिह्न के द्वारा वाक्य के बीच कम समय के लिए रूकने का संकेत किया जाता है। हिन्दी में प्रमुख होने वाले विराम चिह्नों में इसका प्रयोग अधिक होता है। प्रायः निम्नलिखित स्थलों पर इसका प्रयोग किया जाता है–

- वाक्य में आए दो या दो से अधिक समानपदी शब्दों या पदबन्धों में जहाँ 'और' के प्रयोग की आवश्यकता होती है, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे–सुनिल, मोहित और राहुल हाँकी खेलने गये।
- जहाँ शब्दों की पुनरावृत्ति की जाय और भावतिरेक में उन पर विशेष बल दिया जाय, जैसे–
  हाँ, हाँ मैंने ही उसे बुलाया है।
  सुनो, सुनो वह गीत गुनगुना रही है।
- यदि वाक्य के बीच में–इसी से, इसीलिए, किन्तु, परतु, अतः, क्योंकि, जिसमें, तथापि आदि अव्ययों का प्रयोग होता हो, तो इनके पहले अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
  मैं आपका काम अवश्य करता, किन्तु मैं बाहर जा रहा हूँ।
- जिस वाक्य में यह, वह, तब, तो, अब आदि लुप्त हों, वहाँ अल्प विराम का प्रयोग होता है। जैसे–जब करना ही है, कर डालो (यहाँ 'तब' छिपा हुआ है)
- उद्धरण चिह्न से पहले, जैसे–
  नीलिमा ने कहा, ''मुझे अनुशासन में रहना अच्छा लगता है।''
- महीने की तारीख और सन् को अलग–अलग करने के लिए। जैसे–15 अगस्त, सन् 1947।
- सम्बोधन शब्द वाक्य के प्रारम्भ में हो तो उसके बाद और अन्त में हो तो उसके पहले, जैसे–बच्चों, ध्यान से सुनो।

छोटे–छोटे वाक्यों द्वारा–इसमें शिक्षक/प्रशिक्षु किसी विराम चिह्न को समझाने के लिए, उसकी बारीकियों को स्पष्ट करने के लिए छोटे–छोटे वाक्यों की सहायता ले सकते हैं। जैसे–प्रश्नवाचक एवं सम्बोधन या आश्चर्यसूचक चिह्न समझाने के लिए कुछ इस तरह के वाक्यों की सहायता ली जा सकती है–

- तुम्हारा क्या नाम है?
- क्या वह बैल तुम्हारा ही है?
- वह ऐसा क्यों कहता है कि हम वहाँ नहीं जायेंगे?
- हाय! तुम फेल हो गये।
- हे भगवान! उसने निरीह पक्षी को मार डाला।
- वाह! कितना सुन्दर उपवन है।
- ओह! इतनी बड़ी नाव तो मैंने देखी ही नहीं थी।

इन वाक्यों को श्यामपट्ट पर लिखने के बाद स्पष्ट करें कि प्रश्नार्थक वाक्यों में प्रश्न चिह्न (?) और आश्चर्य, घृणा, प्रसन्नता आदि शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों के अन्त में सम्बोधन या आश्चर्य चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

विशेष ध्यान रखने योग्य बातें–

- प्रश्न का चिह्न ऐसे वाक्यों में नहीं लगाया जाता जिनमें प्रश्न आज्ञा के रूप में हो, जैसे–कलकत्ता की राजधानी बताओ।

- जिन वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्दों का अर्थ सम्बन्धवाचक शब्दों जैसा होता है, उनमें प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जाता। जैसे–आपने क्या कहा, सो मैंने नहीं सुना।
  वह नहीं जानता कि मैं क्या चाहता हूँ।
- मनोविकार सूचित करने में यदि प्रश्नसूचक शब्द आ रहा हो तो ऐसे स्थल पर भी आश्चर्य चिह्न ही लगाया जाता है, जैसे–क्यों री!क्या तुझे सुनायी नहीं देता?
- वाक्य के अन्त में प्रश्न या आश्चर्य का चिह्न आने पर पूर्ण विराम नहीं लगाया जाता।

चर्चा द्वारा–शिक्षक/प्रशिक्षु भिन्न प्रकृति वाले विराम चिह्नों को प्रस्तुत कर प्रतिभागियों/विद्यार्थियों से उनके अभिप्राय एवं प्रयुक्त स्थल विशेष के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा करें, जैसे–यदि उसे निर्देशक चिह्न, उद्धरण अथवा अवतरण चिह्न, योजक चिह्न आदि को समझाना है तो वह श्यामपट्ट पर इन चिह्नों को अंकित कर चर्चा शुरू कर सकता है। चर्चाक्रम में ही उसे निम्नलिखित बातों को भी बताना चाहिए–

- निर्देशक चिह्न का प्रयोग किसी व्यक्ति के कथन को उद्घृत करने के लिए, संवादों या वार्तालापों में तथा किसी पद या वाक्यांश की व्याख्या करने के लिए किया जाता है। जैसे–गाँधी जी कहा करते थे–
  1.''सत्य ईश्वर का रूप है।
  2. ग्राहक–इस पुस्तक का मूल्य क्या है?
  छूकानदार–यह पचास रूपये का है।
  3. विद्यार्थी में दो गुण अवश्य होने चाहिए–आज्ञाकारिता, परिश्रमशीलता।
- उद्धरण चिह्न (इकहरा ' ') का प्रयोग किसी के उपनाम, रचना या पुस्तक के शीर्षक आदि के लिए किया जाता है।
- दोहरा उद्धरण चिह्न (" ") का प्रयोग किसी व्यक्ति के वचन को ज्यों का त्यों करते समय किया जाता है। जैसे–लाला लाजपत राय ने कहा, ''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है''

मूल्यांकन–

1. विराम चिह्नों का क्या महत्त्व है?
2. जहाँ शब्दों की पुनरावृत्ति की जाय और भावतिरेक में उन पर विशेष बल दिया जाय ऐसे स्थल पर कौन सा विराम चिह्न लगाया जाएगा?
3. नीचे लिखे वाक्यों में उचित विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए–

- आप कहाँ गये थे?
- अरे तुमने यह क्या किया?
- माता–पिता सो गए।
- तुम चलो मैं अभी आया।
- राम ने कहा, लक्ष्मण मेरा अनुज है।

समान ध्वनि–

उच्चारण में लगभग समानता का आभास रखने वाले शब्दों को समानभाषी अथवा 'समान ध्वनि' कहते हैं। इनके अर्थों में भिन्नता होती है। इन शब्दों की वर्तनी में थोड़ी भिन्नता होती है। प्रस्तुत उच्चारण करते समय यदि ध्यान न दिया गया तो भिन्नता का आभास नहीं हो पाता है। लगभग समान ध्वनियों वाले ऐसे किन्हीं शब्दों में स्वर का अन्तर होता है, किन्हीं में व्यंजन का। इस प्रकार के शब्दों के अभ्यास से वर्तनी की ठीक–ठीक समझ बच्चों में उत्पन्न होती है।

समान ध्वनि शब्द		**शब्दार्थ**	
अनल	अनिल	आग	हवा
दीन	दिन	गरीब	दिवस
अवलम्ब	अविलम्ब	सहारा	शीघ्र
वक्ष	वृक्ष	सीना	पेड़
आकर	आकार	खजाना	स्वरूप
कोष	कोश	समूह	खजाना
कुल	कूल	सम्पूर्ण / वंश	किनारा
खाद	खाद्य	उर्वरक	खाने योग्य
चूना	चुना	टपकना	चुनने के अर्थ में
छात्र	क्षात्र	विद्यार्थी	क्षत्रिय का
टिका	टीका	ठहरना	तिलक / व्याख्या
पास	पाश	करीब	जाल / बन्धक
पीड़ा	पीढ़ा	दर्द	बैठने का उपकरण
पूँछ	पूछ	दुम	पूछना
दिया	दीया	देने के अर्थ में	दीपक
नारी	नाड़ी	स्त्री	धमनी / नस
प्रमाण	प्रणाम	सबूत	नमस्कार
गृह	ग्रह	घर	सूर्य की परिक्रमा करने
भवन	भुवन	मकान	वाला पिण्ड
सुखी	सूखी	सुख से रहने वाला	संसार
कोड़ी	कौड़ी	बीस का समूह	सुखी हुई
सूर	शूर	सूर्य	पैसा
वात	बत	हवा	वीर / बचत
सास	साँस	पति / पत्नि का माँ	श्वास मात्रा / माप
परिणाम	परिमाण	नतीजा	

प्रशिक्षु को चाहिए की पहले वह स्वयं इस तालिका का ध्यानपूर्वक अध्ययन करे तत्पश्चात बच्चों से भी इसका पठन कराएँ जिससे बच्चे समान ध्वनि वाले शब्दों से सुपरिचित हो सकें तथा उनके अर्थ भेद को जान सकें।

बच्चे समान ध्वनि के बारे में अच्छी तरह जानकारी प्राप्त कर सके हैं या नहीं इसके लिए उनसे विभिन्न अभ्यास कार्य कराये जा सकते हैं।

मूल्यांकन–समान ध्वनि के बारे में बच्चे कितना जानकारी हासिल कर पाये इसके लिए उन्हें समूह में बाँटकर इस पर क्रियाकलाप कराना चाहिए। जैसे–

1. मिलान करें–

क–	कुल	कूल	**अ**–	लाख	उद्देश्य
ख–	निधन	निर्धन	**ब**–	जाल	निकट
ग–	लंक्ष	लक्ष्य	**स**–	बंश	किनारा
घ–	पाश	पास	**द**–	मृत्यु	गरीब

इसी तरह बच्चों से इसपर चर्चा करें। यदि कोई बच्चा नहीं कर पाता है तो उसे पुनः बोध कराते हुए प्रोत्साहित करें।

2. नीचे दिये गये शब्दों से सही शब्द चुनकर वाक्य के रिक्त स्थान की पूर्ति करें–

शुल्क/शुक्ल, ग्रह/गृह, परिमाण/परिणाम, कूल/कुल, कोश/कोष

(क) समय पर विद्यालय में.....जमा कर देना चाहिए।

(ख) आज उसके यहाँ.....प्रवेश है।

(ग) कल उसकी परीक्षा का.....घोषित होने वाला है।

(घ) वेतन के रूप में उसे.....पाँच हजार रूपये ही मिलते हैं।

(ड.) इस शब्द का अर्थ तुम्हें.....में मिल जायेगा।

3. पाठ्यपुस्तक में किसी पाठ को देकर उसमें आए हुए समान ध्वनियों वाले की सूची बनवाइए।

पाठ–6
उपसर्ग, प्रत्यय, सामासिक पदों की पहचान व प्रयोग

उद्देश्यः–

(1) उपसर्ग की समझ विकसित करना एवं उनकी पहचान में दक्ष बनाना।

(2) उपसर्गों का प्रयोग कर शब्द बनाने एवं उपसर्गयुक्त शब्द से प्रत्यय को अलग कर पाने की दक्षता विकसित करना।

(3) प्रत्यय की जानकारी देते हुए उसके पहचान एवं प्रयोग में दक्ष बनाना।

(4) समास की समझ स्पष्ट करना।

(5) विभिन्न समासों की पहचान कर सामासिक पद–निर्माण एवं विच्छेद करने की क्षमता विकसित करना।

उपसर्ग–उपसर्ग शब्द, दो शब्दों के मेल से बना है–उप और सर्ग। 'उप' का अर्थ है समीप तथा 'सर्ग' का अर्थ है सृष्टि करना। अर्थात् ऐसे शब्द या शब्दखण्ड जो किसी शब्द से पूर्व जुड़कर नये शब्दों की रचना कर देते हैं उन्हें उपसर्ग कहा जाता है। उपसर्ग के जुड़ जाने से शब्दों के अर्थ में अनायास ही परिवर्तन दिखायी देता है, जैसे–

प्र + हार = प्रहार, आ + हार = आहार,

सम् + हार = संहार, वि + हार = विहार

उपर्युक्त उदाहरणों को देखते के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि मूल शब्द का अर्थ उपसर्ग के जुड़ जाने के कारण बदल जाता है। उपर्युक्त 'हार' शब्द में 'प्र' जुड़ जाने पर 'प्रहार' बन जाता है तथा 'वि' जुड़ जाने पर 'विहार' बन जाता है। मूल रूप में एक शब्द होने के बाद भी उपसर्ग लगने से अर्थ में हुआ परिवर्तन स्पष्ट रूप में दिखाई देता है।

उपसर्ग शिक्षण करते समय बच्चों से उपसर्ग युक्त शब्दों के अधिकाधिक प्रयोग पर बल देना चाहिए। विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से उपसर्गों का शिक्षण किया जा सकता है, जैसे–

- किसी गद्य पाठ/पद्य पाठ को पढ़ाते समय उपसर्ग युक्त शब्दों की पहचान कराकर।
- उपसर्ग युक्त शब्दों से वाक्य रचना कराकर।
- उपसर्गों का प्रयोग के आधार पर अर्थों में अन्तर स्पष्ट कराकर।

इसके अन्तर्गत कार्ड आधारित गतिविधि के माध्यम से भी शिक्षण को रोचक एवं सरल बनाया जा सकता है, जैसे–

गतिविधि–तीन तरह का कार्ड बनाया जाय, जिसमें प्रथम प्रकार के कार्डों पर उपसर्ग लिखे हों। दूसरे प्रकार के कार्डों पर शब्द लिखे हों जिसमें उपसर्गों को जोड़ा जाना है तथा तीसरे प्रकार के कार्डों पर उपसर्ग युक्त बने शब्द लिखे गए हों। बच्चों को तीन समूह में बाँटकर यह गतिविधि/क्रियाकलाप आसानी से कराया जा सकता है।

उपसर्गों की अपनी कुछ खास विशेषता होती है जिससे शब्दों में जुड़ने पर अर्थ में परिवर्तन हो जाता है।

विषय–विस्तारः–उपसर्ग संस्कृत में 22 होते हैं, परन्तु हिन्दी भाषा में प्रायः 19 का विशेष रूप से प्रयोग दिखाई देता है। हिन्दी के भी अपने सामान्यतः 10 उपसर्ग हैं जिनसे शब्द रचना एवं अर्थ विशेषता को

प्रकट करने में मदद मिलती है। इसी प्रकार उर्दू एवं अरबी–फारसी के भी उपसर्ग हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होते हैं जो मुख्य रूप से 12 हैं। इनका अर्थ उदाहरण के साथ निम्नलिखित है–

संस्कृत के उपसर्ग–

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
प्र	अधिक, आगे	प्रहार, प्रबल, प्रयोग, प्रमाण, प्रगति, प्रयत्न
परा	विपरीत, नाश	पराजय, पराभव, पराक्रम, परामर्श
अप	बुरा, अनुचित, हीन	अपशब्द, अपमान, अपकार, अपशकुन
सम्	पूर्णता, संयोग	संग्रह, सन्तोष, संरक्षण, सम्मुख, सम्मेलन
अनु	पीछे, समान	अनुकरण, अनुभव, अनुमान, अनुशासन
अव	बुरा, हीन	अवसर, अवकाश, अवनति, अवशेष, अवमानना
निस्/निर्	नहीं, रहित, बाहर	निर्भय, निर्बल, निर्जीव, निरपराध, निश्छल
दुस्/दुर्	कठिन, बुरा	दुर्दशा, दुर्लभ, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुस्साहस
वि	विशेष, भिन्नता	विनाश, विज्ञान, वियोग, विशेष, विमुख, विनय
आड्. (आ)	तक, सहित	आगमन, आजीवन, आरक्षण, आमरण
नि	भीतर, नीचे, निषेध	निवास, नियम, निदर्शन, निकृष्ट, निवारण, निबन्ध
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ, निकटता	अधिकार, अध्यक्ष, अधिवक्ता
अति	बहुत अधिक	अत्यधिक, अतिशय, अतिरिक्त, अत्याचार
सु	अच्छा, सुन्दर	सुकर्म, सुयश, सुलभ, सुगम, स्वागत, सुभाषित
उद्/उत्	ऊपर, श्रेष्ठ	उन्नति, उत्थान, उत्कर्ष, उत्तम, उच्चारण
प्रति	विरूद्ध,सामने, बार–बार	प्रतिकार, प्रतिकूल, प्रत्यक्ष, प्रतिक्षण, प्रत्येक
परि	चारो ओर	परिक्रमा, परिचय, परिपूर्ण, परीक्षा, परिवार
उप	निकटता, सहायक, गौड़	उपकार, उपचार, उपग्रह, उपवन, उपमान
अभि	चारों ओर	अभिलाषा, अभिमान, अभियान, अभ्यास, अभिशाप

हिन्दी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ–अन	निषेध, अभाव	अमोल, अथाह, अनजान, अनमोल, अनपढ़
अध	आधा	अधजला, अधमरा, अधपका, अधजल
उन	एक कम	उन्नीस, उनतीस, उनचास, उनसठ
औ (अव)	हीनता, निषेध	औगुन, औघट, औढर
दु	बुरा, अभाव	दुकाल, दुबला
नि	निषेध, अभाव	निकम्मा, निडर, निहत्था, निधड़क
बिन	निषेध	बिनदेखा, बिनखाया, बिनजाना
भर	ठीक, पूरा	भरदिन, भरपेट, भरसक, भरपूर
कु–क	बुराई	कुपात्र, कुढंग, कपूत, कुखेत
सु–स	सुन्दर	सुपात्र, सुजान, सगोत्र, सपूत

इसके अतिरिक्त अरबी–फारसी के भी कुछ उपसर्ग हैं, जो हिन्दी में प्रचलित हैं। ये हैं–अल (अलबत्ता), कम (कमजोर), खुश (खुशहाल), गैर (गैरहाजिर), दर (दरकार), ना (नापसंद), बद (बदनाम), बर (बरदाश्त), बिल (बिलकुल), बे (बेईमान), ला (लाचार), हम (हमउम्र)।

गतिविधि–कक्षा को नौ समूहों में बाँट दें। पाठ्यपुस्तक के एक पाठ पर समूह–1, 2 और 3, दूसरे पाठ पर समूह संख्या–4, 5 और 6 तथा तीसरे पाठ पर समूह संख्या–7, 8 और 9 को उपसर्ग ढूढ़ने का कार्य दें। समूह में प्रशिक्षु/बच्चे बातचीत कर इन उपसर्गों के प्रयोग से बने शब्दों को चिह्नित करेंगे और अपनी पुस्तिका पर लिखेंगे। इनके कार्य निम्नवत् होंगे–

समूह–1, 4 और 7 संस्कृत (तत्सम) उपसर्ग।

समूह–2, 5 और 8 हिन्दी उपसर्ग।

समूह–3, 6 और 9 अरबी–फारसी आदि उपसर्ग।

कार्य पूर्ण हो जाने पर एक समूह के कार्यों का मूल्यांकन दूसरा समूह करेगा, दूसरे का तीसरा एवं अन्तिम का पहला समूह। प्रशिक्षक का कार्य निर्देश एवं निरीक्षण करना होगा।

अन्त में अशुद्धियों का निवारण प्रशिक्षक द्वारा प्रतिभागियों के सहयोग से किया जायेगा।

मूल्यांकन–

1. उपसर्ग से आप क्या समझते हैं?
2. नीचे लिखे उपसर्गों का उचित शब्दों से मिलान करके नया शब्द बनाइए–
   उपसर्ग–बे, कम, गैर, निस्, उत्, अति, अभि, परि, अन, औ, नि, सम्
   मूलशब्द–कंठा, शय, कायदा, सरकारी, मग्न, जोर, मान, संदेह, गुण, अभिज्ञ, जन, कल्प
   नये शब्द.....
   .....
3. निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग कर दो–दो शब्द बनाइए–
   उप .... प्र ....
   उन .... दुर् ....
   कम ....
4. कभी–कभी एक ही शब्द में एक से अधिक उपसर्गों का एक साथ प्रयोग होता है,
   जैसे–व्याकरण = वि + आ + करण
   चार और ऐसे शब्दों को लिखिए, जिनमें एक से अधिक उपसर्गों का प्रयोग हुआ हो।
   ....
   ....

प्रत्यय

हम अपने व्यावहारिक जीवन में अपने भावों और विचारों को एक दूसरे तक सुगमता के साथ पहुँचाने के लिए अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते हैं, जैसे–दूधवाला, रिक्शावाला, चालाक, तैराक, बसेरा, लूटेरा, खिलौना, बिछौना, गाना आदि। उक्त सभी शब्द किसी न किसी प्रत्यय के जुड़ने से बने हैं। शब्दों में प्रत्यय जुड़कर अनेक प्रकार के नए अर्थों की सृष्टि करते हैं। इससे हमारे व्यवहार में सहजता आ जाती है।

बच्चों के शुरूआती शिक्षण के क्रम में यदि प्रत्यय की जानकारी हो जाती है तो बच्चे एक शब्द से अनेक शब्द स्वयं गढ़ने में समर्थ हो जाते हैं तथा आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग अपने जीवन में करना प्रारम्भ कर देते हैं। यद्यपि बिना जाने भी बच्चे प्रत्यय युक्त शब्दों को बोलते हैं, परन्तु प्रत्यय के ज्ञान के अभाव में उनका अभिव्यक्ति पक्ष विस्तृत नहीं हो पाता है इसलिए आवश्यक है कि प्रत्यय की जानकारी बच्चों को दी जाय जिससे वे नए–नए शब्दों को बना सकें तथा अपने आत्मविश्वास को बढ़ा सकें।

किसी शब्द के अन्त में लगकर उस शब्द के अर्थ को बदल देने वाले या नया अर्थ देने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं, जैसे–

सज + आवट = सजावट।

मिल +आवट = मिलावट।

बन + वाई = बनवाई।

उपर्युक्त उदाहरणों को देखने से ज्ञात होता है कि एक प्रत्यय भिन्न–भिन्न शब्दों में जुड़कर नए–नए अर्थ को व्यक्त करता है।

प्रत्यय मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है–(1) कृत प्रत्यय (2) तद्धित प्रत्यय।

कृत प्रत्ययः–कृत प्रत्यय क्रियावाचक धातु रूपों में लगकर संज्ञा, विशेषण एवं क्रिया विशेष के बोधक होते हैं, जैसे–ऊपर हम लोगों ने देखा कि सजाना एक प्रकार की क्रिया हैः इसमें 'आवट' प्रत्यय जुड़कर 'सजावट' शब्द बना तथा एक विशेष अर्थ का बोध कराया।

कृत प्रत्यय से बने शब्द कृदन्त शब्द कहलाते हैं। कृत प्रत्ययों के पाँच भेद प्रमुख रूप से पाये जाते हैं–

(1) कर्तृवाचक।
(2) कर्मवाचक।
(3) करणवाचक।
(4) भाववाचक।
(5) विशेषण वाचक।

गतिविधि–निम्नलिखित चार्ट दिखाते हुए कृत प्रत्यय के भेदों और उनके प्रयोग को स्पष्ट करें।

(1) कर्तृवाचक कृत प्रत्यय

शब्द (धातु)	**प्रत्यय**	**निष्पन्न शब्द**
लिख, चाल	अक	लेखक, चालक
तैर, चाल	आक	तैराक, चालाक
लूट, बस	एरा	लूटेरा, बसेरा
भूल, घूम	अक्कड़	भुलक्कड़, घुमक्कड़

(2) कर्मवाचक कृत प्रत्यय

शब्द (धातु)	**प्रत्यय**	**निष्पन्न शब्द**
बिछ, खेल	औना	बिछौना, खिलौना
लिख, गा	ना	लिखना, गाना

(3) करणवाचक कृत प्रत्यय

शब्द (धातु)	प्रत्यय	निष्पन्न शब्द
भटक, भूल	आ	भटका, भूला
झाड़, बेल	न	झाड़न, बेलन
चट, कतर	नी	कतरनी, चटनी

(4) भाववाचक कृत प्रत्यय

शब्द (धातु)	प्रत्यय	निष्पन्न शब्द
रट, गढ़	अन्त	रटन्त, गढन्त
लिख, चल, पढ़	आ	लिखा, चला, पढ़ा
कम, लिख, चढ़	आई	कमाई, लिखाई, चढ़ाई
थक, मिल, बन	आवट	थकावट, मिलावट, बनावट
बुला, पहन, चल	आवा	बुलावा, पहनावा, चलावा

(5) विशेषणवाचक कृत प्रत्यय

शब्द (धातु)	प्रत्यय	निष्पन्न शब्द
गोप, पठ, करण	अनीय	गोपनीय, पठनीय, करणीय
दया, कृपा	आलु	दयालु, कृपालु
लिख, गा	वाला	लिखने वाला, गाने वाला
दढ़, अड़	इयल	दढ़ियल, अड़ियल

इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि कृत प्रत्यय क्रियावाचक धातुमूलक शब्दों से ही जुड़ते हैं तथा भिन्न–भिन्न अर्थ को द्योतित करते हैं।

मूल्यांकन–

(1) प्रत्यय किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए **(2)** कृत प्रत्यय के भेदों के नाम लिखिए।

तद्धित प्रत्यय–जो शब्द/शब्दांश (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) के अन्त में जुड़कर नए शब्दों की रचना करते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहा जाता है। तद्धित प्रत्यय आठ प्रकार के होते हैं–

(1) कर्तृवाचक संज्ञाए बनाने वाले तद्धित प्रत्यय।
(2) भाववाचक संज्ञाए बनाने वाले तद्धित प्रत्यय।
(3) सम्बन्धवाचक संज्ञाए बनाने वाले तद्धित प्रत्यय।
(4) विशेषण बनाने वाले तद्धित प्रत्यय।
(5) लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय।
(6) स्थानसूचक तद्धित प्रत्यय।
(7) स्त्रीलिंग बनाने वाले तद्धित प्रत्यय।
(8) बहुवचन बनाने वाले तद्धित प्रत्यय।

गतिविधि–तद्धित प्रत्यय को बताने के बाद निम्नलिखित चार्ट द्वारा इसके भेदों को स्पष्ट करें। संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण वाची शब्दों के अन्त में तद्धित प्रत्यय जोड़ा जाता है इनका विवरण निम्नलिखित है–

(1) कर्तव्यवाचक संज्ञाएँ बनाने वाले तद्धित प्रत्यय–

मूल शब्द	प्रत्यय	निर्मित शब्द

जुआ, पूजा, भीख	आरी	जुआरी, पुजारी, भिखारी
कहानी, कथा, पत्र	कार	कहानीकार, कथाकार, पत्रकार
लकड़ी, पान, रिक्शा	वाला	लकड़ीवाला, पानवाला, रिक्सावाला

(2) भाववाचक संज्ञाएँ बनाने वाले तद्धित प्रत्यय–

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
सच्चा, मीठा, अच्छा	आई	सच्चाई, मिठाई, अच्छाई
मानव, प्रभु, लघु	ता	मानवता, प्रभुता, लघुता
देव, मनुष्य, ईश्वर	त्व	देवत्व, मनुष्यत्व, ईश्वरत्व
मोटा, बूढ़ा	आपा	मोटापा, बुढ़ापा

(3) सम्बन्धवाचक संज्ञाएँ बनाने वाले तद्धित प्रत्यय–

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
ससुर,	आल	ससुराल
नाना	हाल	ननिहाल
मामा	एरा	ममेरा

(4) विशेषण बनाने वाले तद्धित प्रत्यय–

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
धर्म, नीति, लोक	इक	धार्मिक, नैतिक, लौकिक
राष्ट्र, प्रान्त, भारत	ईय	राष्ट्रीय, प्रान्तीय, भारतीय
गुण, धन, बल	वान	गुणवान, धनवान, बलवान

(5) लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय–

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
रस्सा, घंटा, पहाड़	ई	रस्सी, घंटी, पहाड़ी
कोठा, बाँस, छत	री	कोठरी, बाँसुरी, छतरी

(6) स्थानसूचक तद्धित प्रत्यय–

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
पंजाब, बंगाल, बिहार	ई	पंजाबी, बंगाली, बिहारी
भागलपुर, कोलकाता	इया	भागलपुरिया, कोलकतिया

(7) स्त्रीलिंग बनाने वाले तद्धित प्रत्यय–

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
नाना, बेटा, मामा	ई	नानी, बेटी, मामी
पण्डित, सेठ, नौकर	आनी	पण्डितानी, सेठानी, नौकरानी
शेर, मोर, हाथी	नी	शेरनी, मोरनी, हथिनी

(8) बहुवचन बनाने वाले तद्धित प्रत्यय–

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
मेज, छत, सड़क	एँ	मेजें, छतें, सड़कें
चीटी, चिड़िया, कुर्सी	इयाँ	चीटियाँ, चिड़ियाँ, कुर्सियाँ

बेटा, चीता, रसगुल्ला ए बेटे, चीते, रसगुल्ले

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि तद्धित प्रत्यय भिन्न–भिन्न अर्थों को अभिव्यक्त करने हेतु संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों के साथ जुड़कर नए शब्द बनाते हैं।

मूल्यांकन–

1. कृत प्रत्यय का प्रयोग कर कम से कम पाँच शब्द बनाइए।

2. निम्नलिखित शब्दों से संज्ञा/विशेषण एवं प्रत्यय अलग–अलग कर लिखिए–

(1) बुढ़ौती = ...

(2) चाँदनी = ...

(3) बलिष्ठ = ...

(4) मेधावी = ...

(5) घरेलू = ...

3. प्रत्यय और उपसर्ग में अन्तर बताइए।

4. दिये गये प्रत्यय का प्रयोग करते हुए दो–दो शब्द बनाइए–

(1) आई ....

(2) गर ....

(3) दार ....

(4) एरा ....

(5) आलू ....

5. उचित शब्दों और प्रत्ययों का मिलान कीजिए–

(क) शत्रु	तत्व	शत्रुता
(ख) पुरुष	ता	गौरव
(ग) स्मृ	अ	पुरुषत्व
(घ) प्रांत	ईय	स्मरणीय
(ड.) गुरु	अनीय	प्रांतीय

समासिक पद

'समास' और 'इक' का प्रयोग होकर 'सामासिक' शब्द बना है। जिन दो पदों में समास होता है, वे 'सामासिक पद' या समस्त पद कहलाते हैं। इसके लिए 'समास' को समझना आवश्यक है।

प्रत्यय और उपसर्ग की ही भाँति समास भी शब्द रचना का महत्त्वपूर्ण साधन है। समास का अर्थ है–संक्षेप। दो या तीन शब्दों को मिलाकर एक करना ही समास है, उदाहरणार्थ–विद्यालय, माता–पिता, रोगपीड़ित, यथाशक्ति आदि सामासिक पद हैं। 'रोग से पीड़ित' शब्द समास होने के बाद संक्षिप्त होकर 'रोगपीड़ित' बन जाता है, किन्तु इसके अर्थ में कोई भी परिवर्तन नहीं होता। इस प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द को समास कहते हैं। समास होने के बाद परस्पर मिले हुए पद सामासिक पद या समस्त पद कहलाते हैं। सामासिक पद को अलग–अलग करने को समास विग्रह कहा जाता हैः उदाहरणार्थ–'मेघनाद' का विग्रह हुआ–मेघ के समान नाद है, जिसका'।

सामासिक पद में बीच में आने वाली विभक्ति, परसर्ग, योजक चिह्नों का लोप हो जाता है। यदि दोनों पद तत्सम होते हैं तो सन्धि की स्थिति बनने पर उनमें सन्धि हो जाती है, जैसे–'विद्या' और 'आलय' में सन्धि होकर 'विद्यालय' बन गया।

समास के भेद–

समास के निम्नलिखित छह भेद हैं–

1. अव्ययीभाव 2. तत्पुरुष 3. कर्मधारय 4. द्विगु 5. द्वन्द्व 6. बहुब्रीहि

(कुछ लोग कर्मधारय और द्विगु को तत्पुरुष के अन्तर्गत ही मानते हैं।)

1. **अव्ययीभाव समास**–जिस समास का प्रथम पद प्रधान और अव्यय होता है, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। इसमें पहला पद अव्यय और दूसरा पद प्रायः जातिवाचक संज्ञा होता है। सामासिक पद अव्यय हो जाता है, जैसे–

समस्त पद	विग्रह
यथासंभव	जैसा संभव हो या संभावना के अनुसार
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन, दिन–दिन
भरपेट	पेट भरकर
रातोंरात	रात ही रात में
बेशक	शक के बिना
आमरण	मृत्युपर्यन्त, मृत्यु तक

2. तत्पुरुष समास–जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है वह तत्पुरुष समास कहलाता है। इसमें कर्म कारक से लेकर अधिकरण कारक तक की विभक्तियों का लोप होता है। जिस तत्पुरुष में जिस विभक्ति का लोप होता है उसे उसी कारक से संबंधित तत्पुरुष कहा जाता है। इसके छह भेद हैं–

(अ) कर्म तत्पुरुष–इसमें कर्मकारक की विभक्ति 'को' का लोप होता है, जैसे–

गुणातीत–गुण को पार किया हुआ।
शरणागत–शरण को आगत।
चिड़ीमार–चिड़ियों को मारने वाला।
माखनचोर–माखन को चुराने वाला।
गगनचुम्बी–गगन को चूमने वाला।

(ब) करण तत्पुरुष–इसमें करण कारक की विभक्ति 'से' या 'के द्वारा' का लोप होता है, जैसे–

शोकाकुल–शोक से आकुल।
भुखमरा–भूख से मरा हुआ।
तुलसीकृत–तुलसी द्वारा कृत।
मनचाहा–मन से चाहा।
हस्तलिखित–हाथ से लिखा हुआ।

(स) सम्प्रदान तत्पुरुष–इसमें सम्प्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप होता हैः जैसे–

सत्याग्रह = सत्य के लिए आग्रह
रसोईघर = रसोई के लिए घर
गुरुदक्षिणा = गुरु के लिए दक्षिणा

हवन सामग्री = हवन के लिए सामग्री
युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि
अपादान तत्पुरुष–इसमें अपादान कारक विभक्ति 'से' का लोप होता है–
धर्मभ्रष्ट = धर्म से भ्रष्ट
रोगमुक्त = रोग से मुक्त
जन्मान्ध = जन्म से अंधा
भयभीत = भय से भीत
ऋणमुक्त = ऋण से मुक्त
सम्बन्ध तत्पुरुष–इसमें सम्बन्ध कारक का चिह्न का, की, के का लोप होता है, जैसे–
गंगातट = गंगा का तट
राजपुत्र = राजा का पुत्र
पवनपुत्र = पवन का पुत्र
भारतवासी = भारत के वासी
लोकतंत्र = लोक का तंत्र
अधिकरण तत्पुरुष–इसमें 'में' या 'पर' का लोप होता है, जैसे–
आपबीती = अपने पर बीती
दानवीर = दान में वीर
शरणागत = शरण में आगत
गृहप्रवेश = गृह में प्रवेश
कलाप्रवीण = कला में प्रवीण

3. कर्मधारय समास–इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है, लेकिन पहला पद विशेषण और दूसरा पद संज्ञा या सर्वनाव होता है, जैसे–नीलकमल = नीला कमल। इसमें नीला विशेषण और कमल संज्ञा है। अन्य उदाहरण–

पीताम्बर = पीला अम्बर
नीलगगन = नीला गगन
चन्द्रमुख = चन्द्रमा के समान मुख
महापुरुष = महान है जो पुरुष
लौहपुरुष = लोहे जैसा शक्तिशाली पुरुष
इस समास में कभी–कभी विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) पहले भी आ जाता है, जैसे–
घनश्याम = घन के समान श्याम।
चरण कमल = कमल के समान चरण।
देहलता = लता के समान शरीर।
मुखचन्द्र = मुख रूपी चन्द्र।

4. द्विगु समास–जिस समास में पहला पद संख्यावाची विशेषण हो और दूसरा पद संज्ञा, वह द्विगु समास कहलाता है। यह दो प्रकार का होता है–

1. जिसमें समुदाय या समाहार का बोध होता है।
2. जिसमें उत्तरपद प्रधान होता है।

उदाहरण–

1. चौराहा = चार राहों का समूह।
   तिरंगा = तीन रंगों का समूह।
   सप्ताह = सात दिनों का समूह।
   त्रिभुवन = तीन भुवनों का समाहार।
   अष्टाध्यायी = आठ अध्यायों का समूह।
2. दोपहर = दूसरा प्रहर।
   पंच प्रणाम = पाँच प्रमाण (नाम)।

5. द्वन्द्व समास–जिस समास में दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करने पर 'और', 'या' 'अथवा' लगता हो, वह द्वन्द्व समास कहलाता है, यथा–

माता–पिता = माता और पिता।
सुख–दुःख = सुख और दुःख।
राम–लक्ष्मण = राम और लक्ष्मण।
राग–द्वेष = राग या द्वेष।
भला–बुरा = भला या बुरा।
दाल–भात = दाल और भात।

6. बहुब्रीहि समास–जिस समास में दोनों पद प्रधान हों, लेकिन दोनों पद अपने साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट करें, वह बहुब्रीहि समास कहलाता है, यथा–

नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका (शिव)
लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)
षडानन = षट है आनन जिसका (कार्तिकेय)
चन्द्रशेखर = चन्द्रमा है शिखर पर जिसके (शिव)
पंकज = पंक (कीचड़) में जन्म

गतिविधि–01

1. सामासिक पदों की पहचान करने के लिए पहले प्रशिक्षुओं के समक्ष अनेक सामासिक पदो ंके उदाहरण प्रस्तुत किये जाने चाहिए। उदाहरणार्थ–

सामासिक पद		**समास विग्रह**
धनवार्ता	–	धन की वार्ता
राजपुत्र	–	राजा का पुत्र
चोरभय	–	चोर से भय
घनश्याम	–	घन के समान श्याम

- इन सामासिक पदों एवं इनके विग्रह पर बात करें और इस ओर ध्यान दिलाएं कि 'धन की वार्ता' में 'की' विभक्ति चिह्न का लोप कर 'धनवार्ता' सामासिक पद बना है। इसी प्रकार राजा का पुत्र

में 'का', चोर से भय में 'से' एवं 'घन (बादल) के समान श्याम' में 'के समान' पद का लोप हुआ है।

- प्राक्षिुओं/विद्यार्थियों के समक्ष उपर्युक्त उदाहरणों को देकर यह स्पष्ट करना है कि दोनों पद मिलकर संक्षिप्त हो गये हैं, किन्तु संक्षिप्त होने पर भी इनके अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।
- 'धन की वार्ता' में समास कर बनने वाला पद–धनवार्ता 'समस्त पद' या 'सामासिक पद' कहलाता है।

गतिविधि–02

समास को समझाने के लिए कुछ वाक्य उदाहरण स्वरूप में रखे जायँ, जैसे–

- माता और पिता जा रहे हैं। माता–पिता जा रहे हैं।
- गंगा का जल निर्मल है। गंगाजल निर्मल है।

यहाँ माता और पिता, माता–पिता एवं गंगा का जल, गंगाजल हो गया है। इनमें पहले वाक्य में 'और' एवं दूसरे वाक्य में 'का' शब्दों का लोप हो गया है।

उपर्युक्त उदाहरणों के बाद उनसे यह निष्कर्ष निकलवायें कि दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द को समास कहते हैं।

मूल्यांकन–

1. समास किसे कहते हैं?
2. सामासिक पद से आप क्या समझते हैं, किन्हीं दो उदाहरणों से स्पष्ट कीजिए।

गतिविधि–03

प्रशिक्षुओं के समक्ष निम्नलिखित उदाहरण रखें और प्रश्नों के द्वारा ध्यान आकृष्ट करें कि सभी विग्रह भिन्न–भिन्न हैं–

चौराहा = चार राहों का समूह
माया–राधा = माया और राधा
नीलकमल = नीले रंग का कमल
राष्ट्रपति = राष्ट्र का पति
यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार

उपर्युक्त उदाहरणों को देखने से स्पष्ट है कि पाँचों सामासिक पदों के विग्रह अलग–अलग हैं। इससे यह पता चलता है कि समास कई तरह के होते हैं।

- समास के प्रमुख छह भेदों के नाम (अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, बहुब्रीहि) एवं उनके उदाहरण दें।
- सर्वप्रथम अव्ययीभाव समास को स्पष्ट करें। इसके लिए कुछ कार्ड जिस पर अव्यय लिखे हों, जैसे– यथा आ प्रति हर

एवं कुछ शब्द लिखे हुए कार्ड प्रशिक्षुओं को देकर जोड़ने के लिए कहें–

शक्ति जन्म एक रोज

बने हुए सामासिक पद यथाशक्ति, आजन्म, प्रतिएक (प्रत्येक), हररोज पर बात करें एवं इनका विग्रह कराएँ। तत्पश्चात अर्थ स्पष्ट करें और तब अव्ययीभाव समास की परिभाषा तक ले आयें।

मूल्यांकन–

- समास के भेदों के नाम लिखिए।
- अव्ययीभाव समास किसे कहते हैं, दो उदाहरण लिखिए।

गतिविधि–04

समास के दूसरे भेद तत्पुरुष समास के बारे में बताने के लिए निम्नलिखित शब्द प्रशिक्षुओं के समक्ष रखे जायेंगे–

सिद्धिप्राप्त	–	सिद्धि को प्राप्त
शोकाकुल	–	शोक से आकुल
धर्मशाला	–	धर्म के लिए शाला
देशनिकाला	–	देश से निकाला
जीवनसाथी	–	जीवन का साथी
कलाप्रवीण	–	कला में प्रवीण

उत्तरपद प्रधान समास को तत्पुरुष समास कहते हैं। रेखांकित विभक्ति पर बात करते हुए उनमें परस्पर अर्थ के अन्तर पर बात करें। भिन्न विभक्ति चिह्नों पर ध्यान आकृष्ट करते हुए छहों कारकों के चिह्नों के अनुसार तत्पुरुष समास का वर्गीकरण कराएँ। स्पष्ट करें कि छहों कारकों के आधार पर इस समास के छह भेद निश्चित किये गये हैं। कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध एवं अधिकरण।
समास के छहों प्रभेदों के अन्य उदाहरण छाँटने के लिए कहें।

मूल्यांकन–

- तृतीया तत्पुरुष का कोई दो उदाहरण दीजिए।
- 'गंगाजल' में कौन सा तत्पुरुष समास है?
- 'अकालपीड़ित' का पद विग्रह कीजिए तथा समास बताइए।
- निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह कीजिए तथा उनमें कौन सा समास प्रयुक्त है उसका नाम लिखिए। 'क' में समास तथा 'ख' में कारक चिह्न दिये गये हैं, पर ये निश्चित क्रम में नहीं हैं, सही मिलान कीजिए–

(क)	**(ख)**
प्रेममग्न	से
गंगाजल	का
ऋणमुक्त	में
धर्मविमुख	से
सभाभवन	के लिए
अकालपीड़ित	से (द्वारा)

गतिविधि–05

- कर्मधारय समास को समझाने के लिए निम्नलिखित चार्ट दिखाएँ–

सामासिक पद	**विग्रह**
नीलकंठ	नीला है जो कंठ

मृगनयन	मृग के समान नयन
महाजन	महान है जो जन
कालापानी	काला है जो पानी

- प्रशिक्षुओं से बात करें कि इन पदों में परस्पर विशेषण और विशेष्य सम्बन्ध हैं। प्रथम पद, द्वितीय पद की विशेषता बता रहा है। द्वितीय पद की प्रधानता है अतः यह कर्मधारय समास है।
- मृगनयन – मृग के समान नयन
  चन्द्रमुख – चन्द्रमा के समान मुख
  इन दोनों में उपमान, उपमेय का संबंध दिखाई दे रहा है, अतः कर्मधारय में उपमान–उपमेय का भी संबंध होता है।

मूल्यांकन–

- कर्मधारय समास के दो उदाहरण लिखिए एवं विग्रह भी दर्शाइए।

गतिविधि–

दाल–भात = दाल और भात
रात–दिन = रात और दिन
राम–लक्ष्मण = राम और लक्ष्मण

उपर्युक्त उदाहरणों को दिखाते हुए बात करें। प्रशिक्षुओं/छात्रों का ध्यान दो पदों के बीच के योजक शब्द की ओर लाएँ। स्पष्ट करें कि इनमें दोनों पद 'और' से जुड़े होने पर भी अपना अलग अस्तित्व रखते हैं। द्वन्द्व समास में दोनों ही पद समान रूप से प्रधान होते हैं।

- द्वन्द्व समास के अन्य उदाहरण पाठ्यपुस्तक आदि से ढूँढ़वाएँ और उन पर बात करें।

गतिविधि–06

द्विगु समास को समझाने के लिए पहले कुछ उदाहरण रखें–
त्रिलोक – तीन लोक
नवरात्र – नवरात्रियों का समूह
त्रिभुवन – तीन भुवन
प्रशिक्षुओं का ध्यान पद के प्रथम संख्यावाचक शब्द पर आकृष्ट करें।

- स्पष्ट करें कि इस समास में पहला पद संख्यावाची विशेषण होता है। यह एक प्रकार से कर्मधारय ही है। इस समास में पूरा पद किसी समूह का बोध कराता है।

मूल्यांकन–निम्नलिखित पदों में पद–विग्रह कीजिए–

अष्टकोण, सप्तसिन्धु, तिराहा

गतिविधि–07

- वीणापाणि – वीणा है पाणि में जिसके अर्थात् सरस्वती
- दशानन – दश हैं आनन जिसके अर्थात् रावण
- लम्बोदर – लम्बा है उदर जिसका अर्थात् गणेश
  उपर्युक्त उदाहरणों में स्पष्ट रूप दिखाई दे रहा है कि सामासिक पद किसी अन्य की बात कर

रहे हैं। यहाँ न तो 'वीणा' और न ही 'पाणि' महत्त्वपूर्ण है। यहाँ तो सरस्वती की बात हो रही है। चर्चा के पश्चात् यह उभारें कि जिस पद में प्रथम पद और उत्तर पद को छोड़कर किसी अन्य की प्रधानता हो, उसे 'बहुब्रीहि समास' कहते हैं।

मूल्यांकन–

1. अल्पबुद्धि, त्रिलोचन, नीलकंठ का पदविग्रह कीजिए।
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–
   (क) समास किसे कहते हैं?
   (ख) समास के भेदों का उल्लेख करते हुए दो–दो उदाहरण दीजिए।
3. सामासिक पदों में प्रयुक्त समास का नामोल्लेख कीजिए–
   मुँहतोड़, आत्मनिर्भर, महाकाव्य, नीलकमल, रात–दिन, चतुरानन, धनहीन, भरपेट
4. कर्मधारय समास की परिभाषा दीजिए।
5. निम्नलिखित सामासिक पदों को उनमें प्रयुक्त समासों से मिलान कीजिए–

भयभीत	द्वन्द्व
गगनचुम्बी	तत्पुरुष
यथाविधि	कर्मधारय
श्रेयप्रेय	अव्ययीभाव
पंचवटी	बहुब्रीहि
चतुर्भुज	द्विगु

6. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह करके समास के भेद का उल्लेख कीजिए–

सामासिक पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
जेबकतरा	.....	.....
घनश्याम	.....	.....
राजपुत्र	.....	.....
हिमालय	.....	.....
अष्टकोण	.....	.....
कमलनयन	.....	.....
अभावग्रस्त	.....	.....

पाठ–7

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, वचन, लिंग तथा काल को पहचानना

उद्देश्य–

1. संज्ञा शब्दों की पहचान एवं उनके प्रयोग की दक्षता विकसित करना।
2. वाक्यों में सर्वनाम शब्दों के (वचन एवं लिंग के अनुसार) प्रयोग का अभ्यास कराना।
3. क्रिया की समझ विकसित करते हुए उनके प्रयोग में दक्ष बनाना।
4. विशेषण की पहचान एवं प्रयोग करने में निपुण बनाना।
5. वचन के प्रति समझ बनाते हुए उनकी पहचान एवं प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना।
6. लिंग के बारे में समझ बनाना एवं उनकी पहचान करते हुए वाक्य की रचना कर पाने का अभ्यास कराना।
7. काल की पहचान एवं बोध कराना।
8. हिन्दी भाषा के व्याकरणिक पक्ष को मजबूत करना।

भाषा का अर्जन एक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रक्रिया है। बच्चा प्रारम्भ से ही माता–पिता, परिवार एवं आसपास के सामाजिक परिवेश से प्रभावित होता है, उनके व्यवहार को निरन्तर देखता रहता है और अपने सामर्थ्य के अनुसार समझने का भी प्रयास करता है। अपने प्रारम्भिक दिनों में सुने हुए शब्दों में भले ही वह बहुत अन्तर न कर पाये परन्तु वह ज्यों–ज्यों बड़ा होता है, अर्थ एवं संदर्भ के आधार पर अन्तर की समझ अपने में विकसित करने लगता है। बच्चा प्रारम्भिक दिनों में सर्वाधिक संज्ञाओं को सुनता है तथा उसका अर्थ समझने का प्रयास करता है जैसे मम्मी–पापा, दीदी, भैया, घर, पानी आदि। वह विभिन्न वस्तुओं, व्यक्तियों का नाम अनायास ही जान जाता है। व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों, भावों का नाम ही तो संज्ञा है। इसीलिए संज्ञा की परिभाषा करते हुए विद्वानों ने माना है कि–

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी और भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। इस प्रकार संज्ञा का अर्थ नाम होता है। संसार में जिसका भी अस्तित्व है उसका कुछ न कुछ नाम व्यावहारिक सुगमता के लिए गढ़ लेते हैं तथा आवश्यकतानुसार उन–उन नामों से उन पदार्थों, वस्तुओं, अवस्थाओं, भावों आदि का बोध करते हैं।

अवबोध की सुगमता को दृष्टि में रखकर पदार्थों और भावों के नामों (संज्ञाओं) को विभिन्न वर्गों/समूहों में बाँटकर बोध करते हैं। इनका वर्गीकरण निम्नलिखित है–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा **2**. जातिवाचक संज्ञा **3**. भाववाचक संज्ञा

उपर्युक्त वर्गीकरण संज्ञाओं के स्वरूप के आधार पर किया गया है। इनका विशेष विवरण निम्नलिखित है–

व्यक्तिवाचक संज्ञा–जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी अथवा स्थान विशेष का बोध होता है उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा के अन्तर्गत विभिन्न नाम आ सकते हैं, जैसे–व्यक्ति का नाम, पुस्तकों के नाम, समाचार–पत्रों के नाम, देशों के नाम, दिशाओं के नाम, समुद्र, नदी, पर्वत का नाम, नगर, चौराहे, सड़कों के नाम, दिन, महीने का नाम, ऐतिहासिक युद्ध, घटनाओं आदि के नाम इसके अन्तर्गत आते हैं।

जातिवाचक संज्ञा–जिन शब्दों से एक प्रकार की अनेक वस्तुओं, प्राणियों या व्यक्तियों का बोध होता उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे–बल्व, सड़क, फूल, पशु, पक्षी आदि। उपर्युक्त शब्दों से एक प्रकार के अनेक शब्दों का बोध होता है। इसके अन्तर्गत व्यवसाय, पारिवारिक सम्बन्ध आदि आते हैं, जैसे–अध्यापक, मंत्री, माता–पिता, भाई–बहन आदि। कभी–कभी प्रयोग के अनुसार जातिवाचक संज्ञा भी व्यक्तिवाचक संज्ञा बन जाती है, जैसे–महात्मा जी का प्रवचन चल रहा है (जातिवाचक संज्ञा) महात्मा जी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे (महात्मा जी = महात्मा गाँधी) (व्यक्तिवाचक संज्ञा)। इसी प्रकार कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक के रूप में भी होता है, जैसे–रावण लंका का राजा था। (व्यक्तिवाचक संज्ञा) आजकल घर–घर में रावण दिखाई देते हैं (जातिवाचक संज्ञा)। जातिवाचक और व्यक्तिवाचक संज्ञा का निर्धारण वाक्य में प्रयोग के आधार पर तय किया जाता है।

भाववाचक संज्ञा–जिन शब्दों से व्यक्ति या वस्तु के गुण, उसके कार्य–व्यापार अथवा किसी भाव या अवस्था विशेष का बोध होता है उसे भाववाचक संज्ञा कहा जाता है। जैसे–पौरूष, उत्साह, अच्छाई, बुराई, बुढ़ापा, लड़कपन आदि। उपर्युक्त शब्द व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष या भाव–अवस्था को बता रहे हैं। भाववाचक संज्ञाएँ कई प्रकार से बनाई जाती हैं, जैसे–

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाना–

मित्र – मित्रता, नेता – नेतृत्व, बूढ़ा – बुढ़ापा, स्वामी – स्वामित्व, विद्वान – विद्वता, देव – देवत्व, शत्रु – शत्रुता, गुरु – गुरुत्व, स्त्री – स्त्रीत्व, मानव – मानवता, बच्चा – बचपन, दीन – दीनता।

उपर्युक्त शब्द जातिवाचक से भाववाचक के रूप में परिवर्तित हो गये हैं।

सर्वनाम शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना–

अपना – अपनापन, मम – ममता/ममत्व, पराया – परायापन, निज – निजता, सर्व – सर्वस्व आदि।

विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना–

गंभीर – गम्भीरता, चंचल – चंचलता, तीव्र –तीव्रता, हरा – हरियाली, कृपण – कृपणता आदि।

क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना–

खेलना – खेल, हँसना – हँसी, जीना – जीवन, दौड़ना – दौड़, मुस्कुराना – मुस्कुराहट आदि।

अव्यय शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना–

दूर – दूरी, नजदीक – नजदीकी, निकट –निकटता, धिक् – धिक्कार, ऊँचा – ऊँचाई आदि।

इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर यह देखा जा सकता है कि भाववाचक संज्ञाएँ कई प्रकार से बनाई जा सकती हैं।

गतिविधि–01

प्रशिक्षुओं को कक्ष में मौजूद सभी वस्तुओं को ध्यान से देखने के लिए कहें। तत्पश्चात् उन सभी के नाम अपनी पुस्तिका पर लिखने का निर्देश दें। अधिक से अधिक वस्तुओं के नाम लिखने हेतु प्रेरित करते रहें। इस कार्य हेतु दो मिनट का समय दें। समय समाप्ति के पश्चात् सभी से स्वयं द्वारा लिखित वस्तुओं के नाम गिनने के लिए कहें। सर्वाधिक नाम लिखने वाले को पुरस्कृत करें।

गतिविधि समाप्त होने के बाद प्रशिक्षुओं को यह बताएं कि अभी आपने जो कुछ लिखा वह सब संज्ञा है।

चर्चा करते हुए संज्ञा की समझ बनायें एवं अन्य उदाहरण निकलवाएं।

गतिविधि–02 (बच्चों के लिए)

बच्चों के छोटे–छोटे कई समूह बनायें। उन्हें कोई कहानी या गद्यावतरण देकर उनमें संज्ञा शब्दों को रेखांकित करवायें।

गतिविधि–03 (बच्चों के लिए)

बच्चों को दो समूह में बैठा दें। तत्पश्चात् एक समूह को संज्ञा शब्द का कार्ड दूसरे समूह को क्रिया समूह का कार्ड दें। दोनों के सहयोग से वाक्य निर्माण करायें। जैसे– राधा.....पढ़ती है। इसे अपनी कापी पर लिखने के लिए भी कहें।

संज्ञा	**क्रिया**
मोहन	पढ़ती है
गाय	जाता है
मधु	पढ़ता है
रमेश	चरती है

मूल्यांकन–

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित संज्ञा से कीजिए–
   क......वह है जिसमें सेवा भाव हो। (सेवक/केवट)
   ख. हम गंगा की.....करते हैं। (सेवा/पूजा)
   ग.....बहुत दूर है। (दिल्ली/बिल्ली)
   घ.....एक ऐतिहासिक इमारत है। (राजमहल/ताजमहल)
   ड़.....कक्षा में पढ़ाते हैं। (शिक्षार्थी/शिक्षक)
2. नीचे लिखे शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए–

शब्द	**भाववाचक**	**शब्द**	**भाववाचक**
पढ़ना	पढ़ाई	लिखना	.....
आलसी	.....	कठिन	.....
हँसना	.....	बाहर	.....
दानव	.....	मनुष्य	.....

3. नीचे दी गयी संज्ञाओं को सम्बन्धित वर्ग में लिखिए–
   शिशु, बालिका, ऊधमपुर, नर्मदा, पहाड़, मधुरता, नदी, उदारता, कठोरता।
   व्यक्तिवाचक.....
   जतिवाचक.....
   भाववाचक.....
4. संज्ञा किसे कहते हैं एवं इसके कितने भेद हैं, लिखिए।

उपर्युक्त अभ्यासों एवं क्रियाकलापों के द्वारा प्रशिक्षु बच्चों ने संज्ञा शब्द के बारे में कितनी जानकारी प्राप्त की है यह अच्छी तरह जान सकता है। यदि कोई बच्चा समझने में पूर्णता नहीं हासिल कर पाया है तो प्रशिक्षु उसे (बच्चे को) पुनः प्रोत्साहित करते हुए परिवेशीय उदाहरण के द्वारा संज्ञा के बारे में बोध कराये।

सर्वनाम

सर्वनाम शब्द दो शब्दों के आपस में मिलने से बना है। पहला 'सर्व' और दूसरा 'नाम'। इसका अर्थ होता है सभी का नाम। अर्थात् जो शब्द किसी संज्ञा के बदले प्रयुक्त होता है उसे सर्वनाम कहते हैं, जैसे–वह, वे, आप, मैं, हम, ये, तुम आदि।

तरीका–बच्चे व्यावहारिक दिनचर्या में प्रायः संज्ञा शब्दों के स्थान पर सर्वनाम शब्द बोलते हैं। शिक्षक को उन्हें दो–चार वाक्य बोलने को प्रेरित करना चाहिए या स्वयं उदाहरण देकर सर्वनाम शब्द की पहचान कराना चाहिए, जैसे–रमेश ने रवि से कहा–तुम यहीं ठहरो मैं अभी आता हूँ। राजेश ने सुरेश से कहा आप कहाँ रहते हैं।

उक्त वाक्यों में आप, मैं, तुम का प्रयोग किसी संज्ञा के लिए प्रयुक्त हुआ है, परन्तु यह जरूरी नहीं है कि रमेश के लिए प्रयुक्त 'मै' शब्द, रवि के लिए प्रयुक्त तुम शब्द, सुरेश के लिए प्रयुक्त आप शब्द किसी अन्य संदर्भ में अन्य के लिए प्रयुक्त न हो अर्थात् भिन्न वाक्य में भिन्न संदर्भ में यह आप, मैं, तुम आदि शब्द किसी दूसरे के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है। इसीलिए इन्हें सर्वनाम कहा जाता है। सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम **2**. निजवाचक सर्वनाम **3**. निश्चयवाचक सर्वनाम
4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम **5.** सम्बन्धवाचक सर्वनाम **6**. प्रश्नवाचक सर्वनाम

उपर्युक्त सभी सर्वनाम शब्द पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों रूपों में एक समान प्रयुक्त होते हैं। सम्बोधन में सर्वनाम शब्द का प्रयोग नहीं होता है। इन बातों को भी शिक्षण के दौरान बच्चों को स्पष्ट कर देना चाहिए।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम–संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले वे शब्द जिन्हें वक्ता अपने लिए प्रयोग करता है या सुनने वाले के लिए प्रयोग करता है अथवा जिसका प्रयोग बोलने वाला या सुनने वाला किसी अन्य व्यक्ति के लिए करता है, वे सर्वनाम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। पुरुष से तात्पर्य है–उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष। इनको निम्नलिखित उदाहरणों से समझाया जा सकता है–

उत्तम पुरुष– मैं घर जा रहा हूँ। हम लोग स्कूल जा रहे हैं।
मेरा कार्य हो गया। हमारा स्कूल खुला है।
मध्यम पुरुष– तुम कहाँ जा रहे हो। तुम लोग यहीं विश्राम करो।
तुम्हारे पिताजी जा रहे हैं। तुम लोगों के कपड़े अच्छे हैं।
अन्य पुरुष– वह घर जा चुका है। वे अभी पढ़ रहे हैं।
उसका नाम सुरेश है उनको जाने दो।

2. निजवाचक सर्वनाम–जिन सार्वनामिक शब्दों से अपनापन का बोध होता है उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहा जाता है, जैसे–स्वयं, अपने आप, खुद आदि। इसे निम्नलिखित उदाहरण से समझा जा सकता है–

तुम स्वयं ही वहाँ चले गए। आजकल वह अपने को सुधार रहा है।
वह स्वयं सभी कार्य करता है। मैं आप ही वहाँ पहुँच जाऊँगा।
अपने बड़ों का आदर करना चाहिए। वह खुद अपना काम कर लेता है।

3. निश्चयवाचक सर्वनाम–जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहा जाता है, जैसे–यह, वह आदि।

यह कल घर जायेगा। वह हमेशा पढ़ता है।

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम–जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न होता हो उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे–कुछ, कोई आदि।

मुझे कोई नहीं मिला। उसके भोजन के लिए कुछ लेते आओ।

5. सम्बन्धवाचक सर्वनाम–जिस सर्वनाम से वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से सम्बन्ध सूचित किया जाय उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे–जो, सो, उसकी, जिसकी आदि।

वह कौन है जो इतना बोल रहा है। जो बोयेगा सो काटेगा।

जिसकी लाठी उसकी भैंस। यह वही किताब है जिसे मोहन ने खरीदी थी।

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम–जिन सर्वनामों को प्रश्न करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहा जाता है, जैसे–कौन, किसने, क्या आदि।

कौन गा रहा है। यह पत्र किसने लिखा।

तुम किसे बुला रहे हो। वह क्या लेने बाजार गया था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सर्वनाम शब्द किसी संज्ञा के बदले प्रयोग में लाया जाता है तथा वह उसका बोध कराता है। बच्चों को सर्वनाम शब्दों का शिक्षण करते समय परिवेशीय सार्वनामिक शब्दों की पहचान उदाहरणों के माध्यम से करवाना चाहिए तथा उनसे सर्वनाम शब्दों के सहारे अधिकाधिक वाक्य विन्यास कराना चाहिए।

गतिविधि–01 प्रतिभागियों को हिन्दी कहानी/अनुच्छेद सुनाएँ। उन्हें निर्देश दें कि कहानी/अनुच्छेद में आए संज्ञा शब्द पर चुटकी तथा सर्वनाम शब्द आने पर ताली बजाएँ। इस क्रिया को कराने से बच्चों में एकाग्रता एवं चैतन्यता भी रहेगी।

गतिविधि–02 इसी प्रकार सर्वनाम शब्दों से सम्बन्धित बच्चों से वाक्य प्रयोग भी कराया जा सकता है, जैसे–नीचे लिखे सर्वनामों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

क. हमारा	––	––	––	––	––	––	––	––	––
ख. अपने आप	––	––	––	––	––	––	––	––	––
ग. स्वयं	––	––	––	––	––	––	––	––	––
घ. जितना–उतना	––	––	––	––	––	––	––	––	––
ड़. किसने	––	––	––	––	––	––	––	––	––
च. उसको	––	––	––	––	––	––	––	––	––
छ. यह	––	––	––	––	––	––	––	––	––

गतिविधि–03 रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित सर्वनाम से कीजिए–

क. माधवी के साथ.....बहन भी आयी है। (उसकी/वह)

ख. राधिका.....घर चली गयी। (किसके/अपने)

ग. वह स्वयं आया.....चला गया। (स्वयं/आप)

घ. .....पिताजी आये हैं। (तेरा/तुम्हारे)

ड. मुझे.....पुकार रहा है। (किसने/कौन)

मूल्यांकन–इन अभ्यास कार्यों के द्वारा बच्चों का मूल्यांकन किया जा सकता है। प्रशिक्षु को यह ध्यान देना आवश्यक है कि जो बच्चा सर्वनाम के बारे में पूर्णतः जानकारी नहीं प्राप्त कर पाया है उसे विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा बोध करायें तथा उन्हें प्रोत्साहित करें।

गतिविधि–प्रशिक्षु कक्षा में बच्चों से उनका नाम पूछें–सभी बच्चे अपना–अपना नाम बतायेंगे। उनमें से किसी एक छात्र को बुलाकर उनके नामों को लेते हुए कहें कि–

अनुराग खड़ा है। अनुराग गाना गा रहा है। अनुराग अब बाहर जा रहा है।

शिक्षक बच्चों को बतायेंगे कि यहाँ अनुराग शब्द तीन बार आया है। इसमें अनुराग शब्द का प्रयोग एक बार करते हुए तीन वाक्य बनाइये–

अनुराग खड़ा है। वह गाना गा रहा है। वह अब बाहर जा रहा है।

पुनः प्रशिक्षु कुछ हिन्दी वाक्य बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करें तथा इसके लिए श्यामपट्ट का भी सहारा ले सकते हैं–

गीता पढ़ रही है – वह पढ़ रही है।
राम जा रहा है – वह जा रहा है।
राधा हँस रही है – वह हँस रही है।
मोहन सो रहा है – वह सो रहा है।

प्रशिक्षु पुनः बच्चों से पूछे कि यहाँ गीता, राम, राधा, मोहन के स्थान पर किस शब्द का प्रयोग हुआ है? बच्चे जवाब देंगे–'वह' तत्पश्चात् प्रशिक्षु स्पष्ट करते हुए बताएँगे कि ऐसे शब्द जो किसी नाम (संज्ञा) के बदले या उसके स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–यह, वह, मैं, तुम, हम, ये, वे आदि।

मूल्यांकन–इस गतिविधि के द्वारा प्रशिक्षु जो बच्चा सही उत्तर दे उसे शाबासी देते हुए प्रोत्साहित करें तथा अन्य बच्चों को भी प्रोत्साहित करें।

- इसी क्रिया को समूहवार भी कराया जा सकता है जैसे एक समूह नाम लेकर वाक्य बोलेगा तो दूसरे समूह का बच्चा नाम के स्थान पर सर्वनाम लगाकर वाक्य बोलेगा। यह क्रिया प्रत्येक बच्चों से करायी जाय जिससे सर्वनाम के बारे में उन्हें अच्छी तरह जानकारी हो जाय।
- दिये गये शब्दों में से संज्ञा और सर्वनाम शब्दों को अलग करो–

	संज्ञा	**सर्वनाम**
हमारी पृथ्वी	––	————
तुम्हारा विद्यालय	––	————
मेरा कलम	––	————
उनका घर	––	————
हमारा गाँव	––	————

क्रिया

वाक्य में जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने की जानकारी हो, उसे क्रिया कहते हैं, जैसे नहाना, बैठना, लिखना आदि। क्रिया का अर्थ है– कार्य।

क्रिया वाक्य के अंत में आती है। क्रिया के बिना वाक्य का अर्थ ही पूरा नहीं होता। एक वाक्य में एक क्रिया अवश्य होती है। कुछ वाक्यों में एक से अधिक क्रियाएँ भी होती हैं।

क्रिया के भेद–क्रिया के भेद मुख्यतः दो आधार पर किये जाते हैं–

1. कर्म के आधार पर **2.** रचना या प्रयोग के आधार पर।

1. **कर्म के आधार पर क्रिया के भेद**–कर्म के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित भेद हैं–

(क) सकर्मक क्रिया–जिस क्रिया के लिए कर्म की आवश्यकता होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। ऐसी क्रियाओं का प्रभाव कार्य पर पड़ता है, जैसे–मंजरी किताब पढ़ती है। मंजरी क्या पढ़ती है? मंजरी किताब पढ़ती है। अतः किताब कर्म है। पढ़ना सकर्मक क्रिया है। क्रिया के साथ 'क्या', 'किसे' या 'किसको' लगातार प्रश्न करने पर यदि उत्तर आ रहा है तो उसे सकर्मक क्रिया समझनी चाहिए। उत्तर न आने पर क्रिया अकर्मक होगी। कर्ता के साथ यदि 'ने' का प्रयोग हो तो क्रिया सकर्मक होती है।

सकर्मक क्रिया के भेद–सकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं–

1. एककर्मक क्रिया **2.** द्विकर्मकक्रिया।

1. एककर्मक क्रिया–जिस वाक्य में क्रिया का एक ही कर्म हो उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–राधिका गाना गा रही है। इसमें 'गाना' कर्म है।

2. द्विकर्मकक्रिया–जिस क्रिया का फल दो कर्मों पर पड़ता है उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–ग्वाला गाय से दूध दुहता है। इसमें 'दुहता है' क्रिया का कर्म गाय और दूध है।

(ख) अकर्मक क्रिया–जिन क्रियाओं के साथ कर्म की अपेक्षा न हो, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे–नरेश हँसता है। मिथिला रोती है। यहाँ हँसना, रोना अकर्मक क्रिया है।

हिन्दी में कुछ क्रियाएँ अकर्मक से सकर्मक बन जाती हैं जैसे–

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
उठना	उठाना	उड़ना	उड़ाना
कटना	काटना	छँटना	छाँटना
छिलना	छीलना	जगना	जगाना
पिसना	पीसना	मरना	मारना
चलना	चलाना	सिंचना	सींचना

2. रचना या प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद–

(क) सामान्य क्रिया/मूल क्रिया–जहाँ वाक्य में केवल एक क्रिया का अकेले प्रयोग हो जैसे–मीरा बहुत रोई। इसमें क्रिया के साथ और कोई अन्य पद नहीं जुड़ा है।

(ख) संयुक्त क्रिया–जिस क्रिया में मुख्य क्रिया के साथ अन्य पद भी प्रयुक्त हों जैसे–वह किताब पढ़ चुका।

(ग) प्रेरणार्थक क्रिया–जब कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है तो उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। प्रेरणार्थक क्रियाओं के दो रूप होते हैं, 1. प्रत्यक्ष प्रेरणार्थक क्रिया तथा 2. अप्रत्यक्ष प्रेरणार्थक क्रिया।

(घ) नाम धातु क्रियाएँ–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण से बनने वाली क्रियाओं को नामधातु क्रियाएँ कहते हैं,

जैसे–	**संज्ञा से क्रिया**	**सर्वनाम से क्रिया**	**विशेषण से क्रिया**
	हाथ–हथियाना	अपना–अपनापन	गरम–गरमाना

(ड.) पूर्वकालिक क्रिया–मुख्य क्रिया से पहले आने वाली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। जैसे–वह हाथ–मुँह धोकर खाने बैठ गयी। इसमें धोकर का प्रयोग पूर्वकालिक क्रिया है।

प्रशिक्षु–क्रिया के बारे में बच्चों को पूर्णतः जानकारी देने के बाद विभिन्न गतिविधियों द्वारा यह मूल्यांकन करें कि क्रिया के बारे में उन्हें कितना बोध हो पाया है।

गतिविधि–बच्चों को फ्लैश कार्डों के माध्यम से सीखना अच्छा लगता है। कक्षा को छोटे–छोटे समूहों में बाँट दें। आप संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रिया शब्दों के पर्याप्त मात्रा में फ्लैश कार्ड तैयार रखें। सभी समूहों में फ्लैश कार्ड वितरित कर वाक्य बनवायें। उदाहरण–

मछली तैरती है।

बच्चे एक शब्द (संज्ञा या सर्वनाम) को अनेक क्रियाओं से जोड़कर अधिक से अधिक वाक्य बना सकते हैं। इसके लिए निम्नलिखित क्रियाकलाप कराये जा सकते हैं, जैसे–

विवेक	सोता है
	खाता है
	हँसता है
	पढ़ता है
	जाता है

इस प्रकार अनेक संज्ञा या सर्वनाम शब्दों को किसी एक उपयुक्त क्रिया से जोड़कर अनेक वाक्य बनवाये जा सकते हैं।

मूल्यांकन–अब श्यामपट्ट पर कोई एक कर्ता लिख दें। बच्चों से अपनी अभ्यास पुस्तिका पर क्रिया जोड़कर अधिक से अधिक वाक्य एक निश्चित अवधि में लिखने को कहें। इसकी पुनरावृत्ति कर एक प्रतियोगिता का रूप दें। सर्वाधिक वाक्य बनाने वाले बच्चे को प्रोत्साहित करें।

प्रश्न–निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया शब्दों पर गोला बनाओ–

1. एक कविता सुनाओ।
2. सुंदर–सुंदर लिखो।
3. आपस में मत झगड़ो।
4. प्रतिदिन दो गिलास दूध पियो।

प्रश्न–सही क्रिया भरो–

1. मैदान में जाकर.....। (खेलो / पढ़ो)
2. मीरा ने चार पुस्तकें.....। (फेंकी / खरीदी)
3. मोमबत्ती.....दो। (बुझा / जला)
4. बंदर पेड़ से .....। (कूदा / चिखा)
5. चिड़िया आकाश में.....। (चली / उड़ी)

विशेषण

विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं।

विशेषण के भेद–विशेषण के निम्नलिखित भेद हैं–1. गुणबोधक विशेषण 2. संख्याबोधक विशेषण 3. परिणामबोधक विशेषण 4. सार्वनामिक या संकेतबोधक विशेषण।

1–गुणबोधक विशेषण–जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम के गुण–दोष, आकार, स्थान, काल रंग या दशा का बोध हो, उन्हें गुणबोधक विशेषण कहते हैं। जैसे–

गुण–दोष सूचक शब्द–अच्छा, बुरा, दुष्ट, सीधा, दयालु, कठोर आदि।

आकार सूचक शब्द–लम्बा, चौड़ा, छोटा, बड़ा आदि।

स्थानसूचक शब्द–ऊँचा–नीचा, बाहरी–भीतरी, अगला, पिछला आदि।

रंगसूचक शब्द–लाल, पीला, नीला, श्वेत, सुनहरा आदि।

दशासूचक शब्द–गीला, सूखा, दुबला, पतला, अग्रिम आदि।

2–संख्याबोधक विशेषण–जो विशेषण शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या या क्रम का बोध कराते हैं उन्हें संख्याबोधक विशेषण कहते हैं। जैसे–इस कक्षा में चालीस छात्र हैं आदि।

3–परिणामबोधक विशेषण–जिस शब्द से माप या तौल का बोध होता है, उन्हें परिणामबोधक विशेषण कहते हैं। जैसे–पाँच लीटर दूध, दो किलोमीटर और थोड़ा आदि।

4–सार्वजनिक या संकेतबोधक विशेषण–ऐसे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा से पूर्व आकर उसकी विशेषता बताते हैं, जैसे–यह मेरा घर है।, वह लड़का पास हो गया आदि। यहाँ 'यह' मेरा सर्वनाम घर की विशेषता बता रहा है। 'वह' सर्वनाम नाम से लड़कों की विशेषता प्रकट हो रही है।

विशेष्य और विशेषण–

अन्विति की दृष्टि से विशेषण दो तरह के होते हैं– एक वे विशेषण जिनका रूप विशेष्य के अनुसार बदल जाता है, जैसे–अच्छा लड़का, अच्छी लड़की। दूसरे वे विशेषण जिनका रूप नहीं बदलता है, जैसे–ज्यादा, घटिया, बढ़िया, उम्दा।

विशेषण प्रायः विशेष्य से पहले आते हैं, किन्तु वे विषेष्य के बाद भी आ सकते हैं, जैसे–उदार व्यक्ति कम मिलते हैं। वह व्यक्ति बहुत उदार है।

प्रविशेषण–कुछ विशेषण शब्द विशेषण की भी विशेषता प्रकट करते हैं। इन्हें विशेषण कहते हैं, जैसे–यह बहुत अच्छी कुर्सी है। यह बहुत ऊँचा भवन है।

विशेषण शब्दों की रचना–

गतिविधि–प्रशिक्षुओं/बच्चों को विशेषण शब्दों की रचना के बारे में निम्न तरीके से बतायें–

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और अव्यय शब्दों में कुछ प्रत्यय लगाकर भी विशेषण शब्दों की रचना की जाती है। जैसे–

(क) संज्ञा से विशेषण–

संज्ञा	**विशेषण**	**संज्ञा**	**विशेषण**
इतिहास	ऐतिहासिक	सुख	सुखी
पुत्र	पुत्रवती	धन	धनवान
बात	बातूनी	गुण	गुणकारी
गुण	गुणवती		

(ख) सर्वनाम से विशेषण–

सर्वनाम	**विशेषण**	**सर्वनाम**	**विशेषण**
यह	ऐसा	क्या	कैसा
तुम	तुम्हारा	वह	वैसा

मैं	मेरा	जो	जैसा

(ग) क्रिया से विशेषण–

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
भागना	भगोड़ा	लड़ना	लड़ाकू
टिकना	टिकाऊ	बेचना	बिकाऊ

(घ) अव्यय से विशेषण–

अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
आगे	अगला	ऊपर	ऊपरी
बाहर	बाहरी	पीछे	पिछला

प्रशिक्षु बच्चों को विशेषण के बारे में जानकारी देने के बाद विभिन्न गतिविधियों द्वारा यह आकलन करें कि उन्होंने इसके बारे में कितना कुछ हासिल कर पाये हैं।

गतिविधि–(1) प्रशिक्षु श्यामपट्ट पर कुछ संज्ञा शब्द लिख दें और बच्चों से बारी–बारी क्रमवार विशेषण बनाकर बोलने को कहें। जैसे–दुख, चमक, भारत, स्वर्ण जो बच्चा बता दे उसको शाबासी दें तथा जो नहीं बता पा रहे हैं उन्हें पुनः समझाते हुए प्रोत्साहित करें।

गतिविधि–(2) बच्चों को दो समूह में विभाजित कर दें तत्पश्चात् एक समूह को संज्ञा शब्द का कार्ड दूसरे समूह को विशेषण शब्द का कार्ड दें। समूह एक का बच्चा उसको विशेषण शब्द का कार्ड बोले। यह क्रम प्रत्येक प्रतिभागी से कराया जाय। इसी क्रम में प्रशिक्षु संज्ञा से विशेषण तथा सर्वनाम से विशेषण, क्रिया से विशेषण और अव्यय से विशेषण शब्द बारी–बारी से बनवायें। इस प्रकार बीच–बीच में बच्चों का मूल्यांकन भी करते रहें।

मूल्यांकन–(1) प्रशिक्षु बच्चों से वाक्यों में विशेषण शब्द छाँटकर लिखने को दें तथा उनके भेद के बारे में पूछें–

विशेषण	**भेद**
(क) 26 जनवरी हमारा राष्ट्रीय धर्म है।	..... .
(ख) दो मीटर कपड़े में कमीज बन जाती है।	..... .
(ग) सचिन अच्छे बल्लेबाज हैं।	..... .
(घ) उसने उच्चतम न्यायालय में अपील की।	..... .
(ड.) वह सुनीलदत्त का बंगला है।	..... .

मूल्यांकन–(2) इसी क्रम में बच्चों से कुछ रिक्त स्थानों की पूर्ति भी करायी जाय जिससे यह जानकारी प्राप्त हो सकेगी कि बच्चे विशेषण के बारे में पूर्णतः समझ प्राप्त कर लिये हैं।

रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित विशेषण से कीजिए–

(क) इस कक्षा में .....लड़कियाँ पढ़ती हैं।
(ख) मुझे भी.....दूध चाहिए।
(ग) स्वामी विवेकानन्द.....विद्वान थे।
(घ) हरिश्चन्द्र.....राजा थे।
(ड.) वह.....कक्षा में पढ़ती है।

मूल्यांकन–(3) प्रशिक्षु विशेषण से सम्बन्धित मूल्यांकन करने के पश्चात उन बच्चों को आगे के क्रम में विशेषण और विशेष्य के जोड़े बनवाकर देखें कि उन्होंने कितना कुछ जानकारी प्राप्त की है–

विशेषण और विशेष्य के जोड़े निम्नलिखित शब्दों के माध्यम से करवायें–

पाँचवा, शासक, न्यायप्रिय, अमरूद, गुलाब, मीठा, इमली, खट्टी, लाल, सम्मेलन, इमारत, ऐतिहासिक।

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

मूल्यांकन–(4) प्रशिक्षु इसके पश्चात् बच्चों को कुछ शब्द दें और उसमें से विशेषण छाँटकर बताने को कहें–

निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइये–

अंत	....	झगड़ा	....
रक्षा	....	अपमान	....
चम्पक	....	जो	....
भूगोल	....	भागना	....
पुष्प	....	बेचना	....

प्रशिक्षु बच्चों से इन सभी क्रियाकलापों को कराने के बाद इन सभी गतिविधियों को बच्चों को कई समूहों में बाँटकर करा सकते हैं।

बच्चों से प्रशिक्षु यह भी करायें–जैसे–

निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण शब्दों पर गोला बनाओ–

1. ताजमहल सुन्दर इमारत है।
2. दिल्ली बड़ा शहर है।
3. ठंडी हवा चल रही है।
4. सुन्दर लेख लिखो।
5. आसमान पर काले बादल छाये हैं।

वचन

शब्द के जिन रूपों से संज्ञा, सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उसे बचन कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम के एक या एक से अधिक होने का बोध शब्द के जिस रूप से होता है, उसे वचन कहते हैं। संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त विशेषण और क्रिया के वचन भी उन्हीं के अनुसार चलते हैं, जैसे–

अच्छा लड़का खेलता है	अच्छे लड़के खेलते हैं
|	|
एक	एक से अधिक

वचन के भेद–

1. **एकवचन**–जिस शब्द से एक वस्तु या प्राणी का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं, जैसे–लड़का, घोड़ा, चिड़िया।

2. बहुवचन–जिस शब्द से एक से अधिक वस्तु या प्राणी का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं, जैसे–लड़के, घोड़े, चिड़ियाँ।

क्र0सं0	एकवचन	बहुवचन
1.	घोड़ा दौड़ रहा है।	घोड़े दौड़ रहे हैं।
2.	चिड़िया उड़ रही है।	चिड़िया उड़ रही हैं।
3.	वह कहीं जा रहा है।	वे कहीं जा रहे हैं।
4.	शोभा उसकी बहन है।	बहनें भाषण सुन रही हैं।
5.	लड़की बोली	लड़कियाँ बोल रही हैं।

इन वाक्यों में घोड़ा–घोड़े, चिड़िया–चिड़ियाँ, वह–वे, लड़की–लड़कियाँ में प्रयोग पर ध्यान दिया जा सकता है।

इसी प्रकार बहुवचन के दो रूप हैं–1. विभक्ति रहित 2. विभक्ति सहित

एकवचन से बहुवचन बनाना

नियम	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अंतिम 'अ' को 'ए' में बदलकर बहुवचन बनाना (स्त्रीलिंग)	पुस्तक	पुस्तकें	दुकान	दुकाने
अंतिम 'आ' को 'ए' में बदलकर बहुवचन बनाना (पुल्लिंग)	पपीता	पपीते	कपड़ा	कपड़े
अंतिम 'आ' के बाद 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाना (स्त्रीलिंग)	महिला	महिलाएँ	कविता	कविताएँ
अंतिम 'या' को 'याँ' में बदलकर बहुवचन बनाना (स्त्रीलिंग)	मिठाई	मिठाइयाँ	रीति	रीतियाँ
उ, ऊ, ए, औ के स्थान पर 'एँ' लगाकर (स्त्रीलिंग)	वस्तु	वस्तुएँ	धेनु	धेनुएँ

विभक्ति सहित संज्ञाओं के बहुवचन

नियम	एकवचन	बहुवचन	प्रयोग
अंतिम स्वर 'आ' को 'ओ' में बदलकर	लड़का	लड़कों	लड़का को भगाओ नहीं
अंतिम 'इ' के साथ 'यों' जोड़कर	कवि	कवियों	कवियों ने कविताएँ सुनायीं
अंतिम 'ई' स्वर को ह्रस्व कर देते हैं तथा त्यों जोड़ देते हैं	गली	गलियों	गलियों में कुत्ते थे

सदैव एकवचन वाले शब्द–आकाश, पानी, घूप, वर्षा, आग, दूध, जल, जनता, सेना, वर्दी, सत्य, सोना आदि।

सदैव बहुवचन वाले शब्द–प्राण, हस्ताक्षर, दर्शन, लोग, होश, अक्षम आदि।

किसी शब्द के साथ गण, जन, लोग, वृंद लगाकर भी बहुवचन बनाते हैं, जैसे–छात्रगण, विद्वजन, गुरुजन, गायक लोग, शिक्षक वृंद। अरबी, फारसी या अंग्रेजी के जो शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, उनका बहुवचन हिन्दी के अनुसार ही बनाया जाता है, जैसे–कॉलेज, कॉलेजों, स्कूल, स्कूलों, सवाल, सवालों, मदरसा, मदरसों।

गतिविधि–01 प्रशिक्षु बच्चों को समूह में बाँटकर उनसे तरह–तरह की गतिविधियाँ करायें, जैसे–

निम्नलिखित एकवचन रूप वाक्यों को बहुवचन में बदलिए–

1. लड़का पढ़ता है। .....
2. लड़की खेलती है। .....
3. गाय घास चर रही है। .....
4. चिड़ियाँ उड़ रही हैं। .....
5. बच्चा खेल रहा है। .....

गतिविधि–02 कुछ बहुवचन वाले वाक्यों को देकर उनका एकवचन बनाइये, जैसे–

1. लड़के स्कूल जा रहे हैं। .....
2. छात्राएँ पढ़ रही हैं। .....
3. बच्चे व्यायाम कर रहे हैं। .....
4. नदी में बच्चे तैर रहे हैं। .....

गतिविधि–03 बच्चों को कुछ रिक्त स्थान की पूर्ति सही विकल्पों द्वारा करायें, जैसे–

1. .....मेला देख रहे हैं। (लड़के, लड़की, बालक, बालिकाएँ)
2. .....स्कूल जा रही हैं। (छात्राएँ, छात्र, बालक, आदमी)
3. .....पर भौरे मंडरा रहे हैं। (फूलों, पत्तियों, काँटों, लताओं)
4. मिठाई पर.....मँडरा रही हैं। (मक्खियाँ, चिड़ियाँ, भौरा, तितली)
5. खेत में.....दाना चुग रही हैं। (मोर, चिड़ियाँ, गाय, बकरी)

मूल्यांकन–02 नीचे लिखे शब्दों के वचन बदलकर लिखिए–

अध्यापिका	.....	बत्तख	.....
कथाएँ	.....	धोतियाँ	.....
टोपी	.....	चिड़ियाँ	.....
लेखकगण	.....	गौएँ	.....
नाली	.....	मुनि	.....

मूल्यांकन–03 इसी प्रकार अन्य अभ्यास कार्य भी कराएँ, जैसे–

नीचे लिखे उपयुक्त शब्दों के सही रूप बनाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

चीता, तोता, कुर्सी, पत्ती, अध्यापिकाएँ, चींटी।

(क).....आम कुतर रहे हैं।

(ख) पाँच.....दहाड़ रहे हैं।

(ग) दीवार पर.....चल रही हैं।

(घ) पेड़ की.....पीली पड़ गयीं।

(ड.) कक्षा में.....पढ़ रही थीं।

गतिविधि–04 वचन सुधारकर वाक्य पुनः लिखिए–

(क) लड़कियें रो पड़ी। =.....

(ख) उसने बच्चे में टाफियाँ बाँटी। = ...

(ग) महिला अपने कर्तव्य से परिचित हैं। = ...

(घ) न्याय पंचायत के अन्दर कई ग्रामसभा हैं। = ...

(ड.) यहाँ मेरी अनेक शिष्या हैं। = ...

गतिविधि–05 वाक्यों में प्रयुक्त बहुवचन शब्दों को एकवचन में बदलकर वाक्य पुनः लिखिए–

(क) मेज पर थालियाँ रखी हैं। = ...

(ख) लड़के साइकिल चला रहे हैं। = ...

(ग) लड़कियों ने रसगुल्ले खाये। = ...

(घ) जाल में मछलियाँ उछल रही हैं। = ...

(ड.) बच्चे लघु कथाएँ पढ़ते हैं। = ...

(च) साड़ियाँ फट गयीं। = ...

(छ) गुफाओं में अँधेरा था। = ...

गतिविधि–प्रशिक्षु बच्चों को दो समूह में बाँट दें। पहले समूह को एकवचन शब्द का कार्ड और दूसरे समूह को बहुवचन का कार्ड दें तत्पश्चात पहले समूह का बच्चा एकवचन शब्द का कार्ड निकालकर दिखायेगा तो दूसरे समूह का बच्चा उस शब्द का बहुवचन शब्द का कार्ड निकालकर दिखायेगा। यह क्रम बारी–बारी से प्रत्येक प्रतिभागी से कराया जाय। जो बच्चा सही शब्द कार्ड नहीं निकालेगा या उसे समझाते हुए प्रोत्साहित किया जायेगा।

मूल्यांकन–प्रतिभागियों को दो समूह में बाँट दें। दोनों समूह को क्रमशः एक वचन और बहुवचन का नाम देते हुए उसके अनुरूप पाँच–पाँच वाक्य बनाने को कहें तथा प्रस्तुतीकरण करवाएँ। जो समूह पहले प्रस्तुतीकरण करेगा उसे विजेता घोषित किया जायेगा। क्रियाकलाप भी मूल्यांकन के आधार हैं।

लिंग

शब्दों के जिस रूप से अनेक पुरुष या नारी जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। अर्थात् लिंग से हमें पुरुष या नारी का बोध होता है। समस्त संज्ञा पद दो लिंगों में से किसी एक लिंग में ही होते हैं। या तो वे पुल्लिंग हैं या स्त्रीलिंग।

लिंग के भेद–

1. पुल्लिंग–जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं, जैसे–पिता, बालक, भाई, साथी, बंदर, हाथी, बचपन आदि।

2. स्त्रीलिंग–जिन शब्दों से नारी जाति का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं, जैसे–माता, बालिका, बहन, साथिन, बँदरिया, हथिनी, अच्छाई आदि।

पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान

प्राणिवाचक शब्दों के लिंग की पहचान उनके स्वरूप (शब्दों के अर्थ) के अनुसार हो जाता है, जैसे–लड़का–लड़की, बँदर–बँदरिया, गाय–बैल, घोड़ा–घोड़ी, नर–नारी आदि। किन्तु अप्राणिवाचक या निर्जीव पदार्थ, जैसे–कुर्सी, मेज, किताब, ग्रन्थ, सोना, चाँदी, हाथ, पैर, आँख, मुख, नाक, पूँछ आदि के लिंग का निर्णय करने में कठिनाई होती है।

क्र0 सं0	नाम वस्तु	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग

1.	शरीर के अंगों के नाम	बाल, सिर, मस्तक, बाल, ओंठ, दाँत, मुँह, कान, गला, हाथ, पाँव, नख, रोग	आँख, नाक, जीभ, जाँघ, खाल, नस
2.	धातुओं के नाम	सोना, रूपा, ताँबा, पीतल, लोहा, सीसा, टीन, काँसा	चाँदी, मिट्टी, धातु
3.	रत्नों के नाम	हीरा, मोती, माणिक, मूँगा, पन्ना	मणि
4.	पेड़ों के नाम	पीपल, बरगद, सागौन, शीशम, अशोक	नीम, जामुन, कचनार
5.	अनाज	जौ, गेहूँ, चावल, चना, मटर, उड़द, तिल	मक्का, ज्वार, मूँग, अरहर
6.	द्रव पदार्थ	घी, तेल, पानी, दही, मही, सिरका, शरबत, अतर, आसव, अवलेह	छाछ, स्याही, मसि, चाय, शराब, कॉफी
7.	जलस्थल के नाम	देश, नगर, द्वीप, पहाड़, समुद्र, सरोवर, आकाश, पाताल, घर	नदी, झील, घाटी
8.	महीनों के नाम	मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर	जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई

लिंग का संबंध शब्दों के रूप से होता है, वस्तुओं से नहीं, जैसे–

- जो शब्द सदैव पुल्लिंग रूप में लिखे जाते हैं, जैसे–पक्षी, उल्लू, कौआ, भेड़िया, चीता, खटमल, केंचुआ, घुन।
- जो शब्द सदैव स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं, जैसे–कोयल, मैना, गिलहरी, जोंक, तितली, मक्खी, मछली।

इन शब्दों में जब स्त्रीलिंग और पुल्लिंग का भेद करना आवश्यक होता है, तब इनके पूर्व पुल्लिंग के लिए 'नर' और स्त्रीलिंग के लिए 'मादा' शब्द का प्रयोग कर देते हैं, जैसे–नर उल्लू, नर मछली–मादा मछली।

पदों से सम्बन्धित शब्द के पुल्लिंग या स्त्रीलिंग नहीं बनाया जायगा। यथा–हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू थे। भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर किया था। प्रशिक्षक द्वारा निम्नलिखित चार्ट के द्वारा पुल्लिंग और स्त्रीलिंग बनाने के नियमों पर बात की जाये–

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**	**नियम**
लड़का घोड़ा काला	लड़की घोड़ी काली	नाना बेटा मुर्गा	नानी बेटी मुर्गी	दादा चाचा मौसा	दादी चाची मौसी	'आ' के स्थान पर 'ई' लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है।
छात्र प्रिय आचार्य	छात्रा प्रिया आचार्या	शिष्य महोदय भवदीय	शिष्या महोदया भवदीया	माननीय पूज्य कृष्ण	माननीया पूज्या कृष्णा	'अ' के स्थान पर 'आ' लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है।
गोप दास	गोपी दासी	देव पहाड़	देवी पहाड़ी	पुत्र कबूतर	पुत्री कबूतरी	'अ' के स्थान पर 'ई' लगाकर

चूहा डिब्बा	चूहिया डिबिया	कुत्ता बेटा	कुतिया बिटिया	बूढ़ा चिड़ा	बूढ़िया चिड़िया	'आ' को 'इया' में बदलकर
माली भंगी तेली	मालिन भंगिन तेलिन	धोबी मालिक पुजारी	धोबिन मालकिन पुजारिन	नाग ग्वाला सुनार	नागिन ग्वालिन सुनारिन	पुल्लिंग शब्द में 'इन' जोड़कर। यदि पुल्लिंग शब्द ईकारांत हो तो उसे भी इकारांत रूप में दिया जाता है।
ओझा गरु	ओझाइन गुरुआइन	बनिया लाला	बनियाइन लालाइन	पंडित दूबे	पंडिताइन दूबाइन	'आइन' जोड़कर
सेठ नौकर	सेठानी नौकरानी	देवर मेहतर	देवरानी मेहतरानी	जेठ चौधरी	जेठानी चौधरानी	'अ' के स्थान पर 'आनी' जोड़कर
ऊँट	ऊँटनी	शेर	शेरनी	सिंह	सिंहनी	'नी' जोड़कर
बालक सेवक	बालिका सेविका	लेखक अध्यापक	लेखिका अध्यापिका	पाठक नायक	पाठिका नायिका	'इका' जोड़कर
श्रीमान् शक्तिमान	श्रीमती शक्तिमती	बलवान आयुष्मान	बलवती आयुष्मती	भाग्यवान गुणवान	भाग्यवती गुणवती	'मान' को 'मती' और 'वान' को 'वती' करके
कुछ अन्य शब्द	कवि बैल भाई विद्वान	कवयित्री गाय बहन विदुषी	वर हाथी दूल्हा सम्राट	वधू हथिनी दुल्हन सम्राज्ञी	युवक पिता ससुर नर	युवती माता सास नारी

प्रशिक्षु बच्चों को लिंग के बारे में भलीभाँति बोध कराने के पश्चात् उनसे सम्बन्धित गतिविधि भी करायें।

गविविधि–(1) प्रशिक्षक बच्चों को पुल्लिंग शब्दकार्ड दिखायेंगे और उनसे उसका स्त्रीलिंग पूछेंगे। बच्चे यदि नहीं बता पा रहे हैं तो उन्हें स्त्रीलिंग शब्द कार्ड दिखाएँ। अन्य पुल्लिंग–स्त्रीलिंग शब्दों के लिए यही क्रिया बार–बार करें।

गविविधि–(2) प्रशिक्षक बच्चों को गोल घेरे में बैठा दें। पुल्लिंग शब्दों के कार्ड उन्हें दे दें। स्त्रीलिंग शब्दों के कार्ड फर्श पर फैला दें। पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द फर्श पर पड़े कार्डों में से खोजने को कहें। पुल्लिंग शब्दों के सही स्त्रीलिंग शब्द ढूढ़ने वाले बच्चों को प्रोत्साहित करें।

1. नीचे लिखे अशुद्ध वाक्यों को लिंग के अनुसार शुद्ध करके लिखिए–

(क) रेखा का पुत्री आज स्कूल नहीं गया.....

(ख) माधूरी की बेटा रो रही थी.....

(ग) उसका बहनोई बाजार में मिली थी.....

(घ) पुजारी ने घंटा बजाई.....

2. नीचे लिखे वाक्यों को लिंग के अनुसार शुद्ध करके लिखिए–

(क) अवधेश का संतान बड़ा सुशील है.....

(ख) दो बच्चियाँ उधर जा रहे थे.....

(ग) अभिनेत्री पर्दे पर दिखाई पड़ा.....

(घ) आज हलवाई दुकान पर नहीं था.....

(ड.) कवयित्री गीत सुना रहे थे.....

3. नीचे लिखे वाक्यों का स्त्रीलिंग शब्द बनाइए–

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**
बूढ़ा	.....	नर चीता	.....
पुजारी	.....	विद्वान	.....
हाथी	.....	काव्य	.....

मूल्यांकन–(1) प्रशिक्षु प्रतिदिन एवं प्रत्येक गतिविधि के दौरान अवलोकन करते हुए मूल्यांकन करते रहें। यदि किसी स्तर पर कोई कमी हो तो बच्चों से पुनः व्यक्तिगत या छोटे समूह में कार्य करने को दें एवं इस दौरान अवलोकन करें।

(2) बच्चों से लिंग कितने प्रकार के होते हैं? लिंग किसे कहते हैं? तथा पुल्लिंग, स्त्रीलिंग की परिभाषा भी पूछ सकते हैं। ये सभी क्रियाएँ समूह बनाकर यदि कराया जायेगा तो बच्चों में रोचकता एवं उत्साह की भावना बनी रहेगी। बच्चों को प्रोत्साहित करने हेतु सभी समूहों से तालियाँ बजवायें।

काल

क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

काल के भेद–काल के तीन भेद हैं (1) वर्तमान काल (2) भूतकाल (3) भविष्य काल

1. **वर्तमान काल**–जो समय चल रहा है उसे वर्तमान काल कहते हैं। इसमें क्रिया शुरू हुई रहती है पर समाप्त नहीं होती, जैसे–राम जाता है, माधुरी जा रही है।

वर्तमान काल के भेद–वर्तमान काल के निम्नलिखित भेद हैं–

(क) सामान्य वर्तमान–सामान्यतया जिस काल में कार्य का होना पाया जाता है, उसे सामान्य वर्तमान कहते हैं। इसमें क्रिया के अन्त में ता है, ती है, ते हैं आदि आते है। जैसे– लड़की स्कूल जाती है, लड़का किताब पढ़ता है, बच्चे खेलते हैं।

(ख) अपूर्ण वर्तमान–इससे यह जानकारी होती है कि काम इस समय चल रहा है। इसमें क्रिया के साथ रहा है, रही है, रहे हैं आदि होते हैं। जैसे–लड़कियाँ स्कूल जा रही हैं, महेश खाना खा रहा है, लड़के किताब पढ़ रहे हैं।

(ग) संदिग्ध वर्तमान–जिस क्रिया से कार्य के वर्तमान काल में होने का संदेह हो उसे संदिग्ध वर्तमान कहते हैं, जैसे–शायद यह फल तोड़ता हो, शोभा कक्षा में पढ़ती होगी, शायद वह जा रहा हो।

(घ) पूर्ण वर्तमान–जिस क्रिया से वर्तमान काल में ही क्रिया के पूर्ण होने का बोध हो। जैसे उसने पढ़ा है, रमेश विद्यालय जा चुका है।

(ड.) पूर्ण सातत्य वर्तमान–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि क्रिया पहले से आरंभ होकर वर्तमान में लगातार चल रही है, उसे पूर्ण सातत्य वर्तमान कहते हैं। जैसे–मैं यह काम पहले से ही करता रहा हूँ। तुम पढ़ते रहे हो।

2. भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से ज्ञात हो कि कार्य समाप्त हो चुका है, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं, जैसे–वह गया, प्रज्ञा सो गयी, चिड़िया उड़ गयी।

(क) सामान्य भूत–क्रिया के जिस रूप से सामान्य रूप से भूतकाल का बोध हो, अर्थात् सामान्यतया बीते समय का पता चले, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं, जैसे–वह गया, अश्विनी ने रोटी खायी, विद्यालय का उद्घाटन हुआ, बच्चों ने पुस्तक पढ़ी।

(ख) अपूर्ण भूतकाल–क्रिया भूतकाल में आरम्भ हो चुकी हो और अभी पूरी न हुई हो, बराबर चल रही हो, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। जैसे–सीता पढ़ रही है, मोंटी जा रहा था, अनुराधा गीत गा रही थी।

(ग) पूर्ण भूतकाल–जिस क्रिया से कार्य के भूतकाल में पूर्ण होने का बोध होता है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं। जैसे–राम पुरस्कार पा चुका था, उसने फल खाये थे, नरेन्द्र भोजन कर चुका था।

(घ) आसन्न या तत्कालिक भूतकाल–जब क्रिया अभी शीघ्र ही पूर्ण हुई हो तो आसन्न भूतकाल कहा जाता है, जैसे–दिव्या अभी गई थी, गीता गई थी।

(ड़) संदिग्ध भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से संदेह बना हो कि कार्य अभी पूरा हुआ है या नहीं वहा संदिग्ध भूतकाल होता है, जैसे–वह दिल्ली चली गयी होगी, विवेक दिल्ली पहुँच गया होगा।

(च) हेतु हेतुमद भूतकाल–जिस क्रिया से ज्ञात हो कि क्रिया भूतकाल में होने वाली थी पर किसी कारण से नहीं हो सकी, उसे हेतु हेतुमद् भूतकाल कहते हैं, जैसे–वह परिश्रम से पढ़ती तो फेल न होती। यदि वे जागते रहते तो चोरी न होती।

3. भविष्यत् काल–क्रिया के जिस रूप से ज्ञात हो कि कार्य होने वाला है उसे भविष्यकाल कहते हैं, जैसे–वह जायेगा, वह सोयेगा, वे पढ़ेंगे। भविष्यकाल के भेद–भविष्यकाल के दो भेद हैं–

(क) सामान्य भविष्यकाल–जिस क्रिया से कार्य के सामान्य रूप से भविष्य में होने का पता चले, उसे सामान्य भविष्यकाल कहते हैं, जैसे–रंजना स्कूल जायेगी, वे किताब पढ़ेंगे, संदीप आज आयेगा।

(ख) सम्भाव्य भविष्यतकाल–क्रिया के जिस रूप से क्रिया के भविष्य में होने की संभावना हो, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं, जैसे–संभव है, वह कल आये, शायद वह कल चला जाय।

काल के बारे में बच्चों को पूर्णतः जानकारी कराने के पश्चात् प्रशिक्षु बच्चों से कुछ गतिविधियाँ भी करायें जिससे यह आश्वस्त हो सकें कि बच्चों ने काल के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली है अथवा नहीं।

गतिविधि–1. प्रशिक्षु बच्चों को तीन समूह में बाँट दें, तत्पश्चात् श्यामपट्ट पर तीनों काल के वाक्यों को मिश्रित करके लिख दें। एक–एक समूह को एक–एक काल का वाक्य छाँटकर लिखने को कहें। जो समूह सही–सही वाक्य लिख लेगा, उसके लिए प्रोत्साहन हेतु ताली बजवायें। ध्यान रहे इसके लिए 10 मिनट का समय निर्धारित किया जाय। जो बच्चे नहीं बता पा रहे हैं प्रशिक्षु उनकी सहायता करें तथा प्रोत्साहित करें।

गतिविधि–2. प्रतिभागियों को गोल घेरे में खड़ा करें। तीनों काल के अलग–अलग नाम के कार्ड जैसे–वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यकाल तैयार रखें। फ्लैश कार्डों को फर्श पर पलट कर रखें। प्रतिभागियों की संख्या (1, 2, 3, 4.....) निर्धारित करें। कोई संख्या बोलें। बोली गयी संख्या वाला प्रतिभागी कार्ड के पास जाकर कार्ड उठायेगा। कार्ड पर लिखे काल का नाम पढ़कर उसका एक वाक्य बनाकर बोलेगा। इसी प्रकार क्रमवार सभी प्रतिभागियों से यह कार्य कराया जायेगा। सभी बच्चे प्रतिभाग करें इसका ध्यान रखना आवश्यक है।

पाठ–8.

पाठ्यवस्तु का मौन वाचन करते हुए उसमें निहित विचारों, भावों एवं तथ्यों को समझना

वाचन वह प्रक्रिया है जो हमारे मुख से विभिन्न भाषिक ध्वनियों के समूह के रूप में स्फुटित होती है। बच्चे सार्थक और निरर्थक शब्दों का उच्चारण करते हुए धीरे–धीरे बोलने की स्थिति में पहुँचते हैं। विद्यालय में जब बच्चा प्रवेश लेता है तो उसे अपना नाम एवं माता–पिता का नाम, घर का पता आदि बोलना सिखा दिया जाता है। धीरे–धीरे पुस्तकों के अवलोकन और शिक्षण द्वारा बच्चे शुद्ध बोलना, समझना और लिखना सीखते हैं। किसी भी भाषा में अंकित वाक्यों को शुद्ध और सही ढंग से बोलकर पढ़ना ही मौन वाचन है। वाचन के दो प्रकार होते हैं–(1) सस्वर वाचन (2) मौन वाचन

सस्वर वाचन में गद्य व पद्य के अंशों को उचित आरोह–अवरोह के साथ उच्चारण किया जाता है। मौन वाचन में बिना उच्चारण के गद्य व पद्य को पढ़कर उसके विचार तत्व को ग्रहण किया जाता है। कहानी, उपन्यास, समाचार पत्र आदि मौन वाचन द्वारा पढ़े जाते हैं। वाचन की पृष्ठभूमि पर ही मौन वाचन की सफलता निर्भर है। वाचन की कुशलता से ही हमें वार्तालाप या सम्भाषण का ढंग आता है। दूसरे के वाचन को सुनकर बच्चे अनुकरण द्वारा वाचन कला में प्रवीण होते हैं। इसलिए कक्षा–शिक्षण में सस्वर वाचन एवं मौन वाचन की दक्षता बच्चों में विकसित करना अत्यन्त आवश्यक है। इस विषय पर विस्तार से चर्चा आवश्यक है–

सस्वर वाचन दो प्रकार से होते हैं–

- शिक्षक द्वारा आदर्श वाचन
- विद्यार्थियों द्वारा अनुकरण वाचन

वाचन में बालक अनेक अशुद्धियाँ करते हैं। वर्णों, शब्दों तथा वाक्यों का शुद्ध उच्चारण स्वयं करके उनका अनुकरण वाचन कक्षा के विद्यार्थियों से करा लेना चाहिए। आदर्श पाठ में ध्वनि का आरोह–अवरोह, शुद्ध उच्चारण, भावाभिव्यक्ति एवं उपयुक्त शारीरिक संकेतों का ध्यान रखकर अध्यापक को वाचन करना चाहिए, क्योंकि वाचन पर ही पाठ की सफलता निर्भर करती है। वाचन ऐसा भावपूर्ण हो कि पाठ्यविषय शब्द अर्थ, और भाव सब स्पष्ट हो जाय। इसके अतिरिक्त सस्वर पाठ से छात्रों में आत्मविश्वास की भावना रहती है। संकोच का आवरण हट जाता है। सस्वर वाचन से ही काव्य का आनन्द उठाया जा सकता है लेकिन प्रभावशाली सस्वर वाचन तभी कहा जा सकता है जबकि वाचन में निर्णय की कुशलता, उच्चारण की शुद्धता तथा भाव की स्पष्टता हो। आदर्श वाचन के बात आता है मौन वाचन।

मूल्यांकन–

- वाचन की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
- वाचन कितने प्रकार का होता है?
- वाचन का क्या महत्त्व है?
- सस्वर वाचन कितने प्रकार का होता है?

मौन वाचन का महत्त्व–लिखित सामग्री को मन ही मन चुपचाप बिना आवाज निकाले पढ़ना मौन वाचन कहलाता है। मौन वाचन में ओठ नहीं हिलता। जड़ महोदय का कथन है कि जब बालक पैरों से चलना

सीख जाता है तो घुटनों के बल खिसकना छोड़ देता है। इसी प्रकार भाषा के क्षेत्र में बालक जब मौन वाचन की कुशलता प्राप्त कर लेता है तो सस्वर वाचन का अधिक प्रयोग छोड़ देता है। मौन वाचन में निपुणता का आना व्यक्ति के विचारों की प्रौढ़ता का द्योतक है और भाषायी दक्षता पर अधिकार का सूचक है।

मौन वाचन में समय की भी बचत होती है। श्रीमती ग्रे रीस के एक परीक्षण द्वारा यह पता चलता है कि कक्षा छह के बालक एक मिनट में सस्वर वाचन में 170 शब्द बोलते हैं और मौन वाचन में इतने ही समय में 210 शब्द बोलते हैं।

मौन वाचन में मितव्ययिता होने के कारण दैनिक जीवन में व्यक्ति इसी का अधिकाधिक प्रयोग करते हैं, जबकि सस्वर वाचन अधिकतर शालेय (पाठशाला) जीवन तक ही सीमित होता है।

मौन वाचन द्वारा एक छात्र दूसरे छात्र के वाचन में बाधा उपस्थित नहीं करता। सामूहिक वाचन के लिए मौन वाचन सर्वोत्तम है।

मौन वाचन के समय छात्र चिन्तन भी करता चलता है। उसका ध्यान केन्द्रित होता है। यह क्रिया सोद्देश्य होती है। सस्वर वाचन में छात्र का ध्यान उच्चारण पर अधिक रहता है। अतः कभी–कभी वह बिना अर्थ समझे ही पढ़ता जाता है।

मौन वाचन द्वारा स्वाध्याय की आदत पड़ती है। स्वाध्याय में रूचि उत्पन्न होती है और छात्र वाचन द्वारा आनन्द प्राप्त करने का प्रयास करता है। आनन्द प्राप्त करने के लिए पढ़ना प्रायः मौन रूप में होता है।

प्रारम्भिक कक्षाओं में सस्वर वाचन जितना लाभकारी है, उच्च कक्षाओं में उससे कहीं लाभप्रद मौन वाचन है। हम शीघ्रतापूर्वक बिना किसी को असुविधा दिए कम समय में किसी वस्तु का भाव ग्रहण मौन वाचन से ही कर सकते हैं। इसमें श्रम करना पड़ता है। भावों की गहरी पैठ के लिए गहन–मनन एवं अध्ययन के लिए मौन वाचन का सहारा लेना पड़ता है।

मौन वाचन में होंठों में किसी प्रकार की ध्वनि नहीं निकलनी चाहिए। केवल मस्तिष्क और नेत्रों द्वारा ही सम्पूर्ण क्रिया हो जानी चाहिए। कक्षा के मौन वाचन के अवसर पर अध्यापक को छात्रों के पठन का निरीक्षण करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि छात्र मौन पठन के स्थान पर फुसफुसा कर तो नहीं पढ़ रहे हैं, पंक्तियों पर ऊँगलियाँ तो नहीं फेर रहे हैं।

मूल्यांकन–

- मौन वाचन की दो विशेषताएँ बताइए?
- मौन वाचन में क्या–क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

उद्देश्य–

- मौन वाचन द्वारा छात्र वाचन की गति का विकास कर सके एवं पठित सामग्री का अर्थ ग्रहण कर सके। अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया है। छात्र मौन वाचन के द्वारा अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया को अपना सके।
- पठित सामग्री में तथ्यों, भावों एवं विचारों का चयन कर सारांश बता सकना।
- पठित सामग्री पर पूछे गये प्रश्न का उत्तर दे सकना।
- पठित सामग्री से निष्कर्ष निकाल सकना, उपयुक्त शीर्षक दे सकना।

- भाषा एवं भाव सम्बन्धी कठिनाइयाँ सामने रख सकना।
- प्रसंगानुसार अपरिचित शब्दों, उक्तियों एवं मुहावरों के अर्थ का अनुमान कर सकना।
- उपसर्ग, प्रत्यय, संधि विच्छेद द्वारा शब्द का अर्थ जान सकना।
- कोश में शब्द के दिए हुए अनेक अर्थों में से प्रसंगानुसार सही अर्थ जानने की योग्यता आ जाना।
- पू0मा0 स्तर पर शिक्षण के समय शिक्षक को विविध साहित्यिक विधाओं–निबन्ध, कहानी, नाटक, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण आदि के प्रमुख तत्वों की पहचान आवश्यक है यथा–

  (क) निबन्ध की सामान्य शैलीगत विशेषताओं से परिचय जैसे–विषय प्रतिपादन की दृष्टि से विचारों की क्रमबद्धता, पूर्वापर सम्बन्ध, तर्कसम्भतता, विषय की एकता का बोध।

  (ख) शैली की दृष्टि से निबन्धों के भेद कर सकना, यथा–1. विचार प्रधान या भावात्मक 2. विषय परक या व्यक्तिपरक।

  (ग) लेखक के व्यक्तित्व को व्यंजित करने वाले स्थलों की पहचान करना–जैसे–समास शैली में है या व्यास शैली में।

  (घ) नाटक, कहानी या उपन्यास के प्रमुख तत्वों–कथानक, चरित्र, कथोपकथन, उद्देश्य तथा वातावरण की पहचान। परन्तु सस्वर वाचन की भित्ति पर ही मौन वाचन के भाव का निर्माण सुन्दर हो सकता है, क्योंकि सस्वर वाचन के द्वारा ही उत्तम पाठकर्ता के छह गुण–माधुर्य, अक्षरों की स्वष्टता, पदों का पृथक–पृथक उच्चारण, स्वाभाविक सुन्दर स्वर, क्षीरता और लय के अनुसार पढ़ना विकसित किए जा सकते हैं।

मौन वाचन के भेद–

- गम्भीर वाचन
- दुत वाचन

  गम्भीर वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–
- भाषा पर अधिकार करना
- विषयवस्तु पर अधिकार करना
- नवीन सूचना एकत्र करना
- केन्द्रीय भाव की खोज करना

  द्रुत वाचन का सम्बन्ध विस्तृत अध्ययन से है। विस्तृत अध्ययन तब किया जाता है जब हम अधिक सामग्री कम समय में पढ़ना चाहते हैं। द्रुत मौन वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–
- सीखी हुई भाषा का अभ्यास करना
- साहित्य से परिचय प्राप्त करना
- अवकाश का सदुपयोग करना
- सूचना एकत्र करना
- आनन्द प्राप्त करना

  गम्भीर वाचन में पाठ्यवस्तु के प्रत्येक शब्द को पढ़ना व समझना आवश्यक होता

है, द्रुत वाचन में यह आवश्यक नहीं। गम्भीर वाचन में विचारों के चिन्तन–मनन की आवश्यकता पड़ती है, जबकि द्रुत वाचन में सार–ग्रहण पर बल दिया जाता है।

मूल्यांकन–

- मौन वाचन के भेद बताइए?
- गम्भीर वाचन के क्या–क्या उद्देश्य है? बताइए?
- गम्भीर और द्रुत वाचन में क्या अन्तर है?

गतिविधि–1 कुछ अनुच्छेद देकर मौन पठन कराया जाय, फिर उसी पर आधारित प्रश्न पूछे जाय, जिससे बच्चों की समझ विकसित हो सकें।

- बिना समझे पढ़ने वाले बच्चों से पढ़ने के बाद उनकी समझ पर चर्चा करें।
- कहानी सुनाकर या मौन वाचन कराने के बाद शिक्षक उसपर चर्चा करें।
- चित्र दिखाकर बच्चों से उसपर चर्चा करें।
- इसी तरह कविता के भाव पर बच्चों से चर्चा करें।
- हस्तलिखित सामग्री का अर्थग्रहण करते हुए मौन पठन कराएं।
- पाठ्यसामग्री के अलावा अन्य सामग्री (पत्र–पत्रिकाएँ, न्यूजपेपर) का अध्ययन कराएं।
- दूरदर्शन पर दिखाए गए बच्चों के कार्यक्रम को ध्यान से देखने की सलाह दें।

मूल्यांकन–मौन पठन कराते समय अध्यापक को बीच–बीच में बच्चों का अवलोकन करते रहना चाहिए और यह देखना चाहिए कि बच्चे मौन पठन के बताए हुए निर्देशों–यथा–(एकाग्रता, होठों का हिलना, अक्षर पर ऊँगली फेंरना) का पालन कर रहे हैं या नहीं। मौन पठन के बाद बच्चे अध्यापक द्वारा पूछे गये प्रश्नों का (विषयवस्तु) जवाब ठीक ढंग से दे पा रहे हैं या नहीं। अगर वे जवाब दे पा रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि अध्यापक का उद्देश्य सफल हो गया। अगर नहीं दे पा रहे हैं तो अध्यापन की कुशलता में कहीं कमी है। ऐसा करने से बच्चे अध्यापक दोनों का मूल्यांकन साथ–साथ होता चलता है।

पाठ–9

शिक्षक के निर्देशानुसार छोटे–छोटे वाक्य लिखना

कुम्हार चाक पर रखी मिट्टी को अपनी अंगुलियों द्वारा जैसा निर्देश देता है, मिट्टी वैसा ही स्वरूप और आकृति धारण कर लेती है। मिट्टी से ही वह दीपक बनाता है जो अन्धकार को दूर करने में समर्थ होता है। उसी मिट्टी से साज–सज्जा और दैनिक उपयोग की वस्तुओं को बनाने के साथ ही उन मूर्तियों को भी बनाता है जिनके प्रति हमारे मन में आस्था, श्रद्धा और विश्वास है। कहने का अभिप्राय यह है कि वह मिट्टी को जैसा रूप देना चाहता है वह वैसा ही स्वरूप धारण करके हमारे उपयोग की सामग्री बन जाती है। इस कार्य में निर्देशक और अनुपालक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यही स्थिति शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच होती है। प्रारम्भिक अवस्था में बच्चा अक्षर ज्ञान से रहित होता है। शिक्षक के निर्देश का ही प्रभाव होता है कि वह कुछ ही समय में अक्षरों का ज्ञाता हो जाता है और फिर उसे अक्षर से शब्द और शब्द से वाक्य तक आने में समय नहीं लगता।

बालक प्रारम्भ में शब्द फिर वाक्य बोलता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार भाषा का चरम अवयव वाक्य ही है। कभी–कभी शिशु एक ही शब्द बोलता है, किन्तु यह शब्द भी अर्थ की दृष्टि से शब्द न होकर वाक्य ही होता है। उदाहरण के लिए–जब प्यासा शिशु पानी कहता है तो उसका तात्पर्य यह होता है कि पानी लाओ। वाक्य उन सार्थक ध्वनियों का समूह है जिससे व्यक्ति की आकांक्षाओं, विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति होती है।

प्रारम्भिक कक्षाओं में वाक्य रचना का विशेष महत्त्व है। छात्र जब तक शुद्ध वाक्य बनाना नहीं जानते तब तक बड़े निबन्ध वे लिख नहीं सकेंगे। हिन्दी वाक्य रचना की कुछ विशेषताएँ हैं जिनका उल्लेख यहाँ किया जा रहा है। वाक्य रचना की कुछ विशेषताएँ–

- शब्दों का क्रम।
- स्पष्टता।
- आकांक्षा।
- वाक्य की सामर्थ्य।
- मधुरता।
- वाक्य ठीक से रचे जाएँ।
- अनुच्छेद की सफलता वाक्य पर निर्भर।

  विधि सूचक तथा निषेध वाचक वाक्यों की रचना तो सरल है, किन्तु प्रश्नवाचक वाक्य में 'कौन' कहाँ, क्या जैसे शब्द वाक्य में कहाँ रखे जायँ, इसे छात्रों को बताना होगा। विस्मयादिबोधक वाक्य (जैसे–वाह! कितना सुन्दर फूल है यह!) में शब्द क्रम किस प्रकार बदल जाता है, इच्छाबोधक वाक्य (जैसे–ईश्वर करें तुम परीक्षा में सफल हो) कैसे रचा जाता है, आज्ञार्थक वाक्य (जैसे–प्रार्थना के लिए तैयार हो जाओ की क्या विशेषता है और सन्देह वाचक वाक्य (जैसे–मदन परीक्षा में सफल हो गया होगा) में कौन से शब्द महत्त्वपूर्ण हैं–इन बातों की जानकारी छात्रों को दी जानी चाहिए, यदि इन बातों की जानकारी छात्र को नहीं दी जायेगी तो वह अच्छी हिन्दी नहीं लिख सकेगा और उसकी रचना में मौलिकता नहीं आयेगी।

प्रशिक्षु के लिए–वाक्य रचना में मौलिकता लाने के लिए कक्षाओं में छात्रों को क्रियाओं के प्रयोग द्वारा वाक्य रचना करनी होगी तथा उसे उद्देश्य एवं विधेय के प्रति सतर्क रहना होगा। वाक्य रचना में उसे सरल एवं उचित पदों का प्रयोग करना होगा। कर्ण, कटु शब्दों का परित्याग करके भाव और अर्थ के अनुसार शब्द जुटाने होंगे। रचना में मौलिकता के लिए चिन्तन की मौलिकता आधारशिला के रूप में रहती है। बालकों में स्वतंत्र चिंतन की आदत डाली जाय, बहुज्ञ बनाने का प्रयत्न किया जाय और अधिकाधिक वस्तुओं के सम्पर्क में उन्हें आने दिया जाय। उनकी ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित किया जाय, जिससे वे निरीक्षण करके चिन्तन की ओर उन्मुख हो सकें।

प्रश्न यह उठता है कि वाक्य रचना में प्रभावशालिता कैसे लाई जाय। प्रभाविता लाने का पहला साधन है, मानसिक उत्तेजना। वह बात जो हृदय को छूकर मस्तिष्क को उत्तेजित नहीं करती वह प्रभावशाली नहीं हो सकती। वाक्य रचना में संक्षिप्तता का आग्रह होना चाहिए। अनावश्यक विस्तार रचना में प्रभाव को कम कर देता है। अच्छी हिन्दी वाक्य रचना के लिए कुछ बातों का परित्याग भी आवश्यक है–

- वाक्य में वातावरण सम्बन्धी अशुद्धि न हो।
- वाक्य शिथिल न हो।
- अप्रचलित शब्दों का प्रयोग न हो।
- वाक्य में नीरसता एवं कर्णकटुता न हो।
- निरर्थक शब्द न हो।
- प्रवाहहीनता न हो।
- अनावश्यक विस्तार न हो।
- दुरूह शब्दों का प्रयोग न हो।

अच्छी वाक्य रचना के लिए कुछ बातों का प्रयोग अपेक्षित है–

- उपमा का प्रयोग।
- लाघव।
- सरलता।
- प्रवाह।
- पर्यायवाची।
- विलोम।
- लिंग।
- वचन।
- कारक।
- विभक्ति।
- अर्द्धविराम (,)

- अल्पविराम (,)
- प्रश्नवाचक चिह्न (?)
- विस्मयादिबोधक चिह्न (!)
- पूर्णविराम (।)
- कोष्टक ( )

नोट–वर्णों को लिखवाने की गतिविधियों पर भी चर्चा की जा चुकी है। विराम चिह्नों का उल्लेख भी किया जा चुका है।

बच्चों में वाक्य रचना की समझ विकसित हो इसके लिए निम्नलिखित प्रयास किए जा सकते हैं–

भरत	घर	चल
यह	डाल	है
वह	गाय	है

ये सभी शब्द हैं जिन्हें एक क्रम में लगाएँ तो होगा–

(1) भरत घर चल।
(2) यह डाल है।
(3) वह गाय है।

ये तीन शब्दों के समूह हैं। शब्दों के समूह को वाक्य कहेंगे। वाक्य भाषा की पूर्ण इकाई है। इसमें 'ध्वनि', 'शब्द', 'वाक्य' तीनों का उचित संयोजन होता है। वाक्य में प्रयुक्त शब्द 'पद' कहलाते हैं।

ऊपर के दोनों वाक्यों में 'भरत', 'यह' तथा 'वह' कर्ता के शब्द हैं तथा 'जाओ' और 'है' क्रिया है। स्पष्ट है कि वाक्य रचना हेतु कर्ता एवं क्रिया का होना आवश्यक है। वाक्य रचना की समझ से गतिविधियाँ सहायक सिद्ध हो सकती हैं। निम्नलिखित गतिविधियाँ करायें–

गतिविधि–01 कुछ कर्ता एवं क्रिया के फ्लैश कार्ड बना लें। कर्ता को अलग तथा क्रिया को अलग रखें। शिक्षक बच्चे को बुलाकर कर्ता और क्रिया के शब्द निकालने को कहें।

उदाहरणार्थ– मोहन ला – मोहन ला।

गतिविधि–02 अपनी पाठ्यपुस्तक के किसी पृष्ठ पर आए वाक्यों को पहचान कर उनकी संख्या लिखें। बच्चों को पाठ्यपुस्तक में वाक्य दिखाकर वाक्य की पहचान करायी जा सकती है।

गतिविधि–03 कुछ दैनिक उपयोग में आने वाले वाक्यों के बीच के शब्द निकाल दें। इस प्रकार के वाक्य अधिक संख्या में चार्ट पर लिखकर लाएँ। बच्चों से उसकी पूर्ति कराएँ तथा अभ्यास पुस्तिका में लिखने को कहें, जैसे–मैं.....खाता हूँ।

गतिविधि–04 कुछ चित्र, कार्टून, दृश्य, चित्रात्मक कहानी दिखाकर कक्षा कें स्तरानुकूल वाक्य बनवाएँ।

गतिविधि–05 कुछ शब्द, जैसे– क्रिया, संज्ञा, सर्वनाम आदि देकर अधिक से अधिक वाक्य बनवाएँ।

गतिविधि–06 किसी घटना, मेला या विद्यालय में होने वाले कार्यक्रम एवं पशु–पक्षियों आदि पर अधिकतम वाक्य लिखने को कहें।

वाक्य लेखन–त्रुटियाँ व सावधानियाँ–

वाक्य लेखन का तात्पर्य है, भावों एवं विचारों के अनुरूप शब्दों को उपयुक्त क्रम से सजाना। उपयक्त शब्दों का चयन तथा उनके सही क्रमायोजन के अभाव में वाक्य का सही अर्थ कभी भी स्पष्ट नहीं हो सकता। वाक्य ऐसा होना चाहिए जो किसी एक भाव को पूर्णरूप से प्रकट करता हो जैसे–

- वह गाता है।
- वह संगीत सीखता है।
- संगीत सीखने के लिए वह गुरूजी के पास जाता है।

अशुद्धियाँ एवं उनका निवारण–

1. **शब्द–अर्थ संबंधी अशुद्धियाँ**–शुद्ध वाक्य भी शब्द के उचित प्रयोग के कारण दोषपूर्ण हो जाता है, जैसे–

- इतना कह कर नारद जी चल बसे। (अशुद्ध)
- इतना कहने के बाद नारद जी ने प्रस्थान किया। (शुद्ध)

2. **शब्द क्रम संबंधी अशुद्धियाँ**–कभी–कभी बच्चे शब्द का सही अर्थ जानते हुए भी वाक्य की क्रम योजना के बीच शब्दों को सही क्रम में नहीं रखते, जिससे वाक्य गलत हो जाता है, जैसे–

- गंगा को धरती पर लाए भगीरथ ही। (अशुद्ध)
- भगीरथ ही गंगा को धरती पर लाए। (शुद्ध)

3. **कर्ता–क्रिया संबंधी अशुद्धियाँ**–

- शिखा गेंद खेलने मैदान जा रहा था। (अशुद्ध)
- शिखा गेंद खेलने मैदान जा रही थी। (शुद्ध)

4. **वचन–क्रिया संबंधी अशुद्धियाँ**–

- राम गये। (अशुद्ध)
- राम गया। (शुद्ध)
- रमा, अपूर्व व अथर्व गया। (अशुद्ध)
- रमा, अपूर्व व अथर्व गये। (शुद्ध)

5. **'ने' का अशुद्ध प्रयोग**–
   इसका प्रयोग वर्तमान और भविष्य काल में न होकर आसन्न या पूर्ण भूतकाल में होगा। जैसे–

- ज्योति ने किताब पढ़ रही है। वर्तमान काल (अशुद्ध)
- ज्योति ने किताब पढ़ेगी। भविष्य काल (अशुद्ध)
- ज्योति ने किताब पढ़ा। पूर्ण भूतकाल (शुद्ध)

सकर्मक क्रिया के साथ 'ने' का प्रयोग होगा। अकर्मक क्रिया के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होगा। जैसे–

- अमजद ने पढ़ाई की। शीला ने भी पढ़ाई की।
  'ने' के साथ क्रिया का लिंग एवं वचन कर्म के अनुसार रहता है।

6. **पुनरूक्ति दोष**–समान अर्थ वाले शब्दों की वाक्य में पुनरावृत्ति की अशुद्धि नहीं होनी चाहिए। जैसे–

- वह कलम वापस लौटाने आयी। (अशुद्ध)
- वह कलम लौटाने आयी। (शुद्ध)
- मेरे लिए शीतल ठण्डा जल लाओ। (अशुद्ध)
- मेरे लिए शीतल जल लाओ। (शुद्ध)
- राजू की पढ़ाई, अध्ययन ठीक नहीं है। (अशुद्ध)
- राजू की पढ़ाई ठीक नहीं है। (शुद्ध)

7. **अन्य विभक्तियों के प्रयोग**–का, की, के, को, पर, ऊपर आदि विभक्तियों के अनावश्यक प्रयोग से बचने का अभ्यास करना चाहिए। जैसे–

- मेज के ऊपर किताब रखी है। (अशुद्ध)
- मेज पर किताब रखी है। (शुद्ध)
- अखबार को पढ़कर जानकारी मिली। (अशुद्ध)
- अखबार पढ़कर जानकारी मिली। (शुद्ध)

मूल्यांकन–शिक्षक बच्चों से कुछ लेखन अभ्यास कार्य कराएँ–

1. चित्र देकर वाक्य बनाएँ–

1–सुबह उठते हैं – बिस्तर से उठने का चित्र।
2– – मंजन करने का चित्र।
3– – कसरत करने का चित्र।
4– – नहाने का चित्र।
5– – खाने का चित्र।
6– – स्कूल जाने का चित्र।
7– – प्रार्थना करने का चित्र।
8– – पढ़ने का चित्र।

2. वाक्य बनाएँ–

गाय – गाय दूध देती है।
मुर्गा –
बस –
बैलगाड़ी –

3. इन शब्दों से वाक्य बनाइए–

कहानी – कहानी सुनना अच्छा लगता है।
कविता –
गीत –
मछली –

चिड़िया –

4. पढ़ें और लिखें–

- समय पर स्कूल पहुँचना चाहिए।
  .....।
- कूड़ा–करकट को कूड़ेदान में डालना चाहिए।
  .....।
- सड़क पार करते समय दाएँ–बाएँ देखना चाहिए।
  .....।
- खाना खाने से पहले हाथ धुलना चाहिए।
  .....।

5. सोचें और लिखें–

बारिश से बचने के लिए क्या–क्या करते हैं? लिखिए–

6. किसी एक पर 10 पंक्ति लिखें–

गाय, कुत्ता, मेला।

7. कविता को पूरा करें–

- मछली जल की रानी है। इसके अतिरिक्त शिक्षक बीच–बीच में वाक्य, अनुच्छेद का लेखन बच्चों से कराएँ।

पाठ–10

औपचारिक, अनौपचारिक पत्र लिखना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे समाज के विभिन्न लोगों–परिवार, सम्बन्धियों, इष्टमित्रों, परिचितों तथा समाज के अन्य लोगों से सम्बन्ध बनाये रखने के लिए (इलेक्ट्रानिक मीडिया के अतिरिक्त) पत्राचार करना पड़ता है। अपने मनोभावों को दूसरे तक पहुँचाने के लिए पत्र का सहारा लिया जाता है। अतः प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह अच्छी तरह पत्राचार करने में समर्थ हो। पत्र लेखन में दक्षता प्राप्त करने के उद्देश्य से ही इस इकाई का निर्माण किया गया। अतः इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- पत्र के महत्त्व से परिचित हो सकेंगे।
- पत्र लेखन की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- पत्र के प्रकार जान सकेंगे।
- औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र में अन्तर समझ सकेंगे।
- अपने मनोभावों, व्यक्तिगत समस्याओं, विचारों आदि की लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित कर सकेंगे।

विषय विस्तार–

एक पत्र में उसके लेखक की भावनाएं ही व्यक्त नहीं होती बल्कि उसका व्यक्तित्व भी उभरता है। इससे लेखक के चरित्र, दृष्टिकोण, संस्कार, मानसिक स्थिति, आचरण आदि सभी एक साथ उभरते हैं। अतः पत्र लेखन एक प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्ति है। जीवन में पग–पग पर हम सभी को पत्र लेखन का सहारा लेना पड़ता है। जैसे–प्रार्थना–पत्र, आवेदन–पत्र, सामाजिक सम्बन्धों एवं विविध व्यवसायों तथा शासकीय, अशासकीय अनेक कार्यों हेतु पत्र का आश्रय लेना पड़ता है। संक्षेप में पत्र के महत्त्व को इस प्रकार देखा जा सकता है–

- पत्र में अपनी बात विस्तार से कही जा सकती है।
- पत्र को पढ़कर अपनेपन का जो भाव झलकता है, वैसा अन्य साधनों द्वारा नहीं।
- अधिकारियों आदि तक अपनी बात पहुँचाने के लिए केवल पत्र को ही माध्यम बनाया जा सकता है।
- पत्र द्वारा लेखक की योग्यता का अनुमान लगाया जा सकता है।
- पत्र द्वारा पत्र–लेखक अपनी बात प्रभावशाली ढंग से क्रमानुसार तथा व्यवस्थित कह सकता है।

पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें (पत्र लेखन की विशेषताएँ)

- पत्र की भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।
- पत्र में व्यक्त की गयी बात संक्षिप्त, सारगर्भित, प्रभावशाली तथा व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत की गयी हो।
- पत्र पढ़कर पाठक को लेखक के अभिप्राय के विषय में किसी प्रकार का भ्रम नहीं होना चाहिए।
- पत्र में भेजने वाले का नाम, पता, दिनांक आदि का स्पष्ट उल्लेख हो।

पत्र के प्रकार–पत्रों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) औपचारिक पत्र (2) अनौपचारिक पत्र

(1) औपचारिक पत्र–

औपचारिक पत्र ऐसे लोगों को लिखा जाता है जिनसे लिखने वाले का कोई व्यक्तिगत या पारिवारिक संबंध नहीं होता है। जैसे–

- विद्यालय के प्रधानाचार्य को लिखा गया प्रार्थना–पत्र।
- अधिकारियों को लिखा गया पत्र।
- समाचार पत्र के संपादक को लिखा गया पत्र।
- पुस्तक विक्रेता या किसी व्यापारी आदि को लिखा गया पत्र।
- नौकरी आदि के लिए आवेदन–पत्र।

(2) अनौपचारिक पत्र–

इस वर्ग में वैयक्तिक तथा पारिवारिक पत्र आते हैं। इस प्रकार के पत्र माता–पिता, भाई–बहन, दादा–दादी, मित्र–सहेली तथा सम्बन्धियों को लिखे जाते हैं।

मूल्यांकन–

पत्र लेखन के अंग–पत्र लेखन के निम्नलिखित अंग होते हैं–

1. **स्थान, दिनांक तथा पता**– पत्र के सबसे ऊपर दाहिने किनारे पत्र लिखने वाले के स्थान, दिनांक और पता लिखा जाता है।
2. **संबोधन एवं अभिवादन** – जिसे पत्र लिखा जा रहा है, उसकी आयु, योग्यता, संबंध आदि के अनुरूप शब्द।
3. **विषयवस्तु**– संबोधन/अभिवादन के बाद लेखक को विषयवस्तु पर आ जाना चाहिए, इसमें लेखक की दक्षता का पता चलता है।
4. **समाप्ति**– पत्र के अन्त में पत्र लेखक पत्र पाने वाले से अपने संबंध के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग करता है तथा उसके नीचे हस्ताक्षर भी करता है।

बच्चों के लिए–

प्रशिक्षु बच्चों को पत्र लेखन में निपुण बनाने के लिए शुरूआत में कुछ इस प्रकार के कार्य करा सकते हैं–

- दादी तुमसे नाराज हो गयी है, तुमसे बात भी नहीं कर रही हैं। तुम्हें उनसे कहानी सुननी है। चलो अब दादी को पत्र लिखकर उनसे अपनी शरारत के लिए माफी माँगो और कहानी सुनाने का अनुरोध करो।
- तुम्हारी माँ बाजार जा रही है, तुम्हें भी उनके साथ जाना है। चलो माँ को पत्र लिखकर कहो कि तुम्हें भी उनके साथ जाना है।
- बड़ा भाई तुम्हारी पसन्द का खेल खेल रहा है, तुम्हें भी उसके साथ खेलना है। चलो, भाई को पत्र लिखकर बोलो कि वह तुम्हें भी अपने साथ खिलाए।

- तुम्हें विद्यालय ले जाने के लिए अंग्रेजी की कापी, पेन्सिल, कला के लिए रंग की जरूरत है। तुम अपने पापा को एक कागज पर लिखकर ये सारी चीजें लाने के लिए कहो।
- तुम्हारा जन्मदिन है और तुम अपने दोस्त को बुलाना चाहते हो, एक पत्र लिखकर उसे अपने जन्मदिन पर घर आने के लिए कहो।
- नववर्ष/शिक्षक दिवस/बाल दिवस जैसे अवसर पर शुभकामना संदेश लिखकर मित्रों और संबंधियों को आदान–प्रदान करो।

जब बच्चे इस तरह के पत्र लिखना सीख जाएं तब उनसे स्थान, दिनांक, संबोधन, अभिवादन आदि की बात करनी चाहिए। इसके बाद क्रमशः निम्नलिखित चरण में कार्य कराएं–

- पत्र का एक प्रारूप बनाकर दें, जिसमें संबोधन/अभिवादन, स्थान, दिनांक, विषय, पत्र लिखने वाले का नाम, स्थान आदि कागज पर निर्धारित स्थान पर लिख दें तथा मूल कथ्य वाला हिस्सा खाली छोड़ दें। अब बच्चों से उस बारे में चर्चा कर मूल कथ्य लिखने को कहिये।
- एक प्रारूप में विषय, मूल कथ्य, दिनांक आदि सब विवरण लिखकर संबोधन/अभिवादन वाला हिस्सा बच्चों से स्वयं लिखने को कहें।
- एक प्रारूप में पत्र की सारी औपचारिकता प्रशिक्षु पूरी कर दे केवल विषय वाला हिस्सा छोड़ दे। बच्चों से पूरा पत्र पढकर उस हिस्से को पूरा करने को कहें।

इस प्रकार चरण दर चरण बच्चा पत्र लेखन में अवश्य निपुण हो जाएगा।

मूल्यांकन–

- अपने पिता जी को पत्र लिखकर उनसे अपनी पढ़ाई के लिए पैसे की माँग करो।
- अस्वस्थ होने के कारण दो दिन के अवकाश के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

बच्चों को औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्र में प्रयुक्त होने वाले सम्बोधन एवं अभिवादन की जानकारी अवश्य दे दें, जिसे इस प्रकार देखा जा सकता है।

पत्र का प्रकार	**संबंध**	**आरम्भ**	**समापन**
अनौपचारिक /व्यक्तिगत	माता–पिता, बड़े भाई, बहन, आदरणीय संबंधी	माननीय, आदरणीय, पूजनीय, पूज्य, परम पूज्य	आपका आज्ञाकारी पुत्र/पुत्री स्नेहाकांक्षी/स्नेहभाजन
	मित्र या सहपाठी	प्रिय मित्र, मित्रवर, प्रिय बंधु	तुम्हारा अपना, अभिन्न मित्र आदि
	अपने से छोटों को	प्रिय, परम प्रिय, प्रियवर, चिरंजीवी, प्रिय (नाम)	तुम्हारा शुभचिन्तक, शुभेच्छु, शुभाकांक्षी
औपचारिक / व्यक्तिगत	पुस्तक विक्रेता, बैंक मैनेजर या अन्य व्यापारी	श्रीमान जी/महोदय, प्रिय महोदय, माननीय महोदय, प्रबंधक महोदय	भवदीय, निवेदक, आपका

आवेदन पत्र	प्रधानाचार्य	श्रीमान जी, मान्यवर	विनीत, प्रार्थी, भवदीय, आपका आज्ञाकारी
कार्यालयीय पत्र	स्पादक, नगर निगम, अधिकारी, केन्द्रीय मंत्री, पोस्टमास्टर आदि	आदरणीय संपादक महोदय, मान्यवर महोदय, मान्य महोदय	भवदीय, प्रार्थी, निवेदक, विनीत, कृपाकांक्षी

पाठ–11.
परिचित विषय पर मौलिक रूप से लिखना

लेखन के दो पक्ष होते हैं–वाह्य पक्ष या यांत्रिक पक्ष, जिसमें वर्ण, वर्तनी, विराम चिह्न, वाक्य गठन आदि होता है। इस पक्ष में अनुकरण आदि के आधार पर लिखना समाहित है। दूसरा है–आन्तरिक पक्ष जिसे मौलिक अभिव्यक्ति पक्ष भी कहते हैं। वाह्य या यांत्रिक पक्ष पर ध्यान देने के साथ ही आन्तरिक पक्ष का स्तरोन्नयन आवश्यक है। इसके लिए मौलिक या स्वतन्त्र लेख पर जोर देना चाहिए। मौलिकता तभी आ सकती है जब कल्पना, तर्क एवं चिन्तन शक्ति का विकास हो। इस हेतु बच्चों/प्रशिक्षुओं को अभ्यास के पर्याप्त अवसर देना आवश्यक है। यह कार्य परिवेश से संबंधित विषयों पर जिससे बच्चे/प्रशिक्षु पूर्व परिचित हों, कराया जाना चाहिए। विषय यदि आस–पास के हों, पहले से जानकारी हो तो लेखन प्रभावी होता है। अतः शुरूआत में ऐसे ही विषय रखना चाहिए जिसका लिखने वाले को अनुभव हो। जैसे–देखे गए दृश्य, चित्र, घटना, अनुभूत यात्रा, प्रसंग आदि जिसे पढ़ी या सुनी गयी विषयवस्तु के बारे में जानकारी नहीं होती, उस पर विचार व्यक्त करना कठिन होता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में यह प्रयास होना चाहिए कि बच्चा अपनी कल्पनाओं को लिपिबद्ध कर सके। इससे उसके चिन्तन को एक नई दिशा मिलती है।

उद्देश्यः–

1. छात्रों में लिखित रूप से भाव व्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न करना।
2. उनमें तार्किक वृद्धि से विचार–विमर्श करने की क्षमता जाग्रत करना।
3. उनको शुद्ध, बोधगम्य, ललित एवं प्रभावोत्पादक भाषा में भाव व्यक्त करने की कला में पटु करना तथा उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति को जाग्रत करना।
4. विषय के अनुसार भाषा शैली अपनाने के कौशल का विकास करना।
5. क्रमिक रूप से भावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।

इसके लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ अपनायी जा सकती हैं–

गतिविधिः–01 रिक्त स्थान की पूर्ति द्वारा कहानी लिखना

बच्चों को रिक्त स्थान वाले एक–एक अनुच्छेद दे दीजिए साथ ही कुछ शब्द भी। अब उन शब्दों का उचित स्थान पर प्रयोग करते हुए अनुच्छेद पूरा करने को कहिए। बच्चे जब ऐसा करने में सक्षम हो जाएंगे तो उन्हें अपने द्वारा लिखी कहानी का एहसास कराएं। इससे उनमें आत्मविश्वास की भावना का विकास होगा। एक उदाहरण देखा जा सकता है–

(लू, प्यास, दिन, भींग, काले, पसीने, घिरने, राहत, शीतल)

गर्मी का .....था। दोपहर के समय.....चल रही थी। पक्षी भी.....से व्याकुल हो रहे थे।.....से तन के कपड़े.....गए थे। इतने में आसमान में.....बादल..... लगे। हवा भी कुछ.....हो गई। इससे जीव–जन्तु सभी को गर्मी से कुछ.....मिली।

गतिविधिः–02 छोटी कक्षा के बच्चों से उनके दैनिक जीवन से सम्बन्धित वार्तालाप करते हुए कुछ विषय देकर उस पर अपनी बात या विचार लिखने को कहिये, जैसे–

(1) आज तुम्हें देर क्यों हुई? **(2)** अपने दैनिक जीवन के क्रियाकलापों को क्रम से लिखिए।

(3) घर से विद्यालय आते समय के अपने अनुभव को लिखिए।

गतिविधिः–03

प्रशिक्षु बच्चों को मेज, कुर्सी, माँ, बगीचा, घड़ी, सायकिल, चश्मा, हमारा विद्यालय जैसे कुछ अलग–अलग शब्द देकर उन पर कुछ लिखने को कह सकते हैं। बच्चों से यह काम कराते समय बीच–बीच में सहयोग भी करते रहें। विषय को स्पष्ट करने के लिए प्रशिक्षु के लिए शब्द से सम्बन्धित कुछ प्रश्न बनाकर विस्तार एवं क्रमबद्ध ढंग से लिखना सिखाना अपेक्षित हैः जैसे–किसी बच्चे को 'हमारा विद्यालय' पर लिखना है और उसे कुछ समझ नहीं आ रहा है तो उससे निम्नलिखित प्रश्नों पर लिखने को प्रेरित करें–

- तुम किस विद्यालय में पढ़ते हो?
- उस विद्यालय के प्रधानाचार्य का क्या नाम है?
- तुम्हारे विद्यालय में कितने अध्यापक हैं?
- तुम किस कक्षा में पढ़ते हो?
- तुम कौन–कौन से विषय पढ़ते हो? तुम्हें किस विषय को पढ़ना अच्छा लगता है और क्यों?
- तुम्हारे विद्यालय में कुल कितने बच्चे हैं?
- तुम्हें विद्यालय आना अच्छा क्यों लगता है?

इस प्रकार के प्रश्नोत्तर द्वारा वह 'हमारा विद्यालय' पर अपने विचार को मौलिक ढंग से अभिव्यक्त करने में समर्थ होगा।

गतिविधिः–04

प्रशिक्षु बच्चों से किसी वस्तु, किसी सहपाठी या किसी रिश्तेदार का बिना नाम लिए वर्णन करने को कहें। इसके लिए बच्चों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करना जरूरी है। जैसे–इस धरती पर जन्म लेने के साथ मेरी आँखों ने सबसे पहले उसे ही पहचाना। उसने मुझे अथाह प्यार और दुलार दिया। बिना कहे हमेशा मेरी भावनाओं को समझा। बिना माँगे मेरी जरूरतों को पूरा किया। मेरी छोटी सी चोट, दुःख या पीड़ा उसे बड़ा लगता और बड़ी से बड़ी गलती और भूल छोटी लगती। मेरे लिए तो इस धरती का भगवान है वह।

गतिविधिः–05

किसी विषय से सम्बन्धित चित्र को बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करके प्रशिक्षु उसकी बारीकियों की या प्रमुख बातों की तरफ ध्यान आकर्षित करते हुए उस पर लिखने को प्रोत्साहित करें। चित्रांकित विषय पर स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर बढ़ते हुए लेखन का विकास भी सहज एवं प्रभावशाली ढंग से होता जाता है। एक उदाहरण–

मान लीजिए 'प्रातः कालीन दृश्यों के साथ नदी किनारे स्थित वृक्ष' का चित्र बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। ऐसे में आप बच्चों का ध्यान निम्नलिखित बातों की ओर खींच सकते हैं–

- चित्र किस समय का है।
- इसमें क्या दिखाई दे रहा है?
- किस वृक्ष का चित्र है।
- वृक्ष पर कौन बैठा है?

- पानी में किसकी परछाई पड़ रही है?
- वृक्षों की जड़ों के पास क्या है?
- इस चित्र में क्या अच्छा लग रहा है?
- प्रातःकाल में सूर्य किस रंग का होता है?
- यह समय कैसा लगता है?
- उस समय तुम क्या करते हो?

गतिविधिः–06

यह कैसे बनाया?

बच्चों को कागज से, पुरानी किसी वस्तु से, कपड़ों की सहायता आदि से कुछ नया बनाने को कहिये फिर उनसे उस चीज/वस्तु का (जिसे वह बनाना चाहता या जिसे उन्होंने बनाया है) वर्णन करने को कहें, जैसे–

1. यह कैसे बनाया? **2**. इसमें किन–किन चीजों की सहायता ली गई? **3**. शुरू कैसे किया आदि।

इसके अतिरिक्त कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार देखी जा सकती हैं–

– किसी परिवेशीय विषय पर दो–चार पंक्तियाँ लिखकर अधूरा छोड़ दें और आगे की पंक्तियाँ पूरी करने को कहें।

– विद्यालय में होने वाले छोटे–छोटे कार्यक्रमों, खेलों, बालसभा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, घर या विद्यालय के आसपास छोटी–छोटी घटनाओं आदि की रिपोर्टिंग लिखने को प्रेरित करें। इसमें प्रशिक्षु का सहयोग अपेक्षित है।

ये गतिविधियाँ उदाहरण रूप में हैं। इसके अतिरिक्त अनेकों अवसर दिये जा सकते हैं। रेडियो/दूरदर्शन पर सुने या देखे गये कार्यक्रम की समीक्षा, सारांश, मुख्य काव्य लिखवाना जैसे काम भी हो सकते हैं।

मूल्यांकन (प्रशिक्षुओं के लिए)–

- अपने–अपने गाँव/शहर में हुए विकास कार्यों के बारे में बताइये।
- बिगड़ी हुई यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए आप क्या करेंगे?
- बच्चों में जीवन मूल्यों का विकास हो, इसके लिए आपका क्या प्रयास होगा?
- भाषा शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए अपना विचार व्यक्त करें।

बच्चों के लिए–

- फूलों की विशेषता बताओ।
- गाँधी जी के बारे में चार वाक्य लिखो।
- सवारी के काम आने वाले दो पशुओं के नाम बताओ।
- रिक्त स्थान की पूर्ति करो–

(अ) हमें असत्य.....। **(ब)** सदा बड़ों का.....।

–0